



श्रीमान् शा मोतीचन्दजी निहालचन्दजी भटेवड़
की ओर से स्व. दानवीर धर्म-प्रेमी श्री निहाल-
चन्दजी के स्मरणार्थ ५०० प्रतिया ।

किंचित्-वक्तव्य

यह अंकित करते हुए हृदय मानस में अतीव
हर्षोत्पन्न हो रहा है कि जब से श्रीमज्जैनाचार्य,
जगत् बंध, परम पूज्य श्री श्री १००८ श्री धर्मदास
जी महाराज के सम्प्रदायस्थ दक्षिण भारतोद्धारक
प्र० मुनि श्री ताराचन्द्रजी म० सा०, शास्त्रज्ञ, व्या०
दा० पं० मुनि श्री कृष्णलालजी म० सा० जैन जगत्
के सुप्रसिद्ध वक्ता व्या० वां० पं० मुनि श्री सौभाग्य
मुनिजी म० सा०, सरल स्वभावी, आत्मारथी मुनि
श्री वच्छराजजी म० सा० प्रभृति ठाणे १४ का
चातुर्मास सम्बत् १९६५ का बैंगलोर शहर में
हुआ था। तब ही से वहां के स्थानापन्न लोगों की

यह उल्टा समझाया भी कि पूज्य मुनिराजों के चातुर्मास के उपलक्ष में कोई भी ऐसी आदर्श-पुस्तक प्रकाशित की जाय जिससे कि यह चातुर्मास बिरकाब पर्यंत बिहमरखीय बना रहे और इसी इच्छित एवं अभिलषित उद्देश्य को सम्मुख रखकर कठिण धारक-बुद्ध ने मुनिकरों के निकट उपस्थित हो एतद् सम्बन्धी इच्छापूर्ति हेतु साम्राज्य सम्पन्न (प्रार्थना) की ।

फल स्वरूप काव्य कला-कोविद कविरत्नपं० मुनि श्री सूर्यमुनिजी म० सा० के सुप्रिय व्याख्यात्री श्री माधव मुनिजी म० सा० ने संग्रह करके जन-समुदाय के आचार्य मिथ्याभेद समरस्य नामक पुस्तक प्रकाश की थी । इसकी प्रतियाँ हाथों हाथ समाप्त हो जाने से पुनः तथैव प्रकाशने का काम तथा पुस्तकें प्रदर्शन में न रखने के कारण

द्वितीय संस्करण के लिये फिर से उक्त मुनिश्रीजी को प्रार्थना पूर्वक कहा गया। महाराज श्री के पास “नित्यनन्द स्मरण” का मेटर विद्यमान था। उसी मेटर को हमने महाराज श्री से प्राप्त कर लोगों की अत्यावश्यकता की पूर्ति करने के लिये उसे पुस्तक रूप में प्रकाशित किया है।

महाराज श्री एवं द्रव्य-दाता महाशय तमी अपने भरसक प्रयत्न को सार्थक समझेंगे जब कि लोग इस पुस्तक का मनन, चिंतन तथा स्वाध्याय कर लाभानुभव प्राप्त करेंगे।

इस पुस्तक के अन्तर्हित (अन्दर) अनेक स्तोत्र, ईश स्तुति एवं उपदेशी भजनों का समावेश किया गया है। यह मुमुक्षु जनों को अपवर्ग सौख्य प्राप्त करवाने में भक्ति-रूप रामबाण औषधि (चिकित्सा) की सफलता प्राप्त करावेगी। यह

अपने ढंग की एक अनुपम ही पुस्तक है। आशा एवं मझा है कि जन-समाज में यही पुस्तक मक्ति मार्ग की प्रेरिका तथा सद्बाल प्रदान में अपूर्व सहायिका बनेगी। प्रेसावि के कारण पुस्तक में किसी प्रकार की अधुमि रह गई हो तो पाठक गद्य उसे सुख कर पश्चात् पठन करने का उचित कष्ट उठावें।

विनयावगत धिमीत—

मन्त्री-श्री धर्मदास जैन मिश्र मझल,
रतनाम



श्रीमद्धर्मदास जित्सूरिश्वरेभ्यो नमः

(जता २०)

नित्य नन्द स्मरण
श्री परमेशि महामन्त्र

१ एमो अरिहंताणं ।

२ एमो सिद्धाणं ।

३ एमो आयरियाणं ।

४ एमो उवज्झायाणं ।

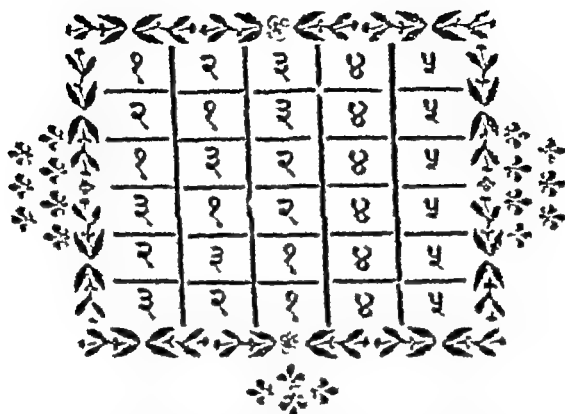
५ एमो लोए सव्व साहूणं ।

थानुपूर्वी का फल

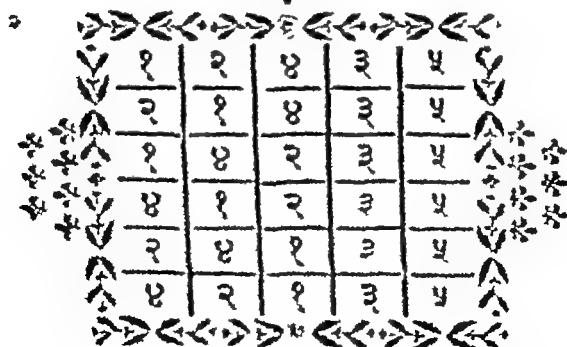
थानुपूर्वी गणजो जोय,
 छह मासी तपनो फल होय ।
 सन्देह नहीं मन करो छिगार,
 निर्मल मन जपिये नवकार ॥
 शुद्ध बल घर ध्यान विवेक,
 दिन दिन प्रत्ये गणिये एक ।
 शुद्ध मन घरके भविजन गण्ये,
 पाँच से सागर को पाप हने ॥

• दोहा •

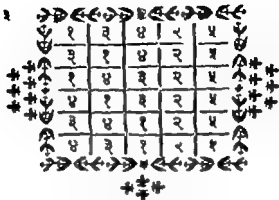
अशुभ कर्म के हरन को,
 मग्न बड़ो नवकार ।
 बाणी ब्राह्मण श्रम में,
 देख लियो तत्त्वसार ॥ १ ॥



१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५



१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५



५

१	२	३	४	५
२	१	५	४	५
१	५	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

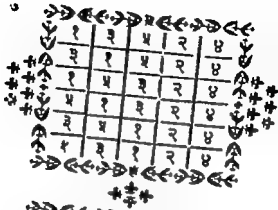


५

१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५


(१)

७



१	२	५	२	४
३	१	५	२	४
१	५	३	२	४
५	१	३	२	४
३	५	१	२	४

८



२	१	५	१	४
३	२	५	१	४
२		३	१	५
५	१	३	१	४
३	५	२	१	४

1

१	२	४	५	३
२	१	४	५	३
१	४	२	५	३
४	१	२	५	३
२	४	१	५	३
४	२	१	५	३



१०

१	२	५	४	३
२	१	५	४	३
१	५	२	४	३
५	१	२	४	३
२	५	१	४	३
५	२	१	४	३

११

१	४	५	२	३
४	१	३	२	३
१	५	४	२	३
५	१	४	२	३
४	५	१	२	३
५	४	१	२	३

१२

२	४	१	१	३
४	१	५	१	३
१	५	४	१	३
५	१	४	१	३
४	५	१	१	३
५	४	२	१	३

୧୩

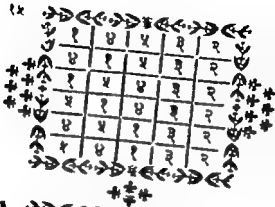
୧	୩	୪	୫	୨
୩	୧	୪	୫	୨
୧	୪	୩	୫	୨
୪	୧	୩	୫	୨
୩	୪	୧	୫	୨
୪	୩	୧	୫	୨

୧୩

୧୪

୧	୩	୫	୪	୨
୩	୧	୫	୪	୨
୧	୫	୩	୪	୨
୫	୧	୩	୪	୨
୩	୫	୧	୪	୨
୫	୩	୧	୪	୨

୧୪



୧୬

୧	୨	୩	୪	୫	୬	୭	୮	୯	୧୦	୧୧	୧୨	୧୩	୧୪	୧୫	୧୬	୧୭	୧୮	୧୯	୨୦	୨୧	୨୨	୨୩	୨୪	୨୫	୨୬	୨୭	୨୮	୨୯	୩୦	୩୧	୩୨	୩୩	୩୪	୩୫	୩୬	୩୭	୩୮	୩୯	୪୦	୪୧	୪୨	୪୩	୪୪	୪୫	୪୬	୪୭	୪୮	୪୯	୫୦	୫୧	୫୨	୫୩	୫୪	୫୫	୫୬	୫୭	୫୮	୫୯	୬୦	୬୧	୬୨	୬୩	୬୪	୬୫	୬୬	୬୭	୬୮	୬୯	୭୦	୭୧	୭୨	୭୩	୭୪	୭୫	୭୬	୭୭	୭୮	୭୯	୮୦	୮୧	୮୨	୮୩	୮୪	୮୫	୮୬	୮୭	୮୮	୮୯	୯୦	୯୧	୯୨	୯୩	୯୪	୯୫	୯୬	୯୭	୯୮	୯୯	୧୦୦
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----



୧୧

୧	୨	୩	୪	୫	୬	୭	୮	୯	୧୦	୧୧	୧୨	୧୩	୧୪	୧୫	୧୬	୧୭	୧୮	୧୯	୨୦	୨୧	୨୨	୨୩	୨୪	୨୫	୨୬	୨୭	୨୮	୨୯	୩୦	୩୧	୩୨	୩୩	୩୪	୩୫	୩୬	୩୭	୩୮	୩୯	୪୦	୪୧	୪୨	୪୩	୪୪	୪୫	୪୬	୪୭	୪୮	୪୯	୫୦	୫୧	୫୨	୫୩	୫୪	୫୫	୫୬	୫୭	୫୮	୫୯	୬୦	୬୧	୬୨	୬୩	୬୪	୬୫	୬୬	୬୭	୬୮	୬୯	୭୦	୭୧	୭୨	୭୩	୭୪	୭୫	୭୬	୭୭	୭୮	୭୯	୮୦	୮୧	୮୨	୮୩	୮୪	୮୫	୮୬	୮୭	୮୮	୮୯	୯୦	୯୧	୯୨	୯୩	୯୪	୯୫	୯୬	୯୭	୯୮	୯୯	୧୦୦
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----



चौबीस तीर्थंकरों के नाम.

१ श्री ऋषभदेव स्वामी, २ श्री अजितनाथ स्वामी, ३ श्री संभवनाथ स्वामी, ४ श्री अभिनंदन स्वामी, ५ श्री सुमतिनाथ स्वामी, ६ श्री पद्मप्रभु स्वामी, ७ श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी, ८ श्री चन्दा प्रभु स्वामी, ९ श्री सुविधिनाथ स्वामी, १० श्री शीतलनाथ स्वामी, ११ श्री श्रेयांसनाथ स्वामी, १२ श्री वासुपूज्य स्वामी, १३ श्री विमलनाथ स्वामी, १४ श्री अनंतनाथ स्वामी, १५ श्री धर्मनाथ स्वामी, १६ श्री शांतिनाथ स्वामी, १७ श्री कुन्थुनाथ स्वामी, १८ श्री अरहनाथ स्वामी, १९ श्री मल्लिनाथ स्वामी, २० श्री मुनिसुव्रत स्वामी, २१ श्री नमिनाथ स्वामी, २२ श्री नेमनाथ स्वामी, २३ श्री पार्श्वनाथ स्वामी, २४ श्री महावीर स्वामी.

ग्यारह गणधरों के नाम.

१ इन्द्रभूतिजी ३ वायुभूतिजी ५ सुधर्मा स्वामी
२ अग्निभूतिजी ४ व्यक्तजी ६ मंडिपुत्रजी

७ मीरपुत्रजी १ अचलजी ११ प्रभासजी
 ८ अक्षयितजी १० मैतार्यजी

बीस विहरमानों के नाम

१ श्री सीमन्धर स्वामी १ श्री युगमन्धर स्वामी, १ श्री वाहु स्वामी, ४ श्री-सुबाहु स्वामी, ५ श्री सुजात स्वामी १ श्री न्ययप्रभु स्वामी, ७ ज्ञानमानस स्वामी ८ श्री अमलवीर्य स्वामी, ११ श्री सुरप्रभु स्वामी, १० श्री विद्यालय स्वामी १२ श्री वसन्धर स्वामी १२ श्री चन्द्रानन्द स्वामी १३ श्री चन्द्रबाहु स्वामी १४ श्री मुर्जग स्वामी १५ श्री ईश्वर स्वामी १६ श्री नेमप्रभ स्वामी १७ श्री बीरसेन स्वामी १८ श्री महामन्न स्वामी १९ श्री देवदत्त स्वामी २० श्री अक्षितवीर्य स्वामी ।

सोळा सतियों के नाम

१ ब्राह्मी	४ सीता	७ प्रीयदी
२ सुन्दरी	५ राजमती	८ चन्द्रमाला
३ कौसल्या	६ कुन्ता	९ मृगावती

१० चेलणा	१२ सुभद्रा	१४ सुलसा
११ प्रभावती	१३ दमयंती	१५ शिवा
		१६ पद्मावती

चतुर्विंश तीर्थकर के नाम.

॥ हरिगीतिका ॥

श्री आदिनाथ अजीत संभवनाथ अभिनन्दन
 गुणी । श्री सुमति पद्म सुपार्श्व जिन शशिसुविधि
 शीतल दिनमणी ॥ श्रेयांस घासुपूज्य निर्मल विमल
 जिनवर जगपती । स्वामी अनंत सु धर्म शांती
 सौख्य सबको दे अती ॥ १ ॥ तिहुं लोक पूजित
 कुंथु जिन राजे अर जग में प्रभो । श्री मल्लिजिन
 यश ख्याति जग भगवान मुनि सुव्रत विभो ॥
 नमि नेमि पारस वीर यों चौबीस जिन कीरति
 भणी । 'मुनि सूर्य' कहैं तिहुं काल भज सब भावना
 हो मन तणी ॥ २ ॥

बीस विहरमान के नाम

॥ वीर धन्द ॥

श्री सीमधर युग बाहु सुबाहु सुबाठ लयप्रभु
 प्रपमामन । अर्नठ सुरप्रभु विशाल बखवर शिव
 मुक्त कारन सम्प्रानन ॥ बम्भबाहु मुजग ईश्वर
 भूमि वीरसेन महामद्र त्रिमन्द । वैद्यकस और
 अजितवीर्य यह बीस त्रिमेश मजो सुककन्द ॥ १॥

ग्यारह षष्ठधर के नाम

॥ हरिगीतिका ॥

श्री इन्द्र अगमी वायुमूर्ति प्यरु नायक मुख-
 पती । स्वामी सुधर्मो मतिह मीर्यज पुनि अकंपित
 गणपती ॥ आता अथक मितार्थ मुनि राजे सदा
 मुख भारती । परमास पकादशमयी मुक्त हीनिये
 मित सम्मति ॥ ४ ॥

सोलह सतियों के नाम.

॥ हरिगीतिका ॥

ब्राह्मी सु चन्दनवालिका राजीमती पुनि द्रौ-
पदी । चूड़ा सुभद्रा सुदरी सुलसा शिवा सीता
सती ॥ दमयंति कौशल्या मृगा पद्मावती परमा-
वती । कुन्तादि षोडश भगवती ध्याश्रो सदा
चढ़ती रती ॥ ५ ॥



१. श्री जिननामगर्भिततीर्थकरस्तोत्रं

१ । २४

श्रीनाभिसूक्तो जिन सार्वभौम
वृषभध्वज त्वन्नतये ममेहा
षट्जीवरक्षा पर देहि देवी-
भर्त्रर्चितं स्वं पदमाशु वीर

२।२३

धीमवमाद्या व्यथयन्ति पापा
 व्यवाप्त वेद्याजित मां सुपार्ष्व
 जिनामिनां रोगवतिरिङ्गीना
 तपामिधानावपि पार्ष्वमाय

३।२२

ससारपारोऽहमि मेऽद्य ज्ञाने
 भवत्यदौ संभव पद्यजामि
 वर्याः स्वयं ते मयमोहमाना
 व्यमगमगे सति मेमिमाय

४।२१

निदोषि मेमा व्यमिमन्वैन
 नैवत्यमयी तव पूजयामि
 वया वरिमेऽपि मृपे समाना
 न मे कथं ते मयि सा नमाय

(१६)

५।२०

श्रीखंडवत्तापहरा शिवश्री
सुखाय गीस्ते सुमते प्रजासु
महस्तुते सुव्रत देव तीव्र-
तिरस्क्रियाकृतमसोऽपि तात

६।१६

पद्मप्रभाक्षिद्वयमंहसाम—

झर मुदेते स्थिरपद्मवल्लि
प्रभो प्रभाते भुवि दिप्य माना
भजद्यमीत्वं जिन मल्लिनाथ

७।१८

श्रीमान् सुपाश्वोऽपि हि नेस्त मां श्र-
सुमत्सुखं देश न याचकार
पारंगता पातक वल्लरीप
श्वर्ग्रंजनं चार पति पुनाति

८।१७

अथ प्रमाथोर्ध्व मेघ रंफु
 द्रष्टास्मि दृष्टे सम कुमि इंधु
 प्रयासतां मुञ्चति नाप्ययंता
 मल्ल सुषणं त्वयि कुयुनाथ

९।१६

अरीरगजाते सुविधे सदाशां
 सुधांयगीते विगृहीकरोति
 विरवैकबंधोति मृगांकमाना
 चिनोपि कोकानपि शातिनाथ

१०।१५

अरीशीतल त्वां वितमोदपोष
 शीलाक्य पात्रे जिमराज शर्म
 तव स्वरूप इदि संवधाना
 लयं समंते त्वयि धर्मनाथ

(२१)

११।१४

श्रीवत्सनि श्रीहृदि तावके श्री
श्रेयांस सक्ता नितरामहोश्च
यां मे निजां देहि वदान्य दीनं
समीक्ष्य वीराग्रिम मामनंत

१२।१३

वाग् वासुपूज्या गमिकीं श्रुतिश्री
सुखं कषंति भवताभ्य सावि
पूर्णा ममाशा विमलाद्य नाम
ज्ययासमं लीनशिरो न तोऽल



२ अथ श्री पैसठ पन्ध्र उद्धारमय श्री चौथीस जिन स्तोत्र

१	१८	२१	२	२३
२२	१६	६	१४	४
२०	११	१३	१५	५
१६	१२	१०	१०	७
३	८	५	२४	२५

आदिनाथ जगन्नाथ, आ-
मायं तथा ममि । अजितं
जितमोक्षार्तिं पार्श्वं बंदे गुहा-
गर्त ॥१॥ नैमिषायं जितलोकी
शे, शक्तिं च सुविधिं तथा ।

अमलं मतदेवैर्दृष्टुं ब्रह्ममिगन्धमम् ॥ २ ॥ सुमतं
सुमतं नीमि जेषांस्तं सुखदायकं । विमलं विमल-
चारं, धर्मं पद्मप्रमं जिनम् ॥३॥ महिषनाथं जिनैयं
च बाहुपुम्भं जगद्गुरुं । कुपुं च शीतलं वन्दे
सुपाश्वं परमेस्वरं ॥४॥ सज्जनं जगद्गन्धं चम्पू
प्रमं ममाग्न्यहं । सुमतिं वीरमाहूर्यं सर्वे आपि
चतुर्विधिं ॥५॥ वन्द्योयं जिनस्तं बतमि पंच पदपद्म
निर्मितः । पूज्यते वन्द्यं पुण्यं च मंदिरे सततं त्वत्तु
॥६॥ तद्वपुहे कोटि कल्याणं श्रीविजयसति तीक्ष्णमा ।
बुधोपप्रपरोगादि नश्यन्ते व्याधिबेदनाः ॥ ७ ॥

॥ मालिनी-ध्वन्द ॥

भवति सुखमनेकं तस्य यो मानवस्य,
विमलमतिरनिद्यं स्तोत्रमेतद्धितन्द्रः ।
पठति परमभक्त्या प्रातरुत्थाय शश्वत्,
मुनिरभिरुतभक्तिः मेघराजो वभाण ॥८॥



३. पैसठ यंत्र चौवीस जिन ।

१८	३	६	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१६	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	१५	१७	२३	४

आदौ नेमिजिनं नौमि संभवं
सुविधिं तथा । धर्मनाथं महा-
देव शांति शांतिकरं सदा ॥
१ ॥ अनंतं सुव्रतं भक्त्या
नेमिनाथं जिनोत्तमं । अजितं

जितकंदर्पं चन्द्रं चन्द्रं समप्रभं ॥ २ ॥ आदिनाथं तथा
देवं सुपार्श्वं विमलं जिनं । मल्लिनाथं गुणोपेतं
धनुषां पञ्चविंशतिम् ॥ ३ ॥ अरनाथं महावीरं सुमतिं
च जगद्गुरुम् । श्री पद्मप्रभनामानं वासुपूज्यं
सुरैर्नतं ॥ ४ ॥ शीतलं शीतलं लोके श्रेयांसं श्रेयसे

सदा । कुङ्कुमायं च धामेयं विश्वामित्रम्भन विभुम्
 ॥ ५ ॥ त्रिमामां नाममिदं च पंचपष्ठिसमुद्भवा ।
 रंजोयं राजते यत्र तत्र सौख्यं निरंतरं ॥६॥ यस्मिन्
 एते महामक्त्वा पंचोऽयं पूज्यते बुधैः । मूढमेव
 पिशाचादेः मय तत्र न विद्यते ॥७॥

॥ मन्त्रिणी कण्ड ॥

सकलगुणविधानं पञ्चमेन विद्युत,
 हृदयकमल कोशे धीमतां प्रेयस्वर्यं ।
 जपतिलकगुरोः श्री सुरिराजस्य शिष्यो
 पदति सुखविधानं मोक्षं लक्ष्मीनिवासं ॥८॥

४ जिन पञ्चकम्
 शिखरिणी ।

समो अर्चितातां करमरिपुञ्जता अगतमैः ।
 समो सिद्धतां ते श्रुति सिद्धि विधानं सुखहरम् ॥
 समो ध्याचार्याणां सकल सुखार्थं मुक्ति सुखम् ।
 कवीसो है अमी शुभगुण सदाचार पुतमो ॥९॥

उवजभायाणं च प्रकृति ज पचीसो गुण निधं ।
 णमो लोए सव्वोज्वल चरण साहूणमनघम् ॥
 सहस्रद्वे कोटी जगतमधि साधू जगन है ।
 तथोत्कृष्टासाधू नव सहस्र कोडान प्रणमू ॥२॥
 नमः सम्यक् दृष्ट्यै विमलतर ज्ञानाय सततम् ।
 तपश्चारित्रद्वादशत्रिदशमेदैर्गुणि गरैः ॥
 युजे सिद्धवातोऽत्र च परमवेस्याच्छिवकरः ।
 स मे हार्दं दुःखं हरतु नितरां पूर्णकृपया ॥३॥
 नमो ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभ अजितं संभवजिनं ।
 अभिनन्द स्वामी प्रणव सुमतिं पद्म प्रभवै ॥
 सुपार्श्वं श्रीचन्द्रप्रभ, सुविधि वा शीतलप्रभुं ।
 श्रेयांसं वास्पूज्यं विमलमनतं धर्मप्रणमू ॥४॥
 नमः शान्ति कुंथुं अरमलि मुनीसुव्रत विभुं ।
 नमिं नेमिं पार्श्व चरण युगलं नौमि सततम् ॥
 महावीरं वंदे परम पद दानैक सुविधं ।
 जिनेन्द्राऽहो रात्रं ददतु कुशलं मे समयजा ॥५॥



५ अथम स्तोत्रम्

पैलोक्यलोककुलकक्षितकक्षमैक-

कक्षद्रुम कक्षमर्मभिदशाधिनाथम् ।

मकस्या मकष्यमरिईकुकुरकनार्य,

मो मो जना अथमनाथमनाथनाथम् ॥१॥

यश्चरिष्युषिर्द्युमधुमधाम-

द्यातधिर्य चितरये रज्जताधिनाथम् ।

भाराचयणमुठ धैर्बजिताधिनाथं

मो मो जना अथमनाथमनाथनाथम् ॥२॥

सौमाम्यमाग्यकमसाकमसाधमामा-

निद्राननाकृतिनिरस्तनिशाधिनाथम् ।

स्नाना स्मरण्यमधिमादतनामनाथं

मो मो जना अथमनाथमनाथनाथम् ॥३॥

विद्युत्प्रचयवडुचिदपडुवत्प्रिपितड-

ईधप्रतापमरमप्रदिशाधिनाथम् ।

मित्य नमण्यमुदयान्निजनाधिनाथं

मो मो जना अथमनाथमनाथनाथम् ॥४॥



६ श्रीपार्श्वजिनस्तोत्रम्.

नमद्देवनागेन्द्रमन्दारमाला-

मरन्दच्छटाधौतपादारविन्दम् ।

परानन्दसन्दर्भलक्ष्मीसनाथं,

स्तुवे देवचिन्तामणिं पार्श्वनाथम् ॥१॥

तमोराशिवित्रासने वासवेशं,

हतक्लेशलेशं श्रियां सन्निवेशम् ।

क्रमालीनपद्मावतीप्राणनाथं,

स्तुवे देवचिन्तामणिं पार्श्वनाथम् ॥२॥

नवश्रीनिवासं नवाम्भोजनीलं,

नतानां स्वश्रीदानदाने सलीलम् ।

त्रिलोकस्य पूज्यं त्रिलोकस्य नाथं,

स्तुवे देवचिन्तामणिं पार्श्वनाथम् ॥३॥

हतव्याधिवेतालमूतादिदोषं,

वृताशेषपुरयावलीपुरयपोषम् ।

मुखश्रीपराभूतदोषाधिनाथं,

स्तुवे देवचिन्तामणिं पार्श्वनाथम् ॥४॥

नृपस्याभ्यसेनस्य यशोऽवर्तसं,
 अवाधां ममोमलसे राजर्षिसम् ।
 प्रमाद्यप्रमादादिमीमिन्धुमाये
 स्तुते देवचिन्तामणिं पार्वनाथम् ॥१॥
 कलौ भाविनी कल्पवृक्षोपमार्गं,
 अगम्यात्मने समर्तं सावधानम् ।
 धिरं मेदपादस्थितं बिम्बनाथ
 स्तुते देवचिन्तामणिं पार्वनाथम् ॥२॥



७ यमक बन्ध-भी पार्वनाथ स्तोत्रम् ।
 ॥ १५५ ॥

बरसवरसंवरसवरसं मयममवरमवरमवरं ।
 सममासममासममासममा नममनममनमममम
 ॥ १ ॥ दरमवरमदरमदरम गतरंगतरंगतरंगतरं ।
 गरसगरसंगरसगरसं नवरनवरनवरनवरं ॥ २ ॥
 रमुदारमुदारमुदारमुदा समिभंसमिभंसमिभं-
 समिभं । विदितंविदितंविदितंविदितं समतेनमते-

स्वरस्य करणेन्दुकलातमसं सकलं ॥ २ ॥ कल
 कांयनदेवकवि कविरं धिरसन्धितपापविनाम
 कर । करपादविनिर्मितकोकनर्भ नवतुल्यगुहो
 दकपूर्वमल ॥ ३ ॥ मल्लयामिलशीतलशीतरसं
 रसमागुसरसितसर्वजम । जनमीजनकोपमितं
 जगतो जगतो धिक माधिकमे सतत ॥ ४ ॥ सत-
 तादिबहुर्दिव्यतुल्यं लयसप्तम देवमवो
 नमन । नमनोत्तरपूजकनविदिनफल लयसंयम
 लीनमनापयन ॥ ५ ॥ पद्मनाभुशिखिषितिचारि-
 द्यो दयमाजनमेजम तारदितं । दितहेतुसु-
 दयितमावयतं यत पद्मपुस्तकमानधर ॥ ६ ॥
 परपीसमसर्पसहस्रगुहं शुभमूमिकला—
 यमिर्न यमिर्न । यमिगदिकरं नरमाय सुग-सुर-
 पन्थमह तु मलामि जिग ॥ ७ ॥



६. श्रीपार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

॥ तोटक वृत्त ॥

रणनिर्जितमारवलं सवलं, बलवत्समान-
 शरीर विभं । विभवं भगवंतमिभेन्द्रगतं, गतदुर्मति
 दुर्गति दूरतर ॥ १ ॥ तरणाय भवांबुनिधौ तरणि,
 तरणींदुसमद्युतिसौम्यकलं । कलकल्पित
 कल्पतरुं गुणिनं, गुणिनंदिकर करणैरजितं ॥ २ ॥
 जितपञ्चमकालविलासफलं, फलवत्तरपादपयोज-
 नुति । नुतिसंस्तुतितत्परनाकपतिं, पतिताखिल-
 भव्यसमुन्नतिदं ॥ ३ ॥ नतिदं कमठस्य शठस्य फलं,
 कलभावमुपेयुष ईतिहर । हरधातृहरिभ्रमभेद-
 बुधं, बुधलक्षितलक्षणलक्षपर ॥ ४ ॥ परमात्मजल-
 प्रतिविंबतुला, तुलितं यतियोगिगणैरमलं । मल-
 शालिनि भालनतो विमुखं मुखदीप्तिरिरस्कृत
 पूर्णविधुं ॥ ५ ॥ विधुरेपि जनस्मृतिसौख्यकर,
 करणत्रयशुद्धिविशुद्धहृदं । हृदयंगमसंगमरग-
 धर, धरणेन्द्रसदाश्रितलोकभर ॥ ६ ॥ भरतांतर-

वसिष्ठि काशियपुरे पुरतः कृतकृत्यजनेषु वर ।
 अग्नौधमिर्नवमिर्माप्रथर, परिषद्धारिकर्मि शिनाधि-
 पति ॥ ७ ॥



१० श्रीवीरजिनस्तोत्रम् ।

महानन्दशुभाभितं देवदेवं महीनाथसिंहा-
 पुत्रं पवित्रम् । यथाकामितं वृत्तवर्षिभ्यश्च
 त्रिकालं स्तुते श्रीजिनं वर्धमानम् ॥ १ ॥ बहुप्यष्टि-
 देवेन्द्रयोगीन्द्रचन्द्रं सुधाशालिं संशुद्धाकर्षं वरे
 एवम् । इयासागरं शुद्धसन्मार्गधामं त्रिकालं स्तुते
 श्रीजिनं वर्धमानम् ॥ २ ॥ अमन्तोत्तरासचारित्र-
 कीर्तं अरागोगममोहमन्तापहीनम् । उवाचमून-
 निर्मूलमायावित्तार्तं त्रिकालं स्तुते श्रीजिनं वर्ध-
 मानम् ॥ ३ ॥ रामस्वादपायोपि सैषर्गलक्षितं सदा
 काममर्मेप्रपञ्चमुल्लभम् । प्रणतहृदयायेन मास्वत्स-
 मानं त्रिकालं स्तुते श्रीजिनं वर्धमानम् ॥ ४ ॥ मनो
 हारिकस्याशुचरुं विशालं विदीर्घांतरारिप्रणालिं

कृपालुम् । गभीरं विशालैर्गुणैर्वर्धमानं त्रिकालं स्तुवे
 श्रीजिनं वर्धमानम् ॥५॥ जगज्जीवसन्दोहजीवादि-
 भूतं, भवभ्रान्तिरिक्तं नमन्नाकिभूतम् । लसत्स्वर्गि-
 निर्वाणलक्ष्मीनिदानं, त्रिकालं स्तुवे श्रीजिनं वर्ध-
 मानम् ॥६॥ इत्थं भक्तिवशेन मुग्धमतिना श्रीवर्ध-
 मानः स्तुतः, प्रोद्यद्देहपवित्रकांतिकलितः सश्री-
 कशोभायुतः । याचे नैव कलत्रपुत्रविभवं नो काम-
 भोगश्रियं किन्त्वेकं परमोत्तमं शिवपदं श्रीबाल-
 चन्द्रार्चितम् ॥७॥



११. प्रथमस्वरमयं प्रथमजिनस्तोत्रम् ।

सकलकमलदलकरपदनयन ! प्रहृतमदनमद !
 भवभयहरण ! सततममरनरनतपदकमल ! जय
 जय गतमद ! मदकलगमन ! ॥१॥ अमलकनक-
 नगवर ! गतरमण ! क्षतजननमरण ! शमरस-
 सदन ! श्रमणकमलवनतपन ! गतभव ! भवभयम-
 पहर मम जनमहन ! ॥२॥ अभयद ! भवदरजल-

धरपथन । सखलमधुमधनदहनजलधर । व्यपपठ
 मय । शृणुधरधरधन । जगद्धधर । जय ततमय
 समय । ॥ ३ ॥ तरलधरसुहृदधरधममकर । कल
 कलमयकलमन । तरयधः । प्रथय परमपद्मपद्म
 प्रथयधः । धनयधधरधः । जनशरधः ॥ ४ ॥ परम-
 पद्मरमय । कमलकलधः । शृणुधरधरधरमय-
 धवधः । परमतकरगज । सकलकलममः फल
 करलसदमरग । रथयशः ॥ ५ ॥ इत्येवं प्रथम-
 स्वरेण सकलामीश्वरैकहृदयमा । सङ्कल्प्या प्रथमो
 जिनः स्तुतिपथं नीतो युगादिप्रभुः शोभाम् । मेऽक-
 गच्छप्य विश्वजनतात्राणां सुखस्यानन्दं, तुमेष्टं प्रथमं
 भिनतु सपदि ययः प्रियं वच्छतात् ॥ ६ ॥



१२ अथ श्री नीतरागाष्टक ।

॥ तिथिरीची नृप ॥

विद्यालम्बं कर्म जिनपतिजिनेन्द्रं अपहर
 मया शुभं धामं विशदपरम्यान् सुखकरम् ।

शरण्यं कारुण्यं अचलशिव अक्षं मुनिवर,
 अनन्तं अव्याधं परमपदसाक्षं जिनवरं ॥१॥
 हितं सर्वं सत्त्व सुगुणगुणराजं जगपतिं,
 विधि ब्रह्मं रम्यं विदेत सव योगं मगपति ।
 अनेकं एकवा हरन सव रोगं प्रभु तुमे,
 सदा शक्ति व्यक्तित परम सुख रक्ति विभु तुमे ॥२॥
 जगत्त्वद्यं जेष्ट जयति जग श्रेष्ठ जुगगुरुं,
 महावीर वीरं सकल मति भासं भयहरं ।
 महा भाग्यं भोग्यं भगतजन पालं गत दर,
 महामोक्षं सोक्षं रहित रज पंकं जयकरं ॥३॥
 गुणधीप धीशं रटत सव नामं मुनिजनं,
 महामुक्तं गुप्तं कटत सव क्लेशं भ्रमचनं ।
 महाबुद्धं सिद्ध चढत सुख श्रेणि दम युत,
 महा कीर्ति स्फुर्ते घटत दुख श्रेणी समयुत ॥४॥



१३ श्रीपारम्य स्तोत्र ।

॥ मयाहीनः कम् ॥

परियददेवता श्रीपारम्यनायसेविता ।
 प्रमायमासिता गुणोद्भवायविता ॥ १ ॥ परियम
 गोपविर्दताएकमैविभुतिः विवेकबुद्धिवाक्पति
 गुणगुरुरय सद्यतिः ॥ २ ॥ पर्योमयसमएव
 गताम्यमार्गमयदली दिगंगनांगमूयिता मयद्गुणा
 विषयोपिता ॥ ३ ॥ त्वदीयधर्मदेशमा कृताएकम
 वेपका सररसुपावधीरिही सुतन्त्रतत्त्वमीरिही ॥ ४ ॥
 कुतर्कतर्कतकिता मयन्तमेत्य वृयिता परे प्रधीव
 पादकरा अपास्तमानमत्सराः ॥ ५ ॥ त्वदीयपादमस्त्रिता
 प्रचण्डपापपर्यकिन्तः जना मयन्ति गुरता सुमानि
 मयमाजतः ॥ ६ ॥ त्वदीयदामशीदता कृतार्थिसर्व
 देवता किमस्ति कामयेषु का यनेगुणस्यसेयकाः ॥
 ७ ॥ गुणा विलोक्य सर्वतः कलापनेयधर्मतः वसंत
 सम्पदिधमा मयद्वकरीरमयमाः ॥ ८ ॥ गुणाएकं
 सुखाकरं सतां मनसु सञ्चरं मकारि रत्नपीधरे
 गुणेषुमपिउविर्भरेः ॥ ९ ॥

॥ वसन्ततिलका ॥

इत्यष्टकं गुणवतो गुणमालिकाभि-

स्सस्यक् प्रयोगरुचिः रचितं चिरायः

श्रीमन्मुनेविमलशीलभृतो गुणोन्दो-

र्भव्याश्रितं भवतु भव्यतराय भूमौ ॥१०॥



१४. अथ श्रीनेमिजिनस्तोत्रम् ।

मानेनानूमानेननोन्नमुन्नमिमाननम् । नेमिना-
मानमममं मुनीनामिनमानुम ॥१॥ नानामानामनि-
स्त्राना ममानानामनामिनाम् । नामिनेनामिना मोमे
नेमिनाम्ने नमोनमः ॥ २ ॥ माननोन्नामिनं नाम
ननामिस्त ममानने । ननु नेमिमसी मेना मोमा-
नामनमस्त्रिनाः ॥ ३ ॥ मिन्नमन्मनमामानि मानिनी-
माननोन्मना । नानानामी मनन्नेमिं मतोमनिम-
मानिनाम् ॥ ४ ॥ मतो मुञ्चिस्त्रनं नूनमुन्नमन्माननो
ननम् । नुन्नमेतोमुनानेमिनाम्नानमामनु ॥५॥ नोन-
मुनमानमानेन मुनीनानेममाननम् । मीनानमिं नमम्ने

मिमनूनामामिमीममाम् ॥ ६ ॥ मुमीनमेनोमीनाम्
 मिमानं मेमिमामिनम् । मेमिमामानमावामा ममो
 माममभु नमः ॥७॥ मेमीममनर्ममिममनमनं मेमि
 मानमम । मेमिनाम्मो न माम्मा न मानानूकममी मम
 ॥ ८ ॥ इति स्तुतिं च पुरतः पठन्ति श्री मेमिनो
 व्यङ्गनसुग्मसिखाम् । श्री पर्यमानोदयशक्तिस्तं
 स्तु त्तिद्विषयाः परिमोगयोग्याः ॥९॥



१५ चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तोत्र ।

चन्द्रममस्य बिम्बपो यक्षो सुहृदि पक्षिणी ।
 सुविषेयजितो यक्षो यक्षिययस्ति सुतारका ॥ १ ॥
 पद्मममस्य कुसुमो यक्षः श्यामा च पक्षिणी ।
 कुमारो वासुपूज्यस्य यक्षभयङ्गास्ति पक्षिणी ॥ २ ॥
 गामुखो हृषीकेशस्यास्ति वरा नकेश्वरी सुरी । अग्नि
 तस्य महायक्षस्तथाजितवक्ता मता ॥ ३ ॥ त्रिमुख
 र्गमवस्थास्ति वुरितारिष्य पक्षिणी । पूज्यामिमम्दम
 क्यास्ति यक्ष मायक कालिके ॥ ४ ॥ सुमतेस्तुतु-

आस्ति महाकाल्यस्ति यक्षिणी ॥ श्री सुपाश्वे-
 स्य मातङ्गः शांताख्या यक्षिणी शुभा ॥५॥ परमुखो-
 विमलस्यास्ति विदिताख्यास्ति यक्षिणी। श्रीअनन्तस्य
 पातालश्चांकुशा यक्षिणीवरा ॥ ६ ॥ ब्रह्मा सुशीत-
 लस्यास्ति ह्यशोका यक्षिणी मता ॥ श्रेयांसस्य-
 प्रभोर्यक्षोद् मानवी यक्षिणी तथा ॥ ६ ॥ धर्मस्य
 किन्नरो यक्षः कंदर्पा यक्षिणी मता ॥ शान्तेर्गरुडो
 यक्षोस्ति निर्वाणी यक्षिणीवरा ॥ ८ ॥ कुंत्योर्गन्धर्व-
 यक्षोस्ति बलानामन्यस्ति यक्षिणी ॥ अरस्य यक्षो
 यक्षोद् च धारिणी यक्षिणी शुभा ॥ ९ ॥ नमेर्भृकुटि
 यक्षोस्ति गन्धारी यक्षिणीतथा । यक्षो वीरस्य
 मातङ्गः, सुरीसिद्धायिका मता ॥ १० ॥ मल्ले-
 कुबेरयक्षोस्ति यक्षिणीधरणप्रिया । पार्श्वः श्री
 पार्श्वनाथस्य सुरी पद्मावती तथा ॥ ११ ॥ नेमेर्गो-
 मेध यक्षोस्ति त्वं विकाशे त्रिकाशती । श्री वरुणो
 सुव्रतस्यापि नरदत्ताथ यक्षिणी ॥१२॥ माया बीज-
 स्थायिनां च परमेष्ठि स्वरूपिणां । अर्हतां तत्क्रमात्
 स्तोत्रं कृतं सागर साधुना ॥ १३ ॥ इति श्री
 चतुर्विंशति तीर्थकर स्तोत्रं समाप्तम् ॥

१४ श्रीपरमेष्ठिरक्षास्तोत्रम्

परमेष्ठिनमस्कारं सारं मयपद्मात्मकं, धाम
 ग्लाकं यज्ञ पञ्जरामं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो
 परिहृतासु शिरस्कं शिरसिस्थितं ॥ ॐ नमो
 सिद्धाय मुखं मुखपटम्बरं ॥ २ ॥ ॐ नमो भावते
 पापं अगारक्षालिग्राहिणीं ॥ ॐ नमो उद्यम्यपापै
 आयुध हस्तयोर्दंडं ॥ ३ ॥ ॐ नमो क्षोण्ड त्व
 तादृश मोक्षके पादयोः शुभे ॥ एतां पंच ममुखापे
 शिलायज्ञमयी नले ॥ ४ ॥ सम्प्रदायपद्मात्मके
 यमो यज्ञमयी बहिः ॥ मंगलायां च उन्मेषि कारि
 रांगारक्षालिकाः ॥ ५ ॥ स्वाहार्तं च पदं देयं पदमं
 हृदयं मंगलं ॥ यमोपरिचयमर्थं विधानं देहरक्षणे
 ॥ ६ ॥ महाममावा रक्षेयं शुभोपद्रवमाशिनी ॥
 परमेष्ठिपद्माज्ञा कथिताः पूज्यरिमिः ॥ ७ ॥
 यस्मै च कुर्वते एतां परमेष्ठिपदैः सदा ॥ तस्य
 नम्यान्नय स्याद्विग्राहिभ्यापि कदाचन ॥ ८ ॥

१७ चतुर्विंशति स्तोत्रम्

प्रथमं ऋषमं देवं, द्वितीयं चैवाजिताख्यक ।
 तृतीयं संभवं नत्वा तुर्यं चैवाभिनन्दनं ॥ १५ ॥ सुमति-
 पञ्चमचैव षष्ठं षड् प्रकीर्तितम् । सप्तमोस्तु सुपा-
 र्श्वः स्यादष्टमो मतः चन्द्रप्रभः ॥ २ ॥ नवमः पुष्प-
 दन्तश्च दशमश्शीतलस्तथा । श्रेयांश्चैकादशश्चैव
 वासुपूज्यस्तु द्वादशः ॥ ३ ॥ विमलो त्रिदशश्चैवा-
 नन्तश्च हि चतुर्दशः । धर्मपञ्चदशश्चैव शांतिनाथस्तु
 षोडशः ॥ ४ ॥ सप्तदशमः कुण्डुनाथः ह्यरोऽष्टादशम-
 स्तथा । मल्लिनाथश्चोनाविंशो, विंशमस्तु मुनिसुव्रतः
 ॥ ५ ॥ श्रीनमिश्चैकविंशश्च, द्वाविंशो नेमिनाथकः ।
 पार्श्वनाथश्च त्रयोविंशो, वर्द्धमानस्तुर्यविंशतिः ॥ ६ ॥
 ऋषभादिश्चतुर्विंश, तीर्थङ्करा उदाहृताः । स्मरणा-
 त्सर्वपापेभ्यो, मुच्यते नात्र संशयः ॥ ७ ॥ य इदं
 पठते नित्यं, त्रिकालश्च जिनोत्तमः । इहैव
 लभते सौख्यमन्ते निर्वाणमाप्नुयात् ॥ ८ ॥ इति
 श्रीरामचन्द्र विरचितायां ऋषभादिचतुर्विंशति-
 तीर्थराष्टकं सम्पूर्णम् ॥ मि० ज्ये० १३ सं० १६२६

१८ श्रीपार्वतिनाष्ठकम्

तीर्थ

सुरदानधाम्नामुनीन्द्रमत वतमप्यज्जनायति
 षोडशम् । हरमूधराहारिण्याप्रकरं करधेमसि
 पुवनमिदमिमम् ॥ १ ॥ निमणावर्पपितविमङ्गल
 गजसिंहवचनसमीतिहरम् ॥ इच्छावैपुण्यत
 कीर्तिकरं करुणोदधिमुत्तुरुपधम् ॥ २ ॥ परधे
 न्द्रमिषधितपात्रयुग युगधाद्युगं कमलाद्युगम् ।
 युगपज्जननीन्यपिधामपरं परमात्मपतिं जितकर्म
 रिपुम् ॥ ३ ॥ रिपुमित्रसमाश्रयमर्हत्तमं तमउत्कर
 वागकथामगिरम् । गिरिराजमहीपरपीरगुहं गुह्यं
 गशिपिमुखितमङ्गुवनम् ॥ ४ ॥ वनयन्मनकुम्भ
 मुखकमलं मतिर्कीर्तिकमण्डकमरुद्युमणिः । मणि-
 काश्चनमप्यहमङ्गुली रत्नसञ्जयर्षं गतजन्मदरम्
 ॥ ५ ॥ वग्भाक्तियाजितकर्मगणं गणनायकचित्तकज
 क्षमम् ॥ मरुकावुधिधानपयोधिमुनिं मुनिनायक-
 र्मास्मिन्वत्पतम् ॥ ६ ॥ तन्मार्कममोद्यतसत्करज

रजताद्रिमनोशविशुद्धकुलम् । कुलवारिधिचन्द्रमन-
 न्तकल कलधौतनिभं जिनपार्श्वविभुम् ॥ ७ ॥
 विभुर्नौख्यकरं भवभोतिहरं हरहारकृतोदरणेन्द्र-
 वरम् । वरपोतनिभं भववारिनिधौ निधिवत् मुखद-
 जिनपस्तवनम् ॥ ८ ॥ श्रीवामेयो जिनाधीश
 शिवपद्यादिति स्तुतः । पाठकार्योत्तमाम्भोधिगुरूणा
 सुप्रसादतः ॥ ९ ॥

१६. श्रीचन्द्रप्रभस्तोत्रम् ।

चन्द्रप्रभ प्रभाधीश चन्द्रशेखर चन्द्रभूः ।
 चन्द्रलक्ष्मीक चन्द्राक्ष चन्द्रबीज नमोऽस्तु ते ॥१॥
 ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चन्द्रप्रभः ह्रीं श्रीं कुरु कुरु स्वाहा ।
 इष्टसिद्धि महासिद्धि तुष्टि पुष्टि करोद्भवः ॥२॥
 द्वादश सहस्र जपतो वाञ्छितार्थफलप्रदः ।
 गृहीतस्त्रिसन्ध्यजपत सर्वाधिव्याधिनाशक ॥३॥
 सुरासुरेन्द्रमहितः श्रीपाण्डू च नृपसुतः ।
 श्रीचन्द्रप्रभ तीर्थेश चन्द्रोज्ज्वलां कुरु कुरु ॥४॥
 श्रीचन्द्रप्रभविद्येयं स्मृता सद्यफलानृता ।
 भवाधिव्याधिविध्वंसदायिनी मे वरप्रदा ॥५॥

९० श्री गौतमस्तोत्रम् ।

ॐ नमस्त्रिजगत्पुत्रीरस्यामिमधुनवे ।
 समप्रसरिष्यमाक्षिप्यरोहणायैश्वर्यमूतये ॥१॥
 पादाभोजं मगधतो गौतमस्य नमस्तुता ।
 यशीमधमि वैलोक्यस्तपसो विगतापदा ॥२॥
 तथ सिद्धस्य बुद्धस्य पादाबुद्धरक्षाकृताः ।
 पिपति कल्पशाखीय कामितामि तनूमताम् ॥३॥
 श्रीगौतमासील महा नमस्य तव कीर्तनात् ।
 गुणार्णवुष्यं पृथिवीमुचिमोति नरक्षिरं ॥४॥
 प्रतिशवे तर्गपाप्मा मगधान् मास्करी धिर्य ।
 यति तौम्यतया चाम्प्रीमहो ते श्रीमकांतता ॥५॥
 शिञ्जित्य संन्यागमायां बीज मोहमदीपते ।
 नराक्याम्मुक्तिरात्रभीमायकल्पत्यस्मादतः ॥६॥
 उदशाग्नी विधा वेधा भीमवायमर्यंदिता ।
 भगवत्पुण्यर्नपुण्य तेषां साक्षात्कृतोऽसि वै ॥७॥
 नम म्याहा पतिउर्पानिस्त्रिभङ्गारी तनूत्यये ।
 जगानम ग १ त २ ३ यागीनाय महामने ॥ ॥

इति श्रीगौतमस्तोत्रं मन्त्रान्ते स्मरतोन्वहं ।
श्रीजिनप्रमसूरेस्त्व भव सर्वार्थसिद्धये ॥६॥



२१. ओपरमात्मस्तोत्र ।

॥ भुजगप्रयात ॥

शिरं शुद्धबुद्धं परं विश्वनाथं, न देवं न बन्धुं
न कर्म न कर्ता । न अगं न संगं न इच्छा न कामं,
चिदानन्दरूपं नमो वीतराग ॥ १ ॥ न बन्धो न
मोक्षो न रागादि लोकं, न योग न भोगं न व्याधिर्न
शोकं । न क्रोधं न मान न माया न लोभ, चिदा०
॥२॥ न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिह्वा, न चक्षुर्न
कर्णं न वस्त्रं न निद्रा । न स्वेद न खेदं न वर्णं न
मुद्रा, चिदा० ॥ ३ ॥ न जन्म न मृत्युर्न मोदं न
चिन्ता, न क्षुत्तृद् न भीतं न काश्यं न तुंदा । न
स्वामी न भृत्यो न देवो न मर्त्यो, चिदा० ॥ ४ ॥
त्रिदंष्ट्रे त्रिखण्डे हरे विश्वव्यापं, हृषीकेश विध्वंस
कर्मारिजाल । न पुण्यं न पापं न अज्ञान प्राणं,

चिरा० ॥ ५ ॥ न बाह्यं न ह्यन्तरं न मिश्रं न मूर्धो, न
 चैव न मेव न मूर्तिर्न मोहो । न कर्मा न सुखं न
 मोहो न तन्मा, चिरा० ॥ ६ ॥ न व्याध न मार्गं न
 कर्म न मन्त्रा न वृद्धं न योगं न इष्टी न मन्त्रा ।
 न सुखो न शिष्यो न आश्रयो न दीर्घं, चिरा० ॥ ७ ॥
 इह कान्तरूपं कथं तत्त्वमेदी न पूर्वं न ह्यन्तरं न
 तन्मय रूपं । अन्त्यो विमिश्रं न परमार्थमेकं चिरा०
 ॥ ८ ॥

॥ शार्ङ्गविष्टिः ॥

आत्मारामगुहाकरे गुह्यनिधिर्ब्रह्मरत्नाकरः ।
 सर्वे भूतगतागते सुखबुद्ध्यास्ता त्वया स्वयेन ॥
 त्रिलोक्याधिपति स्वय त्वमनसा व्यायगिष्ठ योगीश्वर
 नन्दे तं हरियशहपद्मद्वयं श्रीमान् भूयन्मुता ॥ ९ ॥



२२ श्री घण्टाकर्मा स्तोत्रम् ।

ॐ घण्टाकर्मा महावीर्यं सर्वेष्वधिपतिनायकः ।
 विष्णोर्दक्षभयं प्राप्तं तच्च गतं महापला ॥ १ ॥

यत्र त्वं तिष्ठसि देव लिखितोऽन्नगपंकितमिः ।
 रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति वातपित्तकफोद्भवाः ॥ २ ॥
 यत्र राजभयं नास्ति यांति कर्णो जपाजगात् ।
 शाकिनी भूत वैताल राजसाः प्रभवन्ति न ॥ ३ ॥
 नाकाले मरणां तस्य न च सर्पेण दश्यते ।
 अग्निचौरभयं नास्ति ॐ ह्रीं श्रीं वरटाकर्णो नमोस्तु
 ते ठः ठः ठः स्वाहा ॥४॥



२३. श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ।

॥ ओटक ॥

प्रणमामि सदा प्रभुपार्वेजिनं, जिननायक
 दायक सौख्यधनम् । धनचारुमनोहरदेहधर,
 धरणीपतिनित्यसुसेवकरम् ॥ १ ॥ करुणारस
 रजित भव्यफणी, फणिसप्त सुशोभित मौलिमणि ।
 मणिकंचनरूपत्रिकोटघटं, घटिता सुर किन्नर
 पार्श्वतटं ॥ २ ॥ तटिनीपतिघोषगभीरस्वर,
 शरणागतविश्वश्रमशेषनरं । नगनारिनमस्कृत

नित्य गदा पद्मावती गायतरीत सदा ॥ १ ॥ सत-
 तेन्द्रिय गोप यथा कमठ कमठासुर बाहुय मुष्-
 षठ । इठधेलि कर्मे इठाम्बल, बलधाम इरैर
 पद्मजल ॥४॥ अलज्जय पद्म पमा नपन मयवेरिठ
 भवपतरी समसे । मयमरपमहीरुह बह्निसम,
 समता मुक्त रत्नमय परम ॥ ५ ॥ परमार्थ विचार
 मदा कुशल कुशलं कुशलं मे मिमनाय अलं । अलिनी
 मलिनी मज नील तन तनुवा मधु पारषेजिनं
 सुधमं ॥ १ ॥

इतिविशिन ॥

सुधमपायकर कल्याणरं

परमसिद्धिकर वरदापरं ।

वरतर अम्बसमपुसोद्धरं

मयमता मधुपारषेजिनं शिषं ॥७॥



२४. भक्तामरस्तोत्रम् ।

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-

मुद्योतकं दलितपापतमोघिनानम् ।

सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-

वालम्बन भवजले पतता जनानाम् ॥१॥

यः संस्तुतः सकलबाह्मयतत्त्वबोधा-

दुद्भूतबुद्धिपटुमिः सुरलोकनाथैः ।

स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः

स्तोप्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ !

स्तोतुं समुद्यतमतिर्भिगतत्रपोऽहम् ।

वालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुविम्ब-

मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

घक्तुं गुणान्गुणसमुद्रं शशाककान्तान्

कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।

कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं

को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

नित्यत्वा पद्यावती गायतत्रीत सदा ॥ १ ॥ सत
 तेन्द्रिय गोप यथा कमठं कमठासुर मारुत मुह-
 र्दं । इठहेति कर्म इताम्यत्वं, बलधाम बरं
 बह्वर्त्तं ॥ ४ ॥ अताज्जय पद्म पद्मा मयम, मयनैति
 मयपतरी समम । सममत्थमहीरुह वह्निसम,
 समता शुभ गङ्गमयं परम ॥ ५ ॥ परमार्थ विचार
 सदा कुशल कुशलं कुशलं मे जिननाथ अस्ते । अस्तिभी
 नखिबी नञ् बीज तमं छनुता मभु पारवैजिन
 सुधमं ॥ ६ ॥

पुनश्चिन्ति ॥

सुधमध्यायकर कमलापरं
 परमसिद्धिकर वववापरं ।
 वरतर अम्बसेनपुलोद्भूय
 मयभुता मभुपारवैजिनं शिष्य ॥ ७ ॥



दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
 पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जित ॥९॥
 नात्यद्भुत भुवनभूषण भूतनाथ
 भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
 तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
 भूत्याश्रितं य इह नात्मसम करोति ॥१०॥
 दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
 नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
 पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः
 क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥११॥
 यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
 निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ।
 तावन्त एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां
 यत्ते समानमपर न हि रूपमस्ति ॥१२॥
 वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि
 नि शेषनिर्जितजगन्त्रितयोपमानम् ।
 विस्वं कलङ्कमल्लिनं क्व निशाकरस्य
 यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

सोऽहं तथापि तत्र भक्तिवशात्सुखीय ।
कर्तुं सार्वं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।

मीत्यात्मधीर्वमविचार्य सुगी मृगेन्द्रम्
नाम्येति किं निजशिरोः परिपात्रमार्चन

मदपसुत सुतवतां परिहासयाम
त्वमशितरेव मुक्तीकुवते बलान्माम् ।

पत्कोकिलः किल मधी मधुरं विरीति
तथात्सूतकसिद्धाधिकरेकहेतुः ॥६॥

न्यास्तंस्तवेन भवमस्ततिसचिषयं
पार्यं चक्षात्कथमुपैति शरीरमात्राम् ।

आह्लास्यतो कमस्मिन्नीलमशेषमाद्य
नृपाद्युमिषमिव शार्करमण्यकारम् ॥७॥

मत्तेति माय तत्र संस्तवन मयेव-
मारभ्यते तमुचिषापि तत्र प्रयागात् ।

चेतो हरिष्यति सतां नस्मिमीदृशेषु
मुक्त्यफलपुतिमुपैति ननूवविन्दुः ॥८॥

आस्तां तत्र स्तवममस्तसमस्तवीर्यं
न्यास्तंकथापि अगतां पुरितानि हन्ति ।

विभ्राजते तव मुखाञ्जमनलकान्ति,
 विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकविभ्रम् ॥१८॥
 किं शर्वरीषु शशिनाहनि विवस्वता वा
 युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ।
 निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके
 कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम् ॥१९॥
 भानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
 नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
 तेजः स्फुरन्मणिषु यानि यथा महत्त्वं
 नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥
 मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा
 दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
 किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्य-
 कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥
 स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
 नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
 सर्वा दिशो दधति भानिसहस्ररश्मि
 प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामममिह मुनय परम पुमांस-
 मादिस्त्वर्चममस्त तमस्तः पुरस्तात् ।
 त्वामेष सत्यगुपसम्य जयन्ति मूर्तु-
 नाम्भ्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पम्या १२१
 म्यामम्यय विमुमविम्यमसंभ्यमार्त
 प्रह्लादमीभ्वरमनन्तमनन्ताकेतुम् ।
 दांगीभ्वर विदितयोगमनेकमेष्ट
 धानस्यरूपममस्तं प्रपवन्ति सन्त ॥१४॥
 पुत्रस्यमेष्ट विपुषार्चितपुत्रिबोधात्-
 त्वं संकरोऽसि मुपनयपशुकरत्वात् ।
 धातामि धीर शिवमार्गविषेर्विधानात्
 व्यक्त स्वमेष्ट मगवन्पुत्रोत्तमोऽसि ॥१५॥
 तु ये नमन्निभुधमार्तिहृषाय नाथ
 तुभ्यं गम विनितकामस्तपुपक्षाव ।
 तुभ्यं नमन्निभुधमस्त परमेभ्वराय
 तुभ्यं नमो विन मवेष्टविशोपक्षाव ॥१६॥
 का विरमया न्व यदि नाम मुषिरयेरी-
 रूपं मधिना निरवकाशतया मुनीय ।

दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः

स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-

माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।

स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं

विम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥२८॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे

विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।

विम्बं वियद्विलसदशुलतावितानं

तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभम्

विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।

उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्भरवारिधार-

मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-

मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।

मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभम्

प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

गंभीरताएवंपूरितदिग्दिमाग-

अत्रैतान्यसोकशुभसंगमभूतिद्वयः ।

नमो नमो राजजयधोपधोपकासम्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १॥

मदारसुप्तरनमेकसुपारिजात-

संज्ञानकारिणुसुमोत्कृष्टपुष्पिका ।

गंधाद्विभुसुमसंवमस्त्यपाठा

दिश्या दिशः पतसि ते यशसां सतिषां ॥२३॥

शुद्धभूतप्रभावलयमूरिबिमा विमोस्ते

लोहपुष्टिमाद्यिपंथी ।

प्रोपदियाकरमिरंतरभूरिसंख्या

दीप्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्या ॥१४॥

कृष्णादयः । गममागैविशार्गैरेव ।

सधर्मगणकयमकपदुद्विजलोकपाः ।

निवृत्त्यनिभयात् तं विशदार्थसूच-
कं

भा. रास्वभाष्यरित्तामगुलीः प्रबोद्धा ॥३५॥

अभिज्ञानमन्यवसु जपुञ्जवाप्सी

पशुसंरक्षणमशुभजिज्ञासिगमी ।

पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः

पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र

धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।

यादृक्प्रभा दिनकृतः ग्रहतान्धकारा

तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-

मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।

ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं

दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥

मिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्ल-

मुक्ताफलप्रकरभूपितभूमिभागः ।

वद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि

नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३९॥

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निनकल्पं

दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।

विश्वं जिघत्सुमिध सम्मुखमापतन्तं

त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥

एतेषां समदकोटिलकएठनीलं
 कोपोयत्तं कश्चिन्मुत्फुल्लमापतन्तम् ।
 आकामति कमयुगेषु निरस्तम्-
 एवमममममममी इति यस्य पुंसः ॥४१॥

वहगस्तुरङ्गगजगर्जितमीममाह-
 माजी वल्ल वल्लयतामपि भूपतीनाम् ।
 उद्यदिषाकरमयूकयिषापरिषुम्
 न्यत्कीर्तनात्तम इयम्पु मिदामुपति ॥४२॥

कुन्ताममिभगजगोदितवारियाह-
 बेगापतारनरबातुरपोषमीमे ।
 युञ्ज जय विजितवुञ्जपञ्चमपत्ता-
 स्मत्पावपदुञ्जनाभयिहो तमन्ते ॥४३॥

धम्मोतिषी कुम्भितमीपञ्चमपञ्च-
 पाठीनपीठमपवोदपञ्चमपञ्चमी ।
 रत्नतरङ्गयिष्यन्मिष्यतयामपाञ्चा-
 न्याम विहाय भवत स्मरणाद् यजन्ति ॥४४॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्ना.

शोच्यां दशामुपगताश्चक्षुतजीविताशाः ।

त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा.

मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपा ॥४५॥

श्रापादकरठमुखं खलवेष्टिताङ्गा-

गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघा ।

त्वन्नाममंत्रमतिशं मनुजाः स्मरन्तः

सद्यः स्वयं विगनबंधमया भवन्ति ॥४६॥

मत्तद्विप्रेन्द्रमृगराजदवानलाहि-

संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।

तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव

यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां

भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।

धत्ते जनो य इह करुणगतामजस्रं

तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मी, ॥४८॥



२५ पारबेनाथ स्वामी स्तुत्य ।

विनि मंगलमुकुट धर्मक निकट विरधा प्रगट
 वाह भट । मयरेखु समीर भीत शरीर सुर गुह
 पीर गंभीर ॥ जगति जग शरणाकुर्मति हरण पुनर
 चरख सुख करख । श्री पारबे जिनेद्रं नित मार्गेन्द्र
 नमत सुरेन्द्र कृत भद्र ॥ १ ॥ देह पुति सारं सुमगा
 कारं विरधाधारं शुख धारं । शिव रमणी
 रक्तं पग विरक्तं संकट मुक्तं शुख पुक्तं ॥
 कमठे मम दक्षमं गजगति बलमं केपल कमल
 श्रीबिमल । श्री पारबे जिनेद्रं नित मार्गेन्द्र नमत
 सुरेन्द्र कृत भद्र ॥ २ ॥ महिमा दिन कारं भव
 निस्तारं निजितसारं दातारं । प्रतिमथ मैतारं
 गन वमार जिनेतार जातारं ॥ बुधुमें जसरदनं
 दुर्मति डलन संपति मदनं शुख नदनं । श्री पारबे
 जिनेद्रं नित मार्गेन्द्र नमत सुरेन्द्र कृत भद्रं ॥ ३ ॥
 पाम धी जय निर्मल पद हन जिभरुं जिनमोचं
 शिथ ममना हारं सफल विहारं मुकुट विहारं
 सुखदा ॥ पागली धर गय जगस्यगम्य

रम्यारम्य शहरम् । श्रीपार्श्वे जितेन्द्र निव नागेन्द्र
नमत सुरेन्द्र कृत भट्टे ॥४॥



२६. छंद त्रिभंगी शान्तिनाथ का ।

गजपुर अवतारं, शान्ति कुमार, शिवदातार,
सुखकारं । निरुपम आकारं, रुचिगाचार, जगदा-
धारं, जितमारं ॥१॥ कृत अरिसहारं, महिमापारं,
विगत विकार, जगत्सारं । परहित ससारं, गुण
विस्तार, जग निस्तारं, शिवधारं ॥२॥ श्री शान्ति
जिनेश, जगत महेशं, विगत कलेश, भट्टेशं । भविक-
मल दिनेशं, मति महिसैयं, मदनमहेशं, परमेशं ॥३॥
जनकुमदनिशेशं, रुचिरादेशं, धर्मधरेशं, चक्रेशं
भवजल पोतेशं, महिमनगेशं, निरुपमवेशं, तीर्थेशं
॥४॥ वर रूप अमानं, अरितमभानं, निरुपम ज्ञानं,
गतमानं । गुण गणउत्थानं, मुक्ति वितानं, लोक
निदानं, संधानं ॥ ५ ॥ भवि तारन स्थानं, कृपा
निधानं, जगत प्रधानं, मतिमानं । प्रगटित कल्याणं

वर महिमानं शिष्यपद्वानं मगजानं ॥१॥ मी
भवजाल जितकलिकालं कीर्ति विशालं विमप
गति विजित मगल अरिकुलकालं यखन रह
धरमाम ॥ ७ ॥ मुनि जलज सुशालं मय भयठ
शिष्यज मालं सुकुमालं । भवि तद गङ्गा
त्रिभुवन पालं कान विशालं गुनमालं ॥८॥



२७ श्री पार्श्वनाथ ।

(विष्णु स्तव)

शिष्यसुखदातार विभवाधारं लीक्याका
नेतार जितमदनविकार करुणागारं इतरिपुषारं
लैतारं ॥ इतमबनिस्तारं परमोदारं स्तवनाधारं
जातार । गुणपागधारं कीर्तिस्फारं केषलधारं
धातार ॥ १ ॥ आनवासकल तोषितमक्तं वष
ि युक्त सुम्पक्तं । मयमत्सरमुक्तं तारय सक्तं
विषयशिरफ्त शिष्यरक्तम् । अघ्याहतमयं धैर्यगिरीम्
दमा समुद्रं सम्मुद्रं ॥ मुक्त मिश्रित चन्द्रं प्रसुत

सुरेन्द्र महामुनीन्द्रं निस्तन्द्रं ॥ २ ॥ सुखदायि-
स्मरणांदु खितशरणां वन्दितचरणां विगतमदम् ।
कृतदानोद्धरणां कलिमलहरणां विमलीकरणां
प्रवरपदम् ॥ प्रकटीकृतविनय दर्शितसुनय
प्रवचननिलयं सुगुणमयम् । अगणितगुण-
निचयं मुनिजनहृदयं पार्श्वजिनं जयक्षपित-
भयम् ॥

२८ अथ ऋषभदेव छन्द ।

(मायफाल का)

परम अलक्षहि त्रय जग चक्षुहि, संघसुपक्षहि
अक्षवते । प्रभु अवियोगी आदि वियोगी, स्वय
मुपयोगी संघ कृते ॥ ऋषभ निरञ्जन सब दुख
भञ्जन, हे मनरञ्जन सुध वित्ते । जय जय हो
अमराधिप वन्दन, कर्मनिकन्दन नाभिसुते ॥१॥
मुखदेवीनन्दन अनिद हि-कंदन है ढिगचन्द
हिमन्द दुते । तनकनकाचलचम्पक लीकल दीप-

शिकादलम्बप्लुवते ॥ निरकत हृष प्रकर्ष बधे,
 दूरजाल दितकत मार्कयते ॥ अथ ॥ २ ॥ पद् भर-
 विदहि धूम्र चिन्तित धाम्यत धूम्र सुरम्भनिते ।
 जुग सुभ संछन बधित दम्भन म्भम्भ प्रतम्भ
 स्वम्भम्भयिते ॥ सद्धि अपर्णद्धि दीर्घ सुक न लहे
 ममधर्गद्धि म्यतपते ॥ अथ ॥ ३ ॥ दर्शन केवल
 कबल ज्ञानमि केवल राग विराग विरोधरते ।
 अनिशय लापक व्यक्त महायक मुक्ति महायक
 मुक्ति पते ॥ मय अम जाल कपाल श्लिततकाल,
 मृशाल दम्भाल पते ॥ अथ ॥ निरजर कोट पलाटत
 पाप निरस्तर कीट अन्नुट बते । सिरहिय द्रव
 विचित्र रते अकरल पवित्र नयन पते ॥ इम
 महिमा रूप अनूपगते प्रतिहार जयो जिनपञ्च
 जुते ॥ अथ ॥ मय जग जीवन जीवन मूलद्धि धर्म
 मृजीवन दाम्भुपते । यह मय सागर मागर ते
 गद्धि भाग्द नापसु पारहुते ॥ तुम विष रूप
 कपाल अनूप शरसागत सिय सरूपकृत ॥ अथ ॥
 प्रभु गुण भागर पार महागति रभुज पारन

पारगते । निम पदहीन अपंग निरन्तर चढे गिरि
 अद्ग उतंगनते ॥ इमहिज हो बुद्धि हीन अधीन,
 यह यतकीन क्षमा कुरुते ॥ ७ ॥

॥ इति ऋषभदेव छन्द ॥



२६. साधु गुण ।

। छन्द त्रिमी ॥

गहे सुशानं, धरत ही ध्यानं, मरदत मानं, बड
 भारी । दुर्मतिसे दूरा, संजमसूरा, कथे न कूडा,
 अणगारी ॥ परहरिया प्रेमा, निर्मलनेमा, हिरदे
 हेमा, शुभचारी । तपस्या तन तावे, अघ उडावे,
 धन २ साधू गुणधारी ॥ ॥ सुख सेजां सूली, धन
 है धूली, अनमूली, उर लोभलता । नो कल्पनिहारी,
 उग्रविहारी, कीधा भारी, मोक्षमता ॥ सम साकर
 टाकर कंचन काकर ठाकर चाकर एकसारी ॥ त०
 ॥ २ ॥ दिल नहिं दभा, थिर मन थम्भा, अधिक
 अचम्भा, गुणगेह ब्रत पाले धम्भा, रमे निरंभा भल

पल अम्मा अग जेहू ॥ अमण्य भारमा, यथा भिरमा,
 लुठे लम्मा अकपारी ॥ त० ॥ १॥ शुभ कारज सारख,
 विपन विहारख आनम तारख आप अपे । अप
 मर जारे न्यूना हारे मरुं मिथारे ताप तपे ॥
 दुश्मन अठवाठख मनकी मारख तप तळारी
 लेकारी ॥ त० ॥ ४॥ जीते मन ओषा काम विरोषा
 बैर विरोषा बैतदखी । खर लुंछे स्वार्द उर इम्मार
 गमे न नार्द रंगरखी ॥ खरजे विषयाद पंचममार्द
 अर्थ उपाद शृङ्गारी ॥ त० ॥ ५ ॥ बहुत व्यापारी,
 मारी मारी बरुनु विचारी केता है । मंघडुंमायक
 गाने पायक बीअरु बायक देता है ॥ धर्म धीअ
 मली धर भावे अखीपर बडे मुनीश्वर रीवारी ॥
 त ॥ ६ ॥ अक पदकाया मिथ्या माया अरिदल
 हाया नेक रही । अय स्वाग अठारे, ममता मारे
 बाधन धारे सैन मही ॥ ईसा वलि बाऊ, मिचरे
 बाऊ अधिक उझाड उर डारी ॥ त० ॥ ७७ सोमा
 सिद्धगाऊ उर अलुगाऊ करे न काऊ बैद पिदा ।
 अकपा तर्हि अरु मेल न मेरी नव हक मंछे मर

सदा ॥ तज हॉसि तमासा, वेष विलासा, उरकी
 आशा सब छारी ॥ त० ॥ ८ ॥ सतवीस सुरगा, गुण-
 जलगंगा, ओपम अद्वा, शशि जैसा । भल वाणी
 भाखे, दोष न दाखे, रात न राखे मनरेपा ॥
 साधू गुण सांचा, वंधा वाचा, जग में जाचा, सब
 सारी ॥ त० ॥ ९ ॥



३०. शारदाष्टक ।

॥ छन्द मुजग प्रयात ॥

जिनादेश जाता जिनेन्द्रा विख्याता, विशुद्धा
 प्रबुद्धा नमोलोकमाता, दुराचार दुर्नैहरा संकरानी,
 नमो देवि वागीश्वरी जैनवानी ॥ १ ॥ सुधी धर्म
 संसाधिनी - धर्मशाला, मुधातापनिर्नाशिनी मेघ-
 माला, महामोहविध्वंसिनी मोक्षदानी, नमो देवि
 वागीश्वरी जैनवानी ॥ २ ॥ अखै वृक्ष शाखा व्यती-
 तामिलाषा, कथा संस्कृता प्राकृता देश भाषा, चि-
 दानन्द भूपाल की राजधानी, ॥ नमो० ॥ ३ ॥ समा-

स्वामी, अमिन शक्ति भगडाग ॥ सेवे० ॥१॥ कर
 पण्ड कमठ अठ गुण, युक्त मुक्त संसार । पायो पद
 परमिष्ट तास पद, वन्दो वारम्बार ॥ से० ॥२॥ सिद्ध
 प्रभु का स्मरण जग में, सकल सिद्ध दातार ।
 मन वाञ्छित पूरण सुर-नर सम, चिंता चूरण
 हार ॥ से० ॥ ३ ॥ जपे जाप योगीश रात दिन,
 ध्यावे हृदय मभार ॥ तीर्थङ्कर ह-प्रणमें उनको,
 जव होवे अणगार ॥ से० ॥४॥ सूर्योदय के समय
 भक्तियुत, स्थिरचित्त दृढ़ता धार । जपे 'सिद्ध'
 यह जाप तास घर होवे ऋद्धि अपार ॥ से० ॥५॥
 सिद्धस्तुति पढ़े भाव से, प्रति दिन जो नरनार ।
 सो दिव शिव सुख पावे निश्चय, बना रहे सरदार
 ॥ से० ॥६॥ माधव मुनि कहे सकल संघ में, बड़े
 हमेशा प्यार । विद्या विनय विवेक ममन्वित, पावे
 प्रचुर प्रधार ॥ से० ॥७॥



तणे । अडवडियां तूँ आधार कह्यो, समरथ साहव
 में आज लह्यो ॥७॥ दुखिया ने सुख दायक दाखे,
 अतरणे शरणे तूँ राखे । तुम नामे सङ्कट विकट
 टले । विडुडिया बहाला आय मिले ॥८॥ नट विठ
 लम्पट दूरे नाशे तुम्ह नामें चोर चुगल बासे । रण
 राजल जयतुज नाम थकी, सघले आगल तुम्ह सेव
 थकी ॥ ९ ॥ यज्ञ राक्षस किन्नर सवि उरगा, करि
 केशरी दावानल विहगा । वध बन्धन भय सघला
 जावे, ते एक मने तुजने ध्यावे ॥ १० ॥ भूत प्रेत
 पिशाच छली न शके, जगदीश तवामिध जाप
 थके । मोटा जोरिंग रहे दूरे, दैत्यादिकना तुं मद
 चूरे ॥११॥ डायणि सायणि जाय हटकी, भगवन्त
 धाय तुज भजन थकी । कपटी तुज नाम लियां कंपे
 दुरजन मुख थी जी जी जंपे ॥१२॥ मानी मझुराला
 मुंह मोड़े तेण आगलथी कर जोड़े । दुर मुख
 दुष्टादिक तूहि दमे, तुज नामे म्दोटा मलेच्छ नमे
 ॥१३॥ तुज नामे माने नृप सबला, तुज जश उज्जल
 जिम चन्द्र कला । तुज नामे पामे रिडि घणी, जय

अथ अयदीश्वर विजगत धरणी ॥ १४ ॥ चिंतामसि
 काम समी पामे हयमय रय पावक तुष्ट बाये ।
 अतएव द्रुकराई तू आवे, दुर्जन बारिहर कवि ।
 ॥ १५ ॥ निवेदन ते तू धनपस्त करे, तुझो कोछर
 मेढार मरे । घर पुत्र कलत्र परिवार धर्यो, ते सहु
 महिमा तुम्ह नाम लखो ॥ १६ ॥ मासिक मोठी रत्न
 अरुणा सोबन मूरख पडु तुघट धर्या । बलि पडे
 रण सहरंग जेव धर्या तुम मासे नहि रहे काँई
 मखा ॥ १७ ॥ बेरी विद्वत्ता नहि ताकि शकै बली-
 कोर बुगल मनजी खमके । सुल विद्र कदा कैहमो
 न करे, मिमराज सदा तुम उधोसि जगे ॥ १८ ॥ डग
 ठाकुर खर धर हर कंघे पार्श्वही पल को नहि
 करके । मंदारानिक सहु नासी आवे मारण तुज
 अपतां अथ धावे ॥ १९ ॥ अक् मूरण के मति दिन
 बली अज्ञान मिमिर तस आवे उली । तुज सुम-
 रण धी जाहा धाप, पंडित पद पामी पूजाप ॥ २० ॥
 कस कांसि खपन पीड़ा मासे गुरवस मुख दीन
 पलु भासे । गव गुबक कुपपीके सबला, तुज आवे

रोग समं सग्रहा ॥ २१ ॥ गहिला गूंगा बहिराय
 जिके, तुज ध्याने गत दुस्त्र जायतिके । तनु कांति
 कला सुविशेष वधे, तुज स्मरण से नवनिधि सधे
 ॥ २२ ॥ करि केशरी अहिरण बंधसया, जल जलण
 जलोदर अष्ट भया । रांगण पमुहा सब जायटली,
 तुज नामे पामे रग रली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं
 पार्श्वनमो, नमि उण जपंता दुष्टदमो । चिंतामणी
 मन्त्र जिके ध्यावे, तिण घर दिन दिन दोलन धावे
 ॥ २४ ॥ त्रिकरण शुद्ध जे आराधे, तस जस कीर्ति
 जगमां यांधे । वलि कामित काम सबे साधे, स-
 मिहित चिंतामणी तुज लाधे ॥ २५ ॥ मद मच्छर
 मन श्री दुर नजे, भगवन्त भलीपरे जेह भजे । तस
 घर कमला किल्लोल करे, वलिराज्य रमणी बहु
 लीलवरे ॥ २६ ॥ भय बारक तारक तं प्राता, सज्जन
 मनगति मतिनो दाता । मात तात सहोदर तं
 स्वामी, शिव दायक नायक हित कामी ॥ २७ ॥
 करुणा कर ठाकुर तं म्हारो, निशिवासर नाम जपूं
 त्हारो । सेवक लूं परम कृपा करजो, बालेश्वर

अथ अगदीम्बर विजगत्त धरणी ॥ १४ ॥ चिंतामणि
 काम सभी पामे हयगय रथ पायक तुझ नाम ।
 जनपद दुकगई तू आपे दुर्जन दारिद्र कपि ॥
 ॥ १५ ॥ निर्धम ने तू धनधन करे, तुष्टो कोठार
 भंडार मरे । घर पुत्र कलत्र परिवार धनो ते सह
 महिमा तुम्ह नाम तथो ॥ १६ ॥ मायिक मोठी रत्न
 अरुणा सोपन मूरख बहु सुघट चरुणा । बलि पहे
 रण मबरंग बेप धरणी तुम नामें नबि रहे कोई
 मर्या ॥ १७ ॥ बैरी विरुद्धा नबि ताकि शके चली-
 थोर दुगल मनधी धमके । छल छिद्र कदा कैदमो
 न लगे जिनराज सदा तुम कपोति अगे ॥ १८ ॥ ठग
 ठाकुर सब घर हर कंये पाखंडी पख को नबि
 फरके । सुहारादिक सह नासी आवे मारग तुझ
 अपतां शय धावे ॥ १९ ॥ गढ़ मूरख कै मति दिन
 पही अज्ञान तिमिर तस जाय टली । तुझ सुम-
 रय थी आद्या धाप, पंडित पद पामी पूजाय ॥ २० ॥
 लस खांसि खपन पीका मासे दुरवस मुख दीन
 परुं आसे । गढ़ गुणक दुष्टजीके मरसा, तुझ आवे

रोग समे सघला ॥ २१ ॥ गहिला गूंगा बहिराय
 जिके, तुज ध्याने गत दुख जायतिके । तनु कांति
 कला सुविशेष वधे, तुज स्मरण से नवनिधि सधे
 ॥२२॥ करि केशरी अहिरण बंधसया, जल जलण
 जलोदर अष्ट भया । रांगण पमुहा सब जायटली,
 तुज नामे पामे रंग रली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं
 पार्श्वनमो, नमि उण जपंता दुष्टदमो । चिंतामणी
 मन्त्र जिके ध्यावे, तिण घर दिन दिन दोलन थावे
 ॥२४॥ त्रिकरण शुद्ध जे आराधे, तस जस कीर्ति
 जगमा बांधे । बलि कामिन काम सवे साधे, स-
 मिहित चिंतामणी तुज लाधे ॥ २५ ॥ मद मच्छर
 मन थी दुर तजे, भगवन्त भलीपरे जेह भजे । तस
 घर कमला किल्लोल करे, बलिराज्य रमणी बहु
 लीलवरे ॥२६॥ भय बारक तारक तूं आता, सज्जन
 मनगति मतिनो दाता । मात तात सहोदर तूं
 स्वामी, शिव दायक नाथक हित कामी ॥ २७ ॥
 करुणा कर ठाकुर तूं म्हारो, निशिवासर नाम जपूं
 त्हारो । सेवक छूं परम कृपा करजो, बालेश्वर

पश्चित फल देज्यो ॥२८॥ जिनराम सदा तू जय-
 कारी मुझ धरति अमि मोहनगारी । मुगति महे-
 लमा तू गजे, विमुचन ठकुराई मुजहाजि ॥ २९ ॥
 हम भाव मझे जिनवर गायो, यामा सुत देखी बहु
 सुख पायो । रवि राशि मुनि सबच्छर रंगे, जय-
 देय सूरमा सुख संगे ॥ ३० ॥ जय पुढपादाणी
 पारबैप्रभो, सकलायै नमिहित दोहिधिमो । पुष
 हर्य रुचि विजयाय मुदा तव सम्भिरूपी सुखयाय
 नदा ॥ ३१ ॥



३३ पैमठिया पद्य ।

२२	३	६	१६, १६
१४	२	११	२ ८
२	७	१३	१६ २६
१८	२४	६	३ १९
१	१७	७	२३ ४

भी पैमीभर सुमनव ताम
 सुपिधि भर्म शानि अमिराम ।
 अमस्त सुमन नमिताय सु-
 जाल, भी जिनवर मुझ को
 कहयाम ॥ १ ॥ अजिठनाय

बन्दायमु पीर आदेभर सुपार्थ गंभीर । विमल-

(७५)

नाथ विमल जग जान, श्री जिनवर मुज करो
 कल्याण ॥ २ ॥ मल्लिनाथ जिन मंगलरूप, पच्चीस
 धनुष सुन्दर स्वरूप । श्री अरनाथ नमूं वर्धमान,
 श्री जिनवर मुज करो कल्याण ॥ ३ ॥ सुमति पद्म
 प्रभु अवतंस, वासुपूज्य शीतल श्रेयांस । कुन्धु
 पार्श्व अभिनन्दन भान, श्री जिनवर मुज करो
 कल्याण ॥ ४ ॥ इण पर जिनवर सम्भारिये, दुख
 दारिद्र विघ्न निवारिये । पच्चीसे पेसठ परमान,
 श्री जिनवर मुज करो कल्याण ॥ ५ ॥ इम भणता
 दुख नावे कदा, जो निज पासे राखे सदा । धरिये
 पंच तणुं मन ध्यान, श्री जिनवर मुज करो कल्याण
 ॥ ६ ॥ जिनवर नामे वंचित मिले, मनवांचित
 सहु आशा फले । धर्मसिंह मुनि कहे नाम निधान,
 श्री जिनवर मुज करो कल्याण ॥ ७ ॥



१४ पैसठ यत्र उद्धार जिन यत्र ।

॥ वन्द्य ॥

रठ नेमी सम्मथ सुविधि धम शांति जिन देवा ।
 अनन्त सुप्रसन्न नमि अजिन शशि आदेय प्रसेधा ॥
 सुपारये विमल सीमन्ति चतुर तन द्वि पञ्चवीश्व ।
 अर बीर सुमति सुपन्न वासुपूज्य हैं जगनीश्व ॥
 शीतलांश भीकुम्भु जिन पारस अमिनदन विमो ।
 पैसठ यत्र बीबीस जिन सूर्य सुमर सुखकर प्रमो ॥



१५ पैसठ यत्र मय जिन स्तुति ।

॥ वन्द्य ॥

१६	८	१	२४	१७
१६	१४	७	५	२३
२२	२०	१३	६	४
३	२१	१६	१२	१०
६	२	२६	१८	११

धर्म बन्धु जिन अग्रम बीर कुपु प्रभु श्यंती ।
 धर्मत सुपान्ध भी सुमति पार्श्व वपु सोमित कांती ।

नेमी मुनि सुव्रत विमल पद्म अभिनन्दन वन्दौ ।
 संभव नमि जिन मलिल वासुपूज्य तिहुँ जग चन्द्रौ ।
 मीतल सुविधी अजित जिन भावन पश्चिस भाइये ।
 अर श्रेयांश चौबीस जिन पैसठ यंत्र युत ध्याइये । १।



३६. पार्श्वनाथ छंद ।

सकल सार सुरतरु जग जाणं, जग जस वास
 जगत प्रमाणं । सकल देव शिर मुकुट सुचंगं,
 नमो नमो जिनपति मनरंग ॥१॥ त्रिमयी ॥ जिनपति
 मनरंगं, अकल अभंगं, तेज तुरंगं नीलंगं । सुर-
 शोभा संग, दग्ध अनंगं, शीश भुजंगं, चतुरंगं ॥
 ॥ २ ॥ बहु पुण्य प्रसंगं, नित उच्छरंगं, नवनव रंगं,
 मरदंग । कीरति जलगग, देश दुरंगं, सुरनर संगं,
 सारंगं ॥ ३ ॥ सारंगा चक्रं, परम पवित्रं, रुचिर
 चरित्रं, जीवित्रं । जगजीवन मंत्र, पंकजपत्रं, निर्मल
 नेत्रं, सावित्रं ॥४॥ सावित्रा वरणां, मुकुटा भरणां,
 त्रिभुवन शरणां, आचरणां । सुरअर्चित चरणां,

शरिद हरण शिषसुखकरणा, महाधरणा ॥ १ ॥
 अथ जिनवर मन्त्रं नाशुत शर्म मन्त्रामन्त्रं, महा-
 मन्त्र । विरहे अथवर्तं चामर सुभ शीत धरं
 पादिकं ॥ १ ॥ गोमसूतकरणा भवजलतरणा, अन-
 मन मरणा, उदरणा । सुख भगति करणा अथ-
 मरहरणा परसावर्णा भावरणा ॥ ७ ॥ भावरणा
 पालं भाक भमालं निन भूवालं, उजियाल ।
 अथम शशिभालं देव दयाल विदय चाल सुकु-
 माल ॥ ८ ॥ शखगार रसाल, महके मालं, रति सु-
 विशाल भूपाल । रिपु दुर्मदगाल वमा कुदालं,
 मोह कराल भयटाल ॥ ९ ॥ त्रिभुवन रथवाल, काल
 दुकाल महाविकराल, बुरटाल । महागुणधारं,
 मविकाधारं, जगदाधारं निर्धारं ॥ १० ॥ तुम विरद
 विधारी अरज हमारी वारी धारी अथधारी ।
 तुम शर्म पाई, अथ म पाई, हथमथ परेमथ
 सुखधारी ॥ ११ ॥ आनन्दरस पूरे संकट पूरे
 मंगल मालं सुविशालं । इह अन्धसु गावे, आनन्द
 पावे संकट गावे लनकाले ॥ १२ ॥

॥ छप्पय ॥

सकल स्वरूप उटार मार सम्पति मुखटायक ।

रोग शोक मंताप पाप सब दूर नावरक ॥

चहुँ दिशि आण अखण्ड तपे जिम तेज दिनन्दो ।

नमें अपसरा कोड जस गावे सुर इन्दो ॥

तेविसमो जिनवर मलो अधिक अधिक मगल निलो ।

मुनि मेघराज इम विनचे प्रभु पार्श्वनाथ त्रिभुवनतिलो ॥

३७. नवकार महिमा का सवैया ।

जग में सरजीवन जड़ी, पंच नवकार मन्त्र,
 वार वार जपिये, क्षण न भुलाईये । सोवत उठत
 मुख, जोवत प्रदेश मांही, रण में भुजंग सिंह,
 देखी न डराईये ॥ सङ्कट न पड़े भूत व्यंतर कोई
 नहीं छले; जले न अगन, भवोदधि तिर जाइये ।
 कहत है चिनोदीलाल, तांको कहां स्वर्ग दूर; जिन
 ने नवकार मन्त्र, मन बीच ध्याइये ॥ ॥ हिंसा के
 करैया, मुख झूठ के बोलेया; परधन के हरैया,

कठणा म कष्ट किया है । रानी के ससैया, मधु-
 पान के पिसेया, कुडी सास के मरैया, कठोर
 अति दिया है ॥ नरके के अघोषा परनाम के रमैया
 कन्ध मूस के मखिया जाने भीर पाप किया है ।
 तेहु तिरजस्त क्षिप्र, एक में बिनोदीलास, जिनने
 नवकार मंग्र अमृत कास दिया है ॥ २ ॥ कोठ के
 बलदेवता, भूत भेत असुरम को, कोठ के बल बंडी
 मुडी देव सेवपाल को । कोठ के बल गायबे को,
 कोठ के बजाय वे को, कोठ के कमाव वे को, कोठ
 के उधार को । कोठ के बल लड़वे को, कोठ के
 बल मरवे को, कोठ के बल मारवे को, पांचे हजि
 थार को । कहत है बिनोदीलास जपता में तीनों
 कास; मेरे तो अमृत बल मंग्र नवकार को ॥ ३ ॥
 कोठ के तो धन हैं जी रुपैया में मोर पणी, कोठ
 के तो देखियेजी कज्जम मंडार है ॥ कोठ के रतन
 माल कोठ हीरा मोतीलास, कोठ के पस्तु चार,
 द्रव्य अपार है ॥ कोठ के तो धन घान कोठ के
 तो खेत पायु, कोठ के है हाथी घोड़ा, कोठ के

परिवार है । कहत है विनोदीलाल जपता मैं तीनों
 काल, मेरे तो अखूट धन, मन्त्र नवकार है ॥४॥
 अरिहन्तजी के जपे से, अष्ट कर्म को नाश होय,
 सिद्धजी के जपे से, अरूपी पद पाइये । आचारज
 जी के जपे से, आतम स्वरूप दीसे, उपाध्याय
 जप्यां सेती, ऊँची गत जाइये ॥ सर्व साधुजी के
 जपे, शिव मारग बताय देत, इह लोक परलोक,
 अति सुख पाइये, कहत है विनोदीलाल, जपता
 मैं तीनों काल नवकार मन्त्र जपे सदा सुख पाइये
 ॥ ५ ॥

३८. बीस विहरमानों के नाम ।

॥ वीर छन्द ॥

श्री सीमंधर युग बाहु सुबाहु, सुजात स्वयं-
 प्रभु रूपमानन । अनन्त सुरप्रभु विशाल वज्रधर,
 शिव सुखकारन चन्द्रानन ॥ चन्द्रबाहु भुयंग
 ईश्वर नमि, वीरसेन महाभद्र जिणंद । देवजस
 और अजित वीर्य, यह बीस जिनेश भजो सुख-
 कन्द ॥



३९. ग्यारह गणेशों के नाम ।

॥ हरिः ॥

श्री इन्द्र अग्नि वायुमूर्ती, व्यक्त नायक गुरुपती ।
स्वामी सुधर्मा मण्डित मोक्ष पुनि कल्पित गुरुपती ।
आता अचक्षु मेतार्यमुनि, एवै सदा सुख भारती ।
परमास एकाग्रगच्छी शीघ्रै सदा मुक्त सम्मती । १।

४०. सोलह सतिषों के नाम ।

॥ हरिः ॥

माहीसुवन्दनशक्तिरा एकीमती पुनि द्वौपदी ।
भूदा सुमदा सुन्दरी सुलला शिवा सीता सती ।
दमयंति कीरुष्या मृगा पद्मावती परमावती ।
हैवादिषोडश मगवती भ्यामो सदा बहती रती । १।



४१. चार शरणा ॥

प्रह उठीने समरिये, हो भवियण मंगलिक
 शरणा चार । आपदा मिट संपद । हुवे ही भवियण
 दोलतनां दातार ॥ १ ॥ हृदय मां राखीये हो
 भवियण मंगलिक शरणां चार ॥ टेक ॥ अरिहन्त
 सिद्ध साधु तणा, हो० केवली भापित धर्म । ए
 शरणां नित ध्यावतां, हो० तुटे आठों कर्म ॥ ह०
 ॥ २ ॥ वाटे घाटे चालतां, हो० रात दिवस मभार ।
 गाम नगर पुर विचरतां, हो विघ्न निवारण हार
 ॥ ह० ॥ ३ ॥ ए चारों सुख कारिया, हो० ए चारों
 जयकार ए चारों उत्तम कह्या, हो० ए चारों हित
 कार ॥ ह० ॥ ४ ॥ डायण सायण भूतडा, हो०
 सिंह चित्रा ने सूर । बैरी दुशमन चोरटा, हो०
 रहे ते सघला दूर ॥ ह० ॥ ५ ॥ राखो शरणारी
 आसता, हो० नेडो नहीं आवे रोग । आनन्द
 वरते इण नामथी, हो० व्हाला तणो संयोग ॥ ह०
 ॥ ६ ॥ सुख साता वरते घणी, हो० जे ध्यावे नरे

बार । पर मय जाता हव जीयमे, हो० एह तथो
 आधार ॥ ६० ॥ ७ ॥ मन चितित मनोरथ फले,
 हो० बरते करोक कस्याव । सुख मन से व्यापती,
 हो० विषय एव निरवाण ॥ ६० ॥ ८ ॥ एव सरीखो
 सरखो महीं, हो० एव सरीखो बहीं नाम । एव
 सरीखो मित्र महीं हो० नाम बगर पुर ठाम ॥ ६०
 ॥ ९ ॥ दान शिवक तप भावना हो० अग में तब
 बार । करो आराधन भावहु ॥ ६० ॥ पामो मोघ
 दुवार ॥ ६० ॥ १० ॥ ओक कीपी है कुगतहु, हो०
 पाणी सेवे कास । अवि बीचमलगी हम मसे, हो०
 सुखो बाहु गोपाक ॥ ६० ॥ ११ ॥

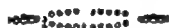


४२. जिनवाणी ।

४२-गीत ।

श्री जिनवाणी अति सुखदानी पठित पावन
 ज्ञान । ॥ ६१ ॥ दान सुवायक अथमस्त भायक दायक
 दर्शन काम । परम ज्योति सुपावन कारक आधार
 दै पुण्यबान ॥ श्री० ॥ ११ ॥ सुमति सुधारिणी कुमति

विशारिणी वाप निवारिणी जान । लक्ष चोरासी
 टालूनी फेरे देई पद निर्वाण ॥ श्री० ॥२॥ बुडवा-
 यासी अज्ञान कारण तार्या आसी ज्ञान । प्राण परा-
 याचे नको घेऊं करुणा मनामधि आन ॥ श्री० ॥३॥
 जिनवाणी उर आनी प्राणी अधम गये शिव धान ।
 चम्पक मुनि जिनवाणी महिमा होतन एक जवान
 ॥ श्री० ॥ ४ ॥



४३. चौवीस जिन स्तवन ।

राग—प्रभाती ।

प्रात ऊठ चौवीस जिनन्द को स्मरण कीजे
 भाव धरी ॥ प्रात० ॥ टेर ॥ रिखव अजित सम्भव
 अभिनन्दन, सुमति कुमति सब दूर हरी । पद्म
 सुपास चन्दा प्रभु ध्यावो, पुष्पदन्त हरया कर्म
 श्री ॥ प्रा० ॥१॥ शीतल जिन श्रेयास वासुपूज्य,
 विमल विमल बुद्धि देत खरी । अनंत धर्म श्री
 शांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा०

॥८॥ कुम्भु अरह महिल मुनि सुमतजी, नमी मेम
 शिवरमणी यरी । पार्वनाथ धर्यमान जिनेश्वर,
 केवल लक्षो भय ओघ हरी ॥ प्रा० । ३॥ तुम सम
 नहीं कोई तारक वृजो, हममिदखे मन मांदि यरी ।
 तिलोकरिख कहे जिन तिम करिने मुक्ति यो
 प्रभु मेहरकरी ॥ प्रा० । १४॥



४४ नेमीनाथ स्तवन ।

७७-वगती ।

सांवरियो साहिब है म्हारो म्हे बाहर प्रभु
 तेरो । मयसागर में वह विष मटक्यो, अब तो
 करो निबेरो ॥ छंद ॥ अष्ट करम मुअ निपट प्रकायो
 दियो म्हरक धन बेरो । साहिब महोर नजर कर
 मोपर, (बेगो व्यास तिखेते ॥ सां० ॥ १॥ बोपती
 की पौंती गालो शालो भय भय केरो । सेवग ने
 साहिब अब बीजे, मुगल महिल में बेरो ॥ सां० ॥
 २॥ मोतो हंसराज न समझे बैत है करम बेरो ।

अविचल सुख चाह हुवे तो ले सरणो जिनकेरो
 ॥ सां० ॥ ३ ॥ जग में नाम चिंतामणि तेरो सो में
 काड्यो हेरो । रत्नचन्द कहे निन उठ जिन को
 लीजे नाम सवेरो ॥ सां० ॥ ४ ॥



४५. नेमीनाथ स्तवन ।

तर्ज—उपरोक्त ।

सांवरियो साहिव सुखदायक सुनजो अरज
 हमारी । जग सागर काराग्रह सरखो तिन सेती
 मोय तारी ॥ टेरा ॥ जनमत नयन कमल दल निरखी
 हरखी है महतारी । पिता राम सुख पायो प्रभु
 को सूरत मोहनगारी ॥ सां० ॥ १ ॥ जोवन वय में
 जोर दिखायो किस्मय हुए मुरारी । सब जन मिल
 के व्याह रचावो मोह दशा मन धारी ॥ सां० ॥ २ ॥
 व्याह विरध में जीव छुड़ाये तारी राजुल नारी ।
 सहस पुरषसुं संजम लेकर आप रहें ब्रह्मचारी ॥
 सां० ॥ ३ ॥ प्रजन साम्बकंवर को तारी आठ कृष्ण

की मारी । धन धन मेमजिनेम्बर साद्विष पांडव
 पांच उधारी ॥ सां० ॥ ४ ॥ सहस्र अनेक पुंनर
 निस्तारे पहुँचा मुक्त मजारी । रत्नचम्पू कहे भव
 नो आई आज हमारी घारी ॥ सां० ॥ ५ ॥



४६ महावीर स्तयन ।

७८-४६मी० ।

महावीर स्वामी मे समई पलक पलक मे घड़ी
 घड़ी । वर्जमान स्वामी मे समई पलक पलक मे
 घड़ी घड़ी ॥ देव ॥ सिद्धार्थ घर सुन्दर मारी
 निशला रूपे जाक सिरी । इश्वरी स्वर्ग घड़ी खरि
 आय । स्वर्गानर से कबर घड़ी ॥ म० ॥ १ ॥ मधु मास
 शुक्ल पक्ष तसस रजनी पूर्व अर्ध खरी । अतम यषो
 मुरपनि मिज कर में ले चास्या प्रभु मेरुगिरी ॥
 म ॥ २ ॥ भव सुर इन्द्र अप्सरा मिल के मोहव
 विनती सकल करी । बरष अशुभे मेरु कंषामो
 महावीर तब नाम घरी ॥ म० ॥ ३ ॥ मर जोधम

सुन्दर सुख भोगव परिहरी प्रभु राजसिरी । संजम
ले तप कठण करम हण केवल ले शिवनारवरी ॥
म०॥४॥ महावीर मन माहें जपतां भांजत अलगा
करम श्री । कुशलचन्द्र कहें शिवपुर दीजे जन्म
मरण दुख दूर हरी ॥ म० ॥५॥

४७. उपदेशी पद ।

वर्ण-उपरोक्त ।

रे चेतन पोते तूं पापी परना छिद्र चितारे ।
निर्मल होय करम करदम से निज गुण अंबु नितारे
॥टेर॥ सम्यक् दृष्टि नाम धरावे सेवे पाप अठारे ।
नरक निगोद थकी किम छूटे जो पर हियो न ठारे
॥रे०॥१॥ जिम तिम करने शाभा आपणी या जग
मांही दिखारे । प्रकट कहाय धर्म को धोरी अंतर
भर्यो विकारे ॥ रे० ॥२॥ परमेश्वर साखी घट घट
को जाकी शरम न धारे । पचसी कुंभी पाक नरक
में अन्तर छल न निवारे ॥ रे० ॥३॥ परनिंदा अग
पिंड भरीजे आगम साख संभारे । विनयचन्द्र कर
आत्म निन्दा भव भव दुकृत टारे । रे० ॥४॥

४८ श्री धीर जिन स्तुति ।

सुरति मन मोहम कचन कोमल काय, सि-
 खारण नन्दन विशला देवी माय ॥ सुग मायक
 लक्ष्मन भान हाथ ननु मान दिन दिन सुखदायक
 स्यामी श्री बर्द्धमान ॥१॥ सुरमर वर किञ्चर धरित
 पद्म अरविद कामित भर पूरण अमिनध सुरतक
 कम्प ॥ मन्त्रियस्य मे नारे प्रयहस्यम विस वीथ,
 चौबीस जिनधर प्रहर्मु विमया बीस ॥ २ ॥ अरये
 करि आगम माक्या श्री मगधस्त, गहधर ते गुंघ्या
 गुहनिधि ज्ञान अनेन । सुरगुह विष मदिमा कह
 व लके एकांत स्वमर्द सुखदायक मन सुष सुष
 सिद्धान्न ॥३॥ सिद्धायिका देवी करे विघन विशेष
 खट्ट मंढट खरे पूरे आस अशेष । अहनिती कर
 आर्दी मेवे सुजनर हम्ब जये गुहगण हम भीजिन
 लाभ सुग्नि ॥ ४ ॥



४६. विमलनाथजी का स्तवन ।

घर आंगण सुरतरुफलयोजी, कौन कनक फल
 खाय । गयवर चांभ्यो वारणोंजी, खर किम आवे
 दाय ॥१॥ विमल जिन म्हारी तुमसुंजी प्रेम, सुर
 सकलंकितशुं मिल्याजी, हियड़े ही से केम ॥वि०
 ॥ २ ॥ मन गमता मेवालहीजी, कुण खड खावा
 जाय । आदर साहिव नो लहीजी, कुण लये रांक-
 मनाथ ॥वि०॥३॥ रत्न छते कुण काचनेंजी, अलवे
 पसारे हाथ । कुण सुरतरु थी ऊठनेंजी, बावल
 घाले वाथ ॥ वि०॥४॥ देव अवर जो हु कर्छुंजी, तो
 प्रभु तुमची आण । श्री जिनराज भवो भवेंजी, तुं
 हिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥५॥

५०. चवदह स्वप्न ।

दशवाँ स्वर्ग थकी चव्याजी चौवीसवाँ जिनराय ।
 चवदह सुपना देखियाजी त्रिशला देवी माय ॥
 जिनन्द माय दीठा सुपना सार ॥ टेर ॥

पहिले गयबर देखिगोजी सुखा वरुण प्रचण्ड ।
 वृद्धे वृषभ देखियोजी धोरी धोखो सरह ॥त्रि०
 तीजे निह सुकण्ठयोजी करतो मुख बगाव ।
 जीये लक्ष्मी देवताजी कर रक्षा नील विभास ॥त्रि०
 पक्ष बाण फुलां नथीजी मोरी देखी सुवास ।
 लहं चन्द्र उजासियोजी अमीय मरे आकाश ॥त्रि०
 दिनकर ऊगो लजसुजी किरण मजक ममास ।
 करकती देखी घटाजी ऊंची अति अक्षयन ॥त्रि०
 कुंभ कलश रतना अरुणजी उदक मर्षो सुविशाल ।
 कमल फुलां को हांकसाजी मयबेँ स्वप्न रसास ॥त्रि०
 पक्ष मरावर अस मर्षाजी कमला करी सुसोमास ।
 वय देखी रंग में रमेजी देख्या आवे दास ॥त्रि०
 सीर समुद्र चारों दिशाजी जेना मीठो नीर ।
 दूध बसो पायी मर्षोजी कठिन पाषणो सीर ॥त्रि०
 मोखा केरा भुरकाजी देख्या देख विमान ।
 दम देखी कौतुक करेजी आवतां असमान ॥त्रि०
 रत्ना की राशी भिरमलजी देख्या स्वप्न वहार ।
 स्वप्ना देख्यो तेरमोजी दिपके हर्ष अपार ॥त्रि०

ज्वाला देखी दीपतीजी अगन शिखा बहु तेज ।
 इतने जाग्या पद्मनीजी धरता स्वप्ना से हेज ॥जि०
 गजगति चाल्या मलकताजी आया राजन् पास ।
 भद्रासन आसन दियोजी राय पूछे हुल्लास ॥जि०
 कहो किन कारण आवियाजी कहो थारा मननी बात ।
 चवदे स्वप्ना देखिगजी अर्थ कहो साक्षात् ॥जि०
 स्वप्ना सुनीराय हर्षियाजी कीनो स्वप्न विचार ।
 तीर्थकर चक्रवर्त हुसीजी तीन लोक आधार ॥जि०
 प्रभाते पंडित तेडियाजी कीनो स्वप्न विचार ।
 तीर्थङ्कर चक्रवर्ती हुसीजी तीन लोक करतार ॥जि०
 पंडित ने बहु धन दियोजी वस्त्र ने फूल माल ।
 गर्मवास पूरा थया जद जनम्या पुण्यवंत वाल ॥जि०
 चोसठ इन्द्र आवियाजी छप्पन दिशा कवार ।
 अशुचि कर्म निवारनेजी गावे मंगलाचार ॥जि०
 प्रतिविम्ब घर में धर्योजी माताजी ने विश्वास ।
 शक्र इन्द्र लीधा हाथ मेंजी पञ्च रूप प्रकाश ॥जि०
 मेरु शिखर न्हवरावियाजी तेहनो बहु विस्तार ।
 इन्द्रादिक सुर नाचियाजी नाची अपसरा नार ॥जि०

अटार्ह मङ्गोत्तम सुखकरेखी दीप जम्हीअर आय ।
 गुण गाथे प्रभुखी लखाखी दिखे हरण न माय ॥ जि०
 परमात् सुपमा ओ मयेखी मन्तता आमन्ध पाय ।
 गेग शोक दूरा रखेखी अशुभ कर्म सब आय ॥ जि०

५१ वीर प्रभु के दश स्वप्न ।

शासन नायक समरियेरे लाल मगधस्त भी
 बर्द्धमान हो भविष्यजन । राम खोड़ीने संजम
 आदपरि लाल खोवीभमा अगमाख हो भविजन
 ५१ ॥ दश सुपना वीरखी देखियारे लाल ॥ डेर ॥
 पहले पिशाच पक्षाधियोरे लाल जीत्या मोहयी
 कृष्ट हो भ० । कर्मा मे रात्र रूढ कर, दियोरे लाल
 कर्म किया अडभूर हो भ० ॥ २ ॥ सफेद कायल
 ऐसी देखियारे लाल स्वप्ने कूसरे जान हो, भ० ।
 रान दिवस धर्म व्यापतारे लाल ध्यायो शुक्ल
 प्यान हो भ० ॥ ३ ॥ विविध प्रकारता ऐखियारे
 लाल स्वप्ने तीमरे जान हो भ० । प्रभुखी देखे

देशनारे लाल, समझावे हित आन हो, भ० ॥४॥
 दोय माला रतना तणीरे लाल, स्वप्ने चोथे वि-
 लोय हो, भ० । साधु वलि आवक तणारे लाल,
 धर्म प्ररूप्या दोय हो, भ० ॥५॥ उज्जवल वरण गाया
 तणारे लाल स्वप्ने पांच में धार हो, भ० । साधु
 साधवी आवक आविकारे लाल, तीरथ थाप्या
 चार हो, भ० ॥६॥ पद्म सरोवर कमला छादयोरे
 लाल, सपनो छटो अखेव हो, भ० । चारों जातरा
 देवी देवतारे लाल, सारे प्रभुजीरी सेव हो, भ० ।
 ॥ ७ ॥ भुजाकरी समुद्र तिर गया रे लाल, सातमें
 सपने विचार हो, भ० । संसार समुद्र तिर गया रे
 लाल, उतर्या पहले पार हो, भ० ॥८॥ उगतो सूरज
 दीठो आटमेरे, ऊजलो अति असमान हो, भ० ।
 प्रभुजी ने आई ऊपनोरे लाल, निर्मल केवल ज्ञान हो,
 भ० ॥९॥ मानुखोत्तर आतां विंटियोरे लाल, स्वप्ने
 नवमें जान हो, भ० । प्रभुजीरो तीन लोक मेरे लाल,
 जस फैल्यो असमान हो, भ० ॥१०॥ मेरु पर्वतनी
 चूलिकारे लाल, तापे सिंहासन ठाय हो, भ० ।

समोसरण में विराजियारे सात, वसुधा सुपना माय
हो म० ॥११॥ मुगति मंदिर में विराजियारे सात
मगवन्त भी पर्यमान हो, म० । रिद्धराधन्यजी
हम कहे रे सात, सुख मगवती प्रमान हो, म० ॥१२॥



५२ शान्तिनाथजी को स्तवन ।

प्रातः ठठ भी शान्ति जियाव को स्मरण कीजे
झूँझी घड़ी । लंकट कोट कटे मव लंघित को
ध्याये मत भाष घरी । प्रातः ० ॥ १ ॥ अनमत पाय
जगत दुःख ठछीयो, गलीयो रोग असाध्य मरी ।
घटे घट अन्तर आत्मन्व प्रगटियो हस्तस्यो द्विषयो
हर्षधरी ॥ प्रातः ० ॥ २ ॥ आपव् अवतर विपन्न मय
भांजे जसे पेकत भूग हरी । एकव चित्त सु दय
दुख ध्याता मगट परिचय परम सिरी ॥ प्रातः ० ॥
॥३॥ गये विवसाय मरम के बावल परमार्थ पव
पवन करी । अवर देव परंज कुलरोये को निज

मंदिर केल फली ॥प्रात० ॥४॥ प्रभु तुम नाम जग्यो
घट अन्तर तो शुं करिये करम अरी । रतनचन्द
शीतलता व्यापी, पापी लाय कषाय टली ॥ प्रात०
॥ ५ ॥



५३. नेमनाथ स्तवन ।

तर्ज=उपरोक्त ।

श्री नेमीश्वर साहिबा प्रभु थे मुज सांचा देव ।
अवर देव सहु कारमा ज्यांरी सुपने न वंछू सेव ॥
१॥ जिनेश्वर नाथ हमारो रे, प्रभु मोने लागे प्या-
रोरे ॥ टेर ॥ इण भव कीधी प्रीतड़ी प्रभु लीजो
आप निभाय । करुणासागर साहिबा थारा नाम
थी आनन्द थाय ॥ जि० ॥ २ ॥ वैरागियां शिर सेहरो
प्रभु यादव कुल सिनगार । भर जोवन में जुगत से
प्रभु त्यागी राजुलनार ॥ जि० ॥ ३ ॥ सूरत सुन्दर
सोमती प्रभु दीठां आवे दाय । सेव कियां साहिव
तणी म्हारे कमी रही नहीं काय ॥ जि० ॥ ४ ॥ वाणि

ओजन घरपती प्रभु, सुन न सके कोई कठ । मुख
हीनो बहुरीशे प्रभु थारी किये न आवे पृष्ठ ।
जि० ०१॥ काथो सरखो जगत को प्रभु ते में दोनो
कोइ । सांथा सरखो थारो दियो अब पूरे मनको
कोइ ॥ जि० ०२॥ जानी मुख कह्यो नहीं प्रभु कहता
मास उमास । रिख चौपमहारी बिगती अब
पूरे हमारी भाग ॥ जि० ०३॥ समत अठारे बाबने
प्रभु पीराइ सेर बीमास । काती सुइ पञ्चम दिने
प्रभु यह कीपी अरबाम ॥ जि० ०४॥

४४ अष्टमदेव स्तवन ।

४४-अष्टम ।

जिअम्ब मित सरखो थारोरे मोहू मवपार
उतारोरे ॥ टग ॥ पूरव मत के माथने प्रभु बहुरी
पक्षी पाथ । मुख मागी संसारना पक्षे संजमरी
रिख लाथ ॥ जि० ॥ १॥ तपस्या कीपी छाहरी प्रभु
संजम पारी सुमान । अस्त समे अचरित करी
पहुंचा नारथ सिख विमान ॥ जि० ॥ २ ॥ तेतीस

सागर आऊखो पाया, भोगविया अति सुख ।
तिहांथी चविने ऊपना माता मरुदेवीनी कूँख ॥
जि०॥३॥ लख चोरासी पूर्व को आयू पाया नाभी-
नन्द । मोच्छव करवा कारणे काँई आया सुरनर
वृन्द ॥ जि० ॥४॥ बीस लाख पूर्व लगे प्रभु कंवर
पदे रह्या आप । त्रेसठ पूर्व राज भोगवी पछे त्या-
ग्या अठारा पाप ॥ जि०॥५॥ चार सेंस संग संजम
लियो प्रभु ध्यायो निर्मल ध्यान । हजार वर्ष छुन्नस्त
रह्या पीछे ऊपनो केवल ज्ञान ॥ जि० ॥ ६ ॥ लाख
पूरव दीक्षा पालने प्रभु दस सेंस मुनि परिवार ।
अनशन करे छे दिन में प्रभु कर गया खेवापार ॥
जि०॥७॥ अनन्त सुखा में विराजिया प्रभु तोड्या
आठूं कर्म । इह भव जीव तारण भणी ज्यारा प्रकट
कियो जिन धर्म ॥ जि० ॥ ८ ॥ काल अनन्त मेला
रह्या म्हारी पूरव प्रीत निभाव । मनरा मनोरथ
पूरवो म्हांने आपरी ठौर बताव ॥ जि० ॥९॥ खूब-
चन्द कहे आपको म्हांने पूरो है विश्वास । गुण
गाया साल त्रेपने खाचरोद सैर चौमास ॥ जि०॥१०॥

५५. महावीर स्वामी का वंद्य ।

भीसिदाराय कुल भृंगार त्रिशस्तादेर्भी सुत जप
 आघार । गोमे सुवर सोवम नाम शरण तुम्हारो
 भी बर्धमान ॥१॥ तुम नामे सहिये संपदा, तुम नामे
 मन बाँधित मुदा । तुम नामे सहिये सम्मान शरण
 तुम्हारो भी बर्धमान ॥२॥ दुर्जन दुष्ट दीरी विकराह
 तुम नामे नाशे लत्काह । तुम नामे दिन२ कस्याह
 शरण तुम्हारो भी बर्धमान ॥ ३ ॥ तुम नामे नाशे
 आपदा भूत प्रेत ध्वंशर नहीं कहा । रोग शोक चिंता
 न बिजाह शरण तुम्हारो भी बर्धमान ॥४॥ महा-
 दिक पीडा नहि करे नाम तुम्हारो छे ठहरे ।
 धर्मलिह मुनिवर माव प्रघाम, शरण तुम्हारो भी
 बर्धमान ॥५॥

५६. श्रीमंदरस्वामी की स्तुति ।

त्रिभुवन साक्षि अरज सुशीले दर्शन दीजे
 राज । दर्शन दीजे मया करीये अरज सुशीले

राज ॥ १ ॥ म्हारी वीनतडी अवधारो साहिव श्री
 मंदर जिनराज ॥टेर॥ आप वसो महाविदेह क्षेत्र
 में, हूं इण भरत मम्हार । मिलणो किण विध होवे
 साहिव, यो छे सबल विचार ॥ म्हाने० ॥२॥ भरत
 विचाले पर्वत आडो नामे छे वैताड । पचीस
 जोजन ऊँचो प्रभुजी पचास जोजन विस्तार
 ॥ म्हाने० ॥ ३ ॥ गंगा सिंधु दोनुं नदियां, आडी
 छे किरतार । सेंस अट्ठावीस दूजी नदियां,
 ये बिहुँनो परिवार ॥ म्हाने० ॥४॥ तिण आगे वलि
 पर्वत आडो, चूल हेमवय नाम । एक सेंसने बा-
 घन जोजन, वारह कला अभिराम ॥ म्हाने० ॥ ५ ॥
 क्षेत्र हेमवय आडो छे प्रभू, युगल्या केरो वास ।
 इक्कीस से ने पांच जोजन पांचकला सुविलास
 ॥ म्हाने० ॥६॥ रोईता और रोईतंसा, नदियां महा-
 असराल । छप्पन सेंसवलि सामिल नदियां, आऊँ
 केम कृपाल ॥ म्हाने० ॥ ७ ॥ महाहेम वलि पर्वत
 आडो, मोटो अति विस्तार । चार सेंस दोसे दश
 जोजन, दशकला सुविचार ॥ म्हाने० ॥८॥ आठ सेंस

मे चारसे पक्षि एकबीस जोऊन तास । कला एक
 पक्षि ऊपर आभो सेन छे हरिबास ॥ म्हा० ॥ १॥
 हरिकम्ता हरिसक्षिनागमे, नदियां छे परतछ ।
 बीजी नदियां सामिह छे प्रभु सेंस बाण एकलछ
 ॥ म्हा० ॥ १०॥ विपेह पबैत आडो छे प्रभु, कोऊन
 बहु विस्तार । साके सेंस नत आठ बिपाक्षिस,
 दोय कल मनुहार ॥ म्हा० ॥ ११॥ सेन छे बलि पुग
 ह्या कैरो देबहुद इननाम । तेह विपेह पबैत पर-
 माणे पदोन्नो छे सुग लाम ॥ म्हा० ॥ १२॥ सीता
 नामे नदी बडेरी सब नदियां में छिरदार । पांच
 लाख पलि सामिह नदियां ऊपर बतीस हजार ॥
 म्हा० ॥ १३॥ लाख जोऊन मेरुपबैत नाम सुदरीन
 सार । गङ्गादस्ताधलि मारग बीच में किम आरु
 किरमार ॥ म्हा० ॥ १४॥ कच्छनगिरी थकारा पबैत
 केम उलंछा जाय । मङ्गसाक बन मारग बीच में
 लागे कम उपाय ॥ म्हा० ॥ १५॥ बन अरु पबैत
 वहना बीच में नदियां अकह आठ । किछ विच
 आरु सुगगा साक्षि मारग बिपमी आठ ॥ म्हा०

॥१६॥ दूर थकी श्रवधारो साहिव, या म्हारी श्र-
 दास । मनघांछित सुख संपतिदाता पूरो म्हारी
 आस ॥ म्हां० ॥ १७ ॥ किहां मुज दक्षिण भरत किहां
 घलि विजे पुखलावति सार । मिलवो किण विध
 होवे साहिव, यो छे सबल विचार ॥ म्हां० ॥ १८ ॥
 तुम ही साहिव तुम अलवे सार, बसिया हिरदा-
 मभार । भव दुख भंजन अलख निरजन करुणा-
 रस भंडार ॥ म्हां० ॥ १९ ॥ समत अठारे वरष
 इक्यासी पोष वदी शुभ मास । बीज ने बुधवार
 अनोपम श्री जिन वचन विलास ॥ म्हां० ॥ २० ॥
 खरतर गच्छे हरषचन्दजी, स्वरूपचन्द गुरुराय ।
 अमरचन्द कर जोड़ वीनवे, तारो गरीब निवाज
 ॥ म्हां० ॥ २१ ॥

५७. श्री मरुदेवी स्तवन ।

इण नालंदा पाडा में प्रभुजी चौदह किया चौ-
 मासाजी ॥ टेरा ॥ मगध देश के माय विराजे, सुंदर
 नगरी सोहेजी । राजगृह राजा श्रेणिकरी, देखता

मन मोहेजी ॥६०॥१६॥ आधक लोक बसे घनबन्ना,
 जिन मारगना रागीजी। घरघर मांहे सोमो रूपो,
 म्योनि जगामग बागीजी ॥ ६० ॥२॥ अङ्गुष नेसा
 जोर बिराजे हाण मोर्या नव लडियाजी। वस्तर
 पहिरे भारी मोसा नेसा एतमा जडियाजी ॥ ६० ॥
 घन घर्मी माळम्ही पाळे दोमों पात बिरेशोजी।
 फिर २ वीर आया पडु बिरिया रूपकार घड़ेरो
 रेक्योजी ॥ ६० ॥ ४ ॥ तीन पाठ राजा भेषिकण,
 समकित भारी लगताजी। जिन मारग तो नूब
 दीरापो बीर तखा बुधा मगताजी ॥६॥ ५॥ पीयर
 मांही समकित पामी खेतखा पटराजीजी। महा-
 मतीजी संजम लीघो वीर जिनम्ह यक्षाजीजी ॥
 ६० ॥६॥ समय कवगजी महा गुणवन्ता, मन्त्रीनी
 बुध मारीजी। संजम खेइने स्वर्ग पडुंखा, इमा
 एकावताजीजी ॥ ६० ॥ ७ ॥ तेबीस घेडा राजा
 भेषिकता पडुंखा चत्रुष विमानोजी। इस पोता
 वेष लोके पडुंखा खब आसी निर्धाखोजी ॥६०॥८॥
 तेबीस राणी राजा भक्षिकरी तपकर देही गासी

जी । मोटी सतियां मुगत पहुंची, काट करमनी
 जालीजी ॥ ६० ॥ ६॥ जंबू स्वामी इण नगरी हुआ,
 आठ अन्तेवर परणोजी । वाल ब्रह्मचारी भली
 विचारी, निर्मल कीधी करणीजी ॥ ६० ॥ १० ॥
 गौभद्र सेठ हुआ इन नगरी, सेठे संजम लीधो
 जी । वीर सरीखा सतगुरु मिलिया, जनम मरण
 से वीनोजी ॥ ६० ॥ ११ ॥ सालिभद्र सेठ हुआ इण
 नगरी, बलि बाणियो धनोजी । वैन सुभद्रा संजम
 लीधो, मुगत जावणरो मन्नोजी ॥ ६० ॥ १२ ॥ महा-
 सतक आवक इण गामे हुआ, आवक पड़िमा
 धारीजी । करणी करने कर्म खपाया, हुआ एका-
 घतारीजी ॥ ६० ॥ १३ ॥ सेठ सुदर्शन सेठो आवक,
 वीर वन्दन ने चाल्योजी । गेला मांही अर्जुन
 मिलियो, न रह्यो किननो पाल्योजी ॥ ६० ॥ १४ ॥
 अर्जुन माली लारे हुआ, वीर जिनन्द ने मेठ्याजी ।
 माली ने दीराई दीक्षा, दुख नगरीनो मेठ्याजी ॥
 ६० ॥ १५ ॥ मेघकवंर श्रेणिकनो बेटो, लीधो संजम
 भारीजी । व्यावच निमित्ते करदी काया, की दो

मंगारी सारोजी ॥६०॥१९॥ भेषिक राजा समकित
 धारी कीधो धर्म उद्योतोत्री । एक घर में दोष
 तीर्थकर बाहो मे बलि पोतोत्री ॥६०॥७॥ उत्तम
 पुरण कई भार्य रुपना मायक ये बलि साधोत्री ।
 भगवन्ता की सेवा कीधी पद्म मानव मय साधो
 थी ॥६०॥१८॥ साधुस्य नायक तीर्थ यात्र्या, सा-
 सता हुन पायात्री । छुप राख्यन्द् कहे केवल
 पाया मुगति महिला सिधायात्री ॥६०॥१९॥ संवत
 अठारे गुप्त बालीस नागोर सेर बोमाओत्री ।
 पूज्य जयमलजीग परसाद कीधी जोड़ हुलासो
 थी ॥ ६ ॥१०॥



५८ साधु बन्दना ।

साधुजी मे बन्दना नित नित कीजै मात
 उगते सुन्दरे माणी । बीच गति में ते महीं आवै
 पाव अरि भरपूररे माणी ॥१॥ मोटा ते पंचमहा-
 मत पावै सुः काया का प्रतिगलरे माणी । अमर
 पिछा मुनि सुकृती सेवै दोष बयोलीस अलरे

प्राणी ॥सा०॥२॥ ऋद्धि संपदा मुनि कारमी जाणी,
 दीनी संसार ने पूठरे प्राणी । ए पुरुषांगी सेवा
 करतां, आठों करम जावे दूटरे प्राणी ॥ सा०॥३॥
 एक एक मुनिवर रसना त्यागी, एक एक ज्ञान का
 भंडाररे प्राणी । एक एक मुनिवर व्यावचिया वैरागी,
 एहना गुणनो न आवे पाररे प्राणी ॥सा०॥४॥ गुण
 सत्तावीश करने दीपे, जीत्या परिग्रह बावीसरे
 प्राणी । वाचन तो अनाचारज टाले, तेहने नमावुं
 म्हारो शीपरे प्राणी ॥ सा०॥५॥ जहाज समान ते
 सन्त मुनिश्वर, भव्य जीव बैठे आयरे प्राणी । पर
 उपकारी मुनि दाम न मांगे, देवे मुगति पहुंचाय
 रे प्राणी ॥सा०॥६॥ ए शरणे प्राणी सातारे पामे,
 पावे ते लील विसालरे प्राणी । जन्म जरा और
 मरण मिटावे, आवे न फिर गर्भावासरे प्राणी ॥
 सा० ॥ ७ ॥ एक घचन जो सद्गुरु केरो, राखे
 हृदय माथरे प्राणी । नर्क निगोद में ते नहीं जावे,
 एम कहे जिनरायरे प्राणी ॥ सा०॥८॥ प्रभाते उठी
 ने उत्तम प्राणी, सुने साधारो व्याख्यानरे प्राणी ।

८ पुढपांरी सेषा करता पावे अमर विमानरे प्राणी
 ॥ सा० ॥ ६ ॥ संघत अठारे वष अकृतीसे, कुसी गाम
 बोमासरे प्राणी । मुनि आसकरणी एसी पर
 मये ॥ उत्तम साधा को दासरे प्राणी ॥ सा० ॥ १० ॥



५६. पड़ी साधु बन्धना ।

नमु अमंत घोबीशी कृपमादिक महावीर ।
 आर्य क्षेत्रमा घासी घर्म की तीर ॥ १ ॥ महा अटुल
 बलीनर शूर वीर ने वीर । तीर्थ प्रवर्तावी पहों
 क्या भवसल तीर ॥ २ ॥ श्री सीमंदर प्रमुख अधम्य
 तीर्थकर भीस । वे अझाई द्वीपमा अथबन्धा सम
 हीश ॥ ३ ॥ एक सो न सिद्धर अकृष्ण परै अगीश ।
 चम्य मोटा प्रभुजी जेहने नमालु मारो गीश ॥ ४ ॥
 कैबली दोष कोडी अकृष्ण नव करोड़ । मुनि दोष
 सहस्र कोडी अकृष्ण नव सहस्र करोड़ ॥ ५ ॥
 विचरे विवेक में मोटा तपस्वी धोर । माने करी
 बन्धु, दासे भवनी कोर ॥ ६ ॥ घोबीये अिनमा,

सघला ए गणधार । चउदेसे ने वावन, ते प्रणमुं
 सुखकार ॥७॥ जिन शासन नायक, धन्य श्री वीर
 जिनन्द । गौतमादिक गणधर, वर्त्ताव्यो आनन्द
 ॥८॥ श्री ऋषभदेवना, भरतादिक सोपूत । वैराग्य
 मन आणी, संयम लियो अद्भूत ॥९॥ केवल उपा-
 ज्यो, करी करणी करतूत । जिनमत दिपावी,
 सघला मोक्ष पहुंत ॥ १० ॥ श्री भरतेश्वरना, हुवा
 पाटोघर आठ । आदित्य जशादिक, पहुँत्या, शिव-
 पुर वाट ॥ ११ ॥ श्री जिन अन्तरना, हुवा पाट
 असंख्य । मुनि मुक्ति पहुँत्या, टाली कर्म नो
 वंक ॥१२॥ धन कम्पिल मुनिवर, नेमि नमुं अण-
 गार । जेणे तत्क्षण त्यागो, सहस्र रमणी परिवार
 ॥१३॥ मुनि हरिकेशी वली, चित्त मुनिश्वर सार ।
 शुद्ध संयम पाली, पाम्या भवनो पार ॥१४॥ वली
 ईक्षुकार राजा घर कमलावती नार । भगूने जस्सा
 तेहना दोय कुमार ॥१५॥ छये छत्ति ऋद्धि छांडी,
 लीधो संयम भार । इण अल्प काल में, पाम्या
 मोक्ष द्वार ॥१६॥ वली संयति राजा, हिरण्य अहिदे

आय। मुनिघर गर्जभासी आय्यों मारग ठाय ॥ १७ ॥
 धारिय लहमे मेठया गुरुमा पाय । खरी राम
 शूपीभर खर्चाकरी बिल साय ॥ १८ ॥ बली दये
 चमचर्नी राज्य प्यणी अखि छोक । दये मुक्ति
 पहोस्या कुलमे गोमा छोक ॥ १९ ॥ इछ अयसर-
 लीमां आठ राम गया मोछ । बसमद्र मुनिभर
 गया पंच में देवलोक ॥ २० ॥ बशरण मद्रराजा,
 दीर बांछाधरी मान । पछे इन्द्र हटायो दिवो
 इकाय मे समयदान ॥ २१ ॥ करकहु प्रमुख प्यारे
 प्रत्येक दोष । मुनि मुक्ति पहोस्या जीत्या कमे
 महा जाय ॥ २२ ॥ चम्य मोटा मुनिघर भूगा पुत्र
 जमीय । मुनिघर अनाबी जीत्या राग मे रीह ॥
 २३ ॥ बली समुद्र पाल मुनि राजमती रहे मेम ।
 बेशी मे गीलम पाय्या शिबपुर सम ॥ २४ ॥ चम्य
 विजय घोव मुनि जय घोव बली जाख । श्री गगन-
 बारी पहोण्या छ निबोह ॥ २५ ॥ श्री कत्तराण्य-
 यनमां जितवर करया बल छ । सुख मनम र्या ॥
 म मां चीन्हा आग ॥ २६ ॥ बली जम्यक मय्यासी

राख्यो गौतम स्नेह । महावीर समीपे पंच महा-
 व्रत लेह ॥२७॥ तप कठिन करीने, भौंसी आपणी
 देह । गया अच्युत देव लोके चवीलेशे भवछेह ॥
 २८॥ बली ऋषभदत्त मुनि, शेठ सुदर्शन सार ।
 शिवराज ऋषीश्वर धन्य गांग्या अणुगार ॥ २९ ॥
 शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार । ए चारों
 मुनिवर पहोंच्या मोक्ष मभार ॥ ३० ॥ भगवन्तनी
 माता, धन धन सती देवा नन्दा । बली सती
 जयती, छोड़ दिया घर फन्दा ॥३१॥ सती मुक्ति
 पहोंत्या, बली ते वीरनी नन्द । महासती सुदर्शना
 घणी सतियां ना वृन्द ॥ ३२ ॥ बली कार्तिक शेठे,
 पडिमा घही शूरवीर । जीम्यो मोरा ऊपर, तापस
 बलती खीर ॥३३॥ पछी चारित्रलीधो, मन्त्री एक
 सहस्र आठवीर । मरी हुवा शकेंद्र, चवी लेसे
 भवतीर ॥३४॥ बली राय उदाई, दियो भाणेज ने
 राज । पछी चारित्र लेहने, सार्या आतम काज ॥
 ३५ ॥ गंगदत्त मुनि आनन्द, तारण तीरण री
 जहाज । कुशल मुनि रहो दियो घणा ने साज ॥

१३ ॥ धर्म्य सुमहत्तम मुनिवर सर्वानुमति धर-
 गार । आराधिक हुई मैं, गया दीयलोक मन्दार ॥
 १७० ॥ बड़ी मुक्ति आसे बड़ी सिद्धो मुनिवर सार ।
 बीजा पक्ष मुनिवर भगवतीमां अपिकार ॥ १८ ॥
 अधिक ना घेडा मोटा मुनिवर मेघ । तभी आठ
 अम्तेदरी आरयो मन लंबेग ॥ १९ ॥ बीर पे ब्रह्म
 लेदने बांधी तपनी नेग । गया विजय विमाने
 बड़ी लेसी शिव बेग ॥ ४० ॥ धर्म धावचां पुनर
 नजी बलीपी नार । तेमी साथे निकल्या, पुनर
 एक हजार ॥ ४१ ॥ सुख देव सम्पासी, एक सहस्र
 शिष्य सार । पंच शन स सेलक लीधो संयम मार
 ॥ ४२ ॥ सबे सहस्र अढाई पक्षा जीवां मे वार ।
 पुनर गिरी रूपर किषो पादोप गमन संघार ॥
 ४३ ॥ आराधिक हुई मैं कीयो बोवा पार । हुवां
 मोटा मुनिवर नाम लिया विस्तार ॥ ४४ ॥ धर्म्य
 जितगल मुनिवर गोप धमवाह साध । गया प्रथम
 दवल्लोक मोत आसे आराध ॥ ४५ ॥ श्रीमस्तिनाथ
 ना छ मित्र महाबल प्रमुख मुनिराय । सर्वे मुक्ति

सिधाया, महोटी पदवी पाय ॥ ४६ ॥ वली जित-
 शत्रु राजा सुबुद्धि नामे परधान । पोते चारित्र
 लेईने, पाम्या मोक्ष निधान ॥ ४७ ॥ धन तेतली
 मुनिवर, दियो छः काय ने अभयदान । पोदिला
 प्रतिबोध्या पाम्या केवल ज्ञान ॥ ४८ ॥ धन पांचों
 पांडव, तजी द्रौपदी नार । स्थिवरनी पासे, लीधो
 संयम भार ॥ ४९ ॥ श्री नेमिवन्दन को एहवो अभि-
 ग्रह कीध । मास मास खमण तप, शत्रुंजय जई
 सिद्ध ॥ ५० ॥ धर्म घोषतणा शिष्य, धर्म रुची अण-
 गार । किडियोंनी करुणा, आणी दयारस सार ॥
 ५१ ॥ कडुवा तुंवानो, कीधो सघलो आहार । स-
 र्वार्थ सिद्ध पहोंच्या, चवि लेशे भवपार ॥ ५२ ॥
 वली पुंडरीक राजा, कुंडरिक इगियो जाण । पोते
 चारित्र लेईने, न घाली धर्ममां हात ॥ ५३ ॥ सर्वार्थ
 सिद्ध पहोंच्या, चवी लेशे निर्वाण । श्री ज्ञाता सूत्र
 मां जिनवर कर्या चखाण ॥ ५४ ॥ गौतमादिक कुंवर
 सगा अठारे भात । सर्व अन्धक विष्णु सुत,
 धारणी ज्यांरी मात ॥ ५५ ॥ तजी आठ अन्तेउर,

काढ़ो दीक्षानी बात । बारिज खेदमे कीची मुक्ति
 मो लाय ॥२५॥ श्री अनैक सेवारिज छडी छडी-
 वर माय । बसुदेवमा मन्दन, देखी ज्यारी माय
 ॥ २७ ॥ मरिजपुर नगरी माय गहायई जाय ।
 घर छविवा सोमसी नैमिनी पाय ॥ २८ ॥ ठली
 बलीन बलीन अन्तेर मिछलिया कटकप ।
 मल कुंवर समाया मेंढा श्री नैमिनी पाय ॥ २९ ॥
 करी कठ कठ पारवा मन में वैराग्य लाय । एक
 सवार मुक्ति विवाया जाय ॥ ३० ॥ बली वाठक
 सारल दुमुक सुमुक मुनिराय । बली कुमर अन
 रहि गया मुक्ति गढ़ माय ॥ ३१ ॥ बसुदेवमा मंदन
 धन धन धन गज सुकमाय । इवे अति सुन्दर
 कल वन्त वय बाल ॥ ३२ ॥ श्री नैमि समीपे कोण्यो
 मोह अंजाल । मिछुनी पविमा तथा मसाक मरि-
 बाल ॥ ३३ ॥ देखी मोमिल कोण्यो मस्तक बांधी
 पाल । खेर ना बीर्य सिर ठेविवा कपटाल ॥ ३४ ॥
 मुनि मखर न कएही मेठी मगमी जाल । परिपद
 छडीमे मुक्ति गया तत्काल ॥ ३५ ॥ धन जाती

मयाली, उवयालादिक साध । सांव ने प्रद्युमन,
 अनारूढ़ साधु अगाध ॥६६॥ वली सच नेमी दृढ़-
 नेमी, करणी कीधी बाध । दशे मुगति पहुँच्या,
 जिनवर वचन आराध ॥६७॥ धन्य अर्जुन माली,
 कीयो कदाग्रह दूर । वीर पै वन लेइने, सत्यवादी
 हुवा शूर ॥ ६८ ॥ करी छुट छुट पारणा क्षमा करी
 भरपूर । छः मास मांही कर्म किया चकचूर ॥६९॥
 कुवर अइमुत्ते दीठा गौतम स्वाम । सुणी वीरनी
 वाणी, कीधो उत्तम काम ॥ ७० ॥ चारित्र लेइने
 पहुँच्या शिवपुर ठाम । धुर आदि मकाई, अन्त
 अलक्ष मुनि नाम ॥ ७१ ॥ वली कृष्णरायनी, अग्र
 महिषी आठ । पुत्र वधू दोई संच्या पुण्यना ठाठ
 ॥७२॥ यादव कुल सतियां, टाली दुःख की घाट ।
 पहुँची शिवपुर में ए छे सूत्र नो पाठ ॥७३॥ श्रे-
 णिकनी राण्यां, काली आदिक दश जाण । दशे
 पुत्र वियोगे, सांमली वीरनी वाण ॥ ७४ ॥ चन्दन
 वाला पै, संजम लेई हुवा जाण । तप करी देह
 भोँशी, पहुँची है निर्वाण ॥ ७५ ॥ नन्दादिक तेरे,

काट्यो देहनो कस ॥ ८६ ॥ संयम आराधी देव-
 लोकमां जाई वश । महा विदेह क्षेत्र मां मोक्ष
 जासे लेई जश ॥ ८७ ॥ बलभद्रना नंदन, निपढादिक
 हुआ वार । तजी पचास अन्तेउरी, त्याग दियो
 संसार ॥ ८८ ॥ सहनेमि समीपे, चार महाव्रत लीध
 सर्वार्थ सिद्ध पहुँच्या, दोशे विदेह में सिद्ध ॥ ८९ ॥
 धनो ने शालिमद्र, मुनीश्वरों नी जोड़ । नारीनां
 बंधन तत्क्षण नाख्या तोड़ ॥ ९० ॥ घर कुटुम्ब
 कवीलो, धन कञ्चननी कोड़ । मास मास पमण
 तप, टालेश भवनी खोड़ ॥ ९१ ॥ श्री सुधर्म स्वामी
 नां शिष्य, धन धन जम्बु स्वामी । तजी आठ अंते-
 उरी मात पिता धन घाम ॥ ९२ ॥ प्रभवादिक तारी,
 पहुँच्या शिवपुर ठाम सूत्र प्रवर्तनी, जग में
 राख्यो नाम ॥ ९३ ॥ धन ढंढण मुनिवर, कृष्णराय
 ना नन्द । शुद्ध अमिग्रह पाली, टाल दियो भव-
 फन्द ॥ ९४ ॥ वली खन्धक ऋषि की, देह उतारी
 खाल । परीपह सही ने भव फेरादिया टाल ॥ ९५ ॥
 वली खन्धक ऋषिना, हुवा पांच से शिष्य । घाणी

सतियां गई जमारो जीन ॥१०६॥ चोवीस जिनना
 साधु साध्वी सार । गया मोक्ष देवलोके हृदये
 राखो धार ॥१०७॥ अठई दीपमां, गरडा तपस्वी
 बाल । शुद्ध पञ्च महावन धारी, नमो नमो त्रिकाल
 ॥ १०८ ॥ इण साधु सतियोंना लीजे नित्य प्रति
 नाम । शुद्ध मन से ध्यावो, एह तरण नो ठाम ॥
 ॥१०९॥ इन साधु सतियों ले, राखो उज्जल भाव ।
 इम कहे ऋषि जमलजी ए हीज तरणना दाव ॥
 संवत अठारे वरस सातो शिरदार । गढ़ भालोर
 मांही, ए कह्यो अधिकार ॥ १११ ॥



६०. श्री गौतम रासा ।

॥ दोहा ॥

गुण गाऊँ गौतम तणा, लब्धि तणा भंडार ।
 यड़ा शिष्य भगवन्तरा, जाने सब संसार ॥ १ ॥
 प्रतिबुझया प्रभुजी कने, गौतम गणधर स्वाम ।
 संजम पाली सिध हुआ लीजे नित प्रति नाम ॥ २ ॥

सेवा कीधी दिनने रातजी, पूछा कीधी जोड़ी दोई
 हाथजी, जांरो कह्यो कठालग जातजी, ज्यारे वीर
 दियो माथे हाथजी ॥ श्री गौतम० ॥ ३ ॥ प्रथम संघ-
 यण संस्थान छे स्वामी गुण गहिरा भरपूर । ब्रह्म-
 चर्य में बस रह्या बलि तपस्या घोर करूजी,
 कायर पुरुष कंपी जावे दूरजी, दीपती तपस्या
 करे कर्म चूरजी, रह्या वीररे हुकम हजूरजी,
 म्हारी वन्दना उगंते सूरजी ॥ श्री गौतम० ॥ ४ ॥
 अमिग्रह कीधो आकरोजी सूत्र भगवती मांय ।
 चार ज्ञान चवदे पूरव भण्या बलि तेजू लेश्या
 पिएड मायजी । दपटी राखी क्षम्यां मन मायजी,
 दियो ध्यानसु चित्त लगायजी, ऊँकड़ बठा सीस
 नमायजी वीर से अलगा न नेइ । थायजी जारी
 करणी में कमियन कांयजी ॥ श्री गौतम० ॥ ५ ॥
 पूछ्या जद कीधी घणीजी आणी मन आनंद,
 श्रद्धा में संशय ऊपनो उपनो कौतुहल उछरंगजी,
 घांदे श्री वीर जिनन्दजी, पूछ्या देश प्रदेशनां
 स्कन्दजी, अनन्त ज्ञानी त्रिशलाना नन्दजी, मेल

दिया सूत्र संघो संघजी जाने सेवे सुरबर हन
 जी तारा बीच विराजे चन्दजी ॥ श्री गीतम० ॥
 सूत्र मगवती में पृथ्वियाजी प्रसन्न बत्तीस हजार ।
 अन्न उपाय में पृथ्वि पाषा कीर्षी पहले पारजी
 गीतम श्रियो विरहा में पारजी अंति बुधिरा नहीं
 है पारजी पक्षा जीवां सु क्रियो उपकारजी, इस
 पुरुषापी हुं बलिहारजी ॥ श्री गीतम० ॥ ७ ॥ इन्द्र-
 मूर्ति मन चित के मने क्यों न उपजे केवल काव
 केव पाप्मा मनु देखने बुझाया भी बर्धमानजी
 मन्त्र वांछित देने वानजी गीतम ऊमा सम्मुख
 आनजी बीर दियो आदर सम्पन्नजी गीतम गुण
 एतवापी आनजी चित निर्मल ज्योति ज्योतिजी
 विनती ऊपर करते ठानजी ॥ श्री गीतम० ॥ ८ ॥ नारे
 ने म्हादे गोयमाजी अन्ता काकरी प्रीति । आये
 आपी मेला एका बलि लोक नक ईमी पीतजी ।
 मोहजी कमै ने बीजो जीतजी, केवल आजी आई
 है मीतजी एको मोह जाबहरो चित्तजी ॥ श्री
 गीतम० ॥ ९ ॥ अर के असी मन्त्र आतरे आपे दोरु

बराबर होय । वीर वचन श्रवणे करी तब हर्षित
 हिवड़ो होयजी । गुरु मोटा मिलिया मोयजी,
 म्हारे कमिय रही नहीं कोयजी, राग द्वेष खपाया
 दोयजी, मोहणी कर्म ने दीधो खोयजी ॥ श्री गौतम०
 ॥१०॥ स्वयं मुख वीर बखारियाजी गौतम ने तिरण-
 चार । चरचा वादी तूं अति घणो हेतु युक्ति
 अनेक प्रकारजी । पाखण्ड्य रो जीतण हारजी,
 बीजा साधु सहु थारी लारजी, हुआ हियड़े हरण
 अपारजी, तीर्थनाथ निकाल दियो तारजी ॥ श्री
 गौतम० ॥११॥ काति घदी अमावस्याजी मुगति गया
 वर्धमान । इन्द्र भूति ने ऊपनो तद निर्मल केवल
 क्षानजी । धर्म दिपायो नगर पुर ठामजी, सिद्ध
 कीधा आनम कामथी, रिपि रायचन्द किया गुण
 ग्रामजी, धन २ गौतम स्वामजी ॥ श्री गौतम० ॥१२॥
 प्रसाद पूज्य जयमलजी तणोजी यह कीधो अ-
 भ्यास । समत अठारे चोतीस में नवमी शुद्ध
 भादव मासजी । यों कीधो गौतमरो रासजी,
 सुरया होवे जीव हुल्लासजी, जीव पामें अविचल

सुमेरुगिरि पै इन्द्र चौसठ मिल महोत्सव कीनो ।
 अनन्त बली अरिहन्त वीर प्रभु नामज दीनो ॥
 वरप बहुत्तरनो आउखो पाया सुखकारी ।
 तीस घरप प्रभु कंवर पदे रह्या अभिग्रह धारी ॥
 ज्यांरी मात पिता सुरगति लयाए पीछे लीनो-

संजम भार ।

तपस्या कीधी निर्मली साढ़ी वारे वरप मभार ॥३॥

नव चौमासी तप कियो एक कियो छमासी ।
 पांच दिन ऊणा अभिग्रह छमास विमासी ॥
 एक २ मासी तप कियो प्रभु द्वादश विरिया ।
 बहत्तर पक्ष दो दो मास छ विरिया करिया ॥
 दोय अढ़ाई तीन दो ए डेढ २ मासी दोय ।
 भद्र महाभद्र शिवभद्र तप तप्या इम सोला दिन दोय ४
 भिक्षुनी पडिमा अष्ट भगतनी द्वादश कीनी ।
 दोसे ने गुणतीस छटम तप गिनती लीनी ॥
 ग्यारह वर्ष छे मास पचीस दिन तपस्या केरा ।
 ग्यारह मास उगणीस दिवस पारणा भलेरा ॥

इष्टविषय स्थामीजी तपस्विभ्योऽपि पक्षे उपमो केवलज्ञान
 तीस पर्य ऊष्ण विचरिया ते प्रथमं वर्षमान ॥२४॥
 प्रथम अस्थि कृजो चम्पापिष्ट चम्पा दोष कहिये ।
 विशाल वासियो गांव बेहू मिल ब्राह्मण कहिये ॥
 वतुर्दश सालम्बा पाहे से मिथिला कहिये ।
 मदिनपुर में दोष सब मिल अकृतीस कहिये ॥
 एक आर्यवी एक मायतवी एक अनार्य आर्य ।
 चरम चौमामो पाबापुरी अठे पड़ुवा निरवाह ॥२५॥
 मुनिवर बडदा सैंस सैंस कृतीस आर्य का ।
 एक सप्त गुणमठ सैंस आर्यक तीन लाख भाषिका ॥
 अधिक अनार्य सैंस ग्यारे गणधरनी भाषा ।
 गौतम स्वामी बड़ा शिष्य सवी बन्धन बाह्य ॥
 ग्यारे केवलज्ञानी सात सोए प्रमु पड़ुवा निरवाह ।
 शासन घरने स्वामिनो इष्टविषय सैंस वर्ष प्रमाण ॥२६॥
 पूर्य भारी तीन सो तेराह सो अक्षयि बानी ।
 मन पर्यब पाकमी ज्ञान सातमी केवल बानी ॥
 बेक्रियकविषमा धार सातली मुनिवर कहिये ।
 बारी बार सी ज्ञान भिन्न भिन्न अर्थ कहिये ॥

एकाएक संजम लियोए एकाएक निरवारण ।
 चौसठ वर्ष लग चालियो दर्शन केवल ज्ञान ॥८॥
 बारह नर बल वृषभ वृषभ दश एक हयवर ।
 बारह हय इक महिष महिष पांचसौ इक गयवर ॥
 पांचसौ गज हरि एक सेंस दो हरि अप्रापद ।
 दशलाख बलदेव दोय वासुदेव दो चक्रिपद ॥
 क्रोड़ चक्रि इक सुर गिणाए क्रोड़ सुरा इक इन्द ।
 इन्द्र अनन्ता नहिं नमें चटि आंगुली अग्रजिनंद ॥९॥
 आप तणा प्रभु गुण अनन्त को पारन पावे ।
 लब्धि प्रभावे क्रोड़ काय शिर क्रोड़ बनावे ॥
 शिर शिर क्रोड़ा क्रोड़ वदन मुख क्रोड़ सुवानी ।
 जिह्वा जिह्वा से क्रोड़ क्रोड़ गुण करे गुजानी ॥
 क्रोड़ा क्रोड़ सागर लगे करे ज्ञान गुण सार ।
 आप तणा प्रभु गुण अनन्त कहतां आवे न पार ॥१०॥
 चवदह राजू लोक भरे वालू का कणिया ।
 सर्व जीव की रोम राय नहिं जावे गिणिया ॥
 इक इक वालू गुण करे गुण अनन्त अनन्ता ।
 पूज्य प्रशादे ऋषि लालचन्द कहे नहिं आवे अता ॥

संवत् शठारह वासन्त ष मास मगसिर सं० ।
 स्वामपुरे शुष्क गाबिया घम्प भी धीर खिनर ॥१॥



६२ मोक्ष स्थान वर्णन ।

शिवपुर नगर छुहामखो ॥ ६२ ॥ गौतम स्वामी
 पूसाकरी धिनयकरी शीश नमाय प्रमुखी । अवि-
 बल स्थानक में सुग्यो कृपाकर मोक्ष बताय, प्रमु-
 खी ॥ शि० ॥१॥ आठ कर्म अज्ञाना करपा, छास्या
 आनम काज प्रमुखी । कूठपा तसारसा दुख धरि,
 रखा छे किय ठाम प्रमुखी ॥ शि० ॥२॥ वीर कहे
 ऊपर्य लोक में मुक्ति शिलातिथ अम हो गौतम ।
 हयगै झाईन ऊपरे तिथरा छे वाच नाम हो, गौ-
 तम ॥ शि० ॥३॥ जाज पैतालीय जोअन लाबी नै
 पहली बास हो गौतम । आठ पोअन आड़ी भीष
 में छरके माखी पंखसुं जाय हो गौतम ॥ शि० ॥
 ४॥ उअधन हार मोछी नखो गो वृष, गल वलाय
 हो गौतम । तिथ तुं अचिकी ऊयली उरुद पुन

ने संठाण हो गौतम ॥ शि० ॥ ५ ॥ अर्जुन सोना में
 दीपती, घटारी, मठारी जाण हो, गौतम । स्फटिक
 विचाले निर्मली, सुहांली अधिक घखाण हो, गौ-
 तम ॥ शि० ॥ ६ ॥ शिला उल्लंघन ऊंचा गया, अधर
 रह्या सिद्धराज हो, गौतम । अलोकसुं जाई अड्या
 साख्या छे आतम काज हो, गौतम ॥ शि० ॥ ७ ॥
 जठे जन्म नहीं मरणो नहीं, नही जरा, नहीं रोग
 हो, गौतम । वैरी नहीं, मन्त्री नहीं, नहीं संयोग,
 वियोग हो, गौतम ॥ शि० ॥ ८ ॥ भूख नहीं तिरषा
 नहीं, नहीं हर्ष नहीं शोग हो, गौतम । कर्म नहीं
 काया नहीं, नहीं विषय रस भोग हो, गौतम ॥
 शि० ॥ ९ ॥ शब्द रूप गंध रस नहीं, नहीं स्पर्श,
 नहीं वेद हो, गौतम । बोले नहीं चाले नहीं, मूल
 न कोई खेद हो, गौतम ॥ शि० ॥ १० ॥ गाम नगर
 तिहां नहीं, नहीं वस्ती नाहीं उजाड़ हो, गौतम ।
 काल तिहां वरते नहीं, रात दिवस तिथि वार हो
 गौतम ॥ शि० ॥ ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नहीं
 ठाकर नहीं दास हो, गौतम । मुगति में गुरु चेला

नहीं नहीं लोक पढ़ाई नास हो गीतम ॥ शि० ॥
 १२॥ अमन्त सुखा में भूली रक्षा अरुणी ज्योति
 प्रकाश हो गीतम । सधलाय सुख शास्पता, स-
 धला अविचल पास हो गीतम ॥ शि० ॥ १३॥ अनन्ता
 सिद्ध सुगत गया बल अमन्ता जाय हो गीतम ।
 आगे जागे रुन्धे नहीं ज्योत में ज्योत समाय हो
 गीतम ॥ शि० ॥ १४ ॥ केवल धान कर सहित से
 केवल दर्शन पास हो गीतम । सायक समकित
 दीपता कदेयन होय अदाम हो गीतम ॥ शि० ॥
 १५॥ सिद्ध स्वरूप कोई मोक्षके आये मन वैराग
 हा गीतम । शिष्यमणी बेगी बरे, नय कहे सुख
 अयाग हो गीतम । शि० ॥ १६॥



६६ धला मुनि स्तवन ।

तत्त्व-भाष्यणी ।

अधिक पूछे बीरजी माखे अचम मुनिहर
 साय । राज में राज हैं तरतम आगे अधिक धामो

अनगारा ॥ १ ॥ धन्ना मुनि धन मानव भव पायो,
 श्रीमुख यूँ फरमायो ॥ ढेर ॥ श्रेणिक राजा आत्म-
 हित काजा, धन्नामुनि पे आवे । शीश नमावें मुख
 गुण गावें, जोतां तृप्ति न थावे ॥ धन्ना० ॥२॥ नार
 बत्तीसी अप्सरा सरस्त्री, धन्न बत्तीसे कोड़ो ।
 संसार ने पूठ दीवी मुनिवरजी, शिवपुर सामा
 दोड़ो ॥धन्ना०॥३॥ निरंतर तप बेले बेले, पारणो
 उज्झित आहारो । समण वणि मग कोई न वन्दे
 किम तुम करठ उतागो ॥ धन्ना० ॥४॥ बार ईकीस
 जल माही धोई, ते अन्न खाई जल पीयो । ऐसो
 तप सुणी उर कंपे, धन धन थारो जीयो ॥धन्ना०॥
 ५॥ चउदह हजार मुनीश्वर मांही, आपने वीर
 बखारया । दर्शन आपको पुण्यवन्त पावे, मैं पिण
 आज पिछारया ॥धन्ना०॥६॥ नव मासे सुघ संजम
 पाली, सर्वार्थ सिद्ध जावे । रामचन्द्र कहे ऐसे
 मुनिजी, क्यों नहीं मुक्ति सिधावे ॥ धन्ना० ॥७॥



६४ श्री विजयकण्ठ और विजयाकंधारीकी कहानी होती ।

श्री विजयकण्ठ और विजयाकंधारी भारी ।
 मर जोरन में पाखो शील के समता भारी ॥देख
 ये कण्ठ देश और कंधारी मामा मगरी ।
 जहाँ बाग बगीचा शहर के सोना खगरी ॥
 ये घड़ा मामा सेठ दास हैं बबरी ।
 श्री विजयकण्ठ के चर्म करणरी लगरी ॥
 पुण्यबन्त मिली है विजयाकंधारी भारी ॥मर०॥१॥
 खोले करके सिङ्गार पिङ्ग ये जाती ।
 गहणा पहिया है लूण धूँधर घमकाती ॥
 वाक्त्र से सुन्दर मम धरी बतलाती ।
 कामी की जाती घरर घरर धरती ॥
 दिन करके बोस विजयकण्ठ सुन प्यारी ॥म०॥२॥
 ज्यों मदन दीपन हो ऐसी बातें करती ।
 मे रुण्ण पक्ष का त्याग लिया मुनिधर धी ॥
 यों सुन के सुन्दर बोली मयमा मरती ।

मै शुक्ल पद्म का त्याग लिया नहीं डरती ॥
 करे वैन भाई ज्यों मिल वातां इकतारी ॥भ०॥३॥
 श्री विमल केवली वस्त्रान इनका कीधा ।
 जिनदास सुश्रावक सुनकर आया सीधा ॥
 कर भाव मुनि का दर्शन हिरदा भीजा ।
 अरु खूब हुवा मन खुश के अमृत पीधा ॥
 तब मात पिता ने सुनी बात हुई जहारी ॥भ०॥४॥
 यों सकल जब जाण्यो कंवर कंवरी को ।
 घर प्रच्छन्न पणे में शील पाल रजनी को ॥
 जाने जह्नु धंद सब फंद जान सब फीको ।
 ले करके आज्ञा पंथ लियो मुनिजी को ॥
 जाने शुद्ध पाल के शील आनमातारी ॥भ०॥५॥

६५. देवकी राणी का भ्रूण ।

तर्ज—धीरा चालो वीरज का वासी० ।

हम भूरे देवकी राणी, यातो पुत्र विना विल-
 खाणीरे ॥ टेर ॥ म्हेँ तो सातों नन्दण जाया, पिण

एकन गोद खिलायारे ॥६०१॥ घर पाहसो नही व
 धायो नही मधुर तालरियो गायोरे ॥६०२॥ धुपग
 शुद्धनी नाहि वसाई भूमर पित्त नहि वंधाईरे
 ॥६०३॥ नही गट्या कपडा पहिगया, नहि मंगस्या
 टोपी गिवायारे ॥६०४॥ नहि वागल भर्तु लगायो
 नहि स्नान करीमे खियायोरे ॥ ६० ॥६॥ नहि गाल
 दामसादीया बलि घाई मुरज नहि कीधारे ॥ ६०
 ॥ ६ ॥ नहि स्नान पय पान करायो कठा मे साहि
 मनायारे ॥ ६० ॥७॥ म्हे तो कहिया नाहि ठठापो,
 नहि रँगुली पकड़ बलायारे ॥ ६० ॥८॥ घूघू कही
 नाहि डरायो नहि गुद गुस्या पाहईसायोरे ॥६०
 ॥ ९ ॥ नहि मुख पे रूखा दीया नहि तरप बारसा
 लीया रे ॥ ६० ॥ नहि चन्दी मकरा मंगाया,
 नहि गुलिया गेंद बसायारे ॥६०॥११॥ म्हेतो जन्म
 नया दुख देण्या गया निर्फल जन्म जसेख्यारे ॥
 ६० ॥ १२ ॥ मे भवानक पुण्य न कीया निसकी
 सुत विवका लीयारे ॥६०॥१३॥ गले पे हाथ नहर
 ई धरती भाव्य चाम् मरु मुरती रे ॥ ६० ॥१४॥

पग चन्दन किसन पधारे, माजी ने उदास निहारे
रे ॥ इ० ॥ १५ ॥ कहे अमीरिख किम दुख पावो,
माताजी मुझे फरमावोरे ॥ इ० ॥ १६ ॥



६६. श्री आदेश्वर का आह्वान ।

तज-धीरा चालो वीरज का वामी ।

आवो २ हमारे घर स्वामी, आदेश्वर अन्त-
र्यामी हो ॥ टेर ॥ कोई हस्ति सिनगारी लावे,
इगरी गले घूंघर माल पहिरावे हो ॥ आ० ॥ १ ॥
प्रभु दया करीने गज लीजे, असवारी कीजे
हो ॥ आ० ॥ २ ॥ कोई अश्व अनोपम लावे,
रतना में साज सजावे हो ॥ आ० ॥ ३ ॥ प्रभु
घुड़ले आप विराजो, प्रभु पग पाला नवि छाजो
हो ॥ आ० ॥ ४ ॥ कोई लावे रथ सुकपाला, प्रभु लीजे
दीन दयाला हो ॥ आ० ॥ ५ ॥ प्रभु चरण कमल सु-
कमालो, प्रभु पग पाला नवि चालो ॥ आ० ॥ ६ ॥
कोई लावे कन्या सिनगारी, प्रभु सोहे जोड़

तुम्हारी हो ॥ अ० ॥ ७ ॥ कोई लावे धाल मर मोती
 कोई पाट पिताम्बर धोती हो ॥ अ० ॥ ८ ॥ कोई
 लावे मान बुझासा प्रभु पहरो अति सुख माला
 हो ॥ अ० ॥ ९ ॥ हम विध २ वस्तु लावे, पिछ आहार
 कोई न पहिरावे हो ॥ अ० ॥ १० ॥ प्रभु घर २ आंगण
 लावे पिछ वेल्ह २ फिर जावे हो ॥ अ० ॥ ११ ॥
 मोलानर मेव न जाण, मुनि मार्ग नाहि पिछावे
 हो ॥ अ० ॥ १२ ॥ आगे किछ हो न सीधी दीक्षा
 नहीं मांगी घर २ मिछा हो ॥ अ० ॥ १३ ॥ प्रभु के
 वार हजार हुआ बेसा बे करे आहार बिन होसा
 ॥ अ० ॥ १४ ॥ प्रभु मैं आहार बिन बुझ पावो हम
 तुमने साफ सुनावो हो ॥ अ० ॥ १५ ॥ प्रभु अम्बराय
 निज जासो मन राग लोष नहि आये हो ॥ अ०
 ॥ १६ ॥ एक दण्ड आहार नहि पाया पक्षे इस्लाम-
 पुर आया हो ॥ अ० ॥ १७ ॥ कहे अमीरिख थेबांस
 कुमारा पहिरायो शूरस आहारो हो ॥ अ० ॥ १८ ॥

६७. प्रभु वीर जन्माधिकार ।

हारे सुधर्मा पति निजमन चिंतवे हरणगमेपी
 बुलाओरे । स्वामीजी को जनम भयो है जिन मुख
 जोवा जाओरे ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ जान विमाण बनाय
 मनोहर घटसुं घोष बजाओरे ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ हुकम
 कर्षिने वेग मुकलाओ धनसुं भण्डार भराओरे ॥
 स्वा० ॥ १० ॥ आई २ दशा छपनकंवारी हरप हरख
 गुण गाओरे ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ चार आगुल प्रभु को
 नालो छेदी वज्र हीरा से खाड बुराओरे ॥ स्वा० ॥
 १२ ॥ स्नान एक ने मंजन दूजो मधुर २ गुण गाओरे
 ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ संपत सहित निरख मुख माता चरणे
 शीश नमाओरे ॥ स्वा० ॥ १४ ॥ अपछरा सर्व लगी
 एक ओले निरख हरख सुख पाओरे ॥ स्वा० ॥ १५ ॥
 इतने सुधर्मापति इन्द्र पधार्या आई ने शीस नमा-
 ओरे ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ भय मत पाओ माता रत्नकुंछ
 धारणी में सुरपति थारा गुण गाओरे ॥ स्वा० ॥ १७ ॥
 एक इन्द्र हाथे लई चाल्या, एक तो छत्र धराओरे

॥ स्वा० ॥ १ ॥ एक धज्ज भागो कई चासे हो बाज
 सँवर कुराओरे ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ मेरु शिखर पर
 महोत्सव कीधो रम्भाएवा हर्य बधाओरे ॥ स्वा०
 ॥ १२ ॥



६८ राजमती ।

उमसेन की लखी २ नेमजी बम्बन गिरमार
 खड़ी । लखी राजमती २ प्रमुजी बम्बन गिरमार
 खड़ी ॥ टेर ॥ माग में जाना कूठाजी मेह भीज-
 गई सारी नवरंग वष ॥ उ० ॥ १॥ देव गुफा देखी
 पैठी निमघार चीर नीचोखे देखो राहुलगर ॥
 उ० ॥ २ ॥ नवल्लो रूप देखी रछा रहनेम संजम
 उज धायो तासु मन प्रेम ॥ उ० ॥ ३॥ ये आदव कुल
 साहस धीर शियम गतन देखो लोको मत भीर ॥
 उ० ॥ ४॥ समन आहार बम्बे नही कोय ज्यनि लावे
 पाग कुत्ता जो होय ॥ उ० ॥ ५॥ विविध पवन कई
 संजम ठाय देवर मे राजमती समझाय ॥ उ० ॥ ६॥



६६. तर्ज-काँड़े जवाब करूं रसिया ।

काँड़े प्रभाव कहूं गुरु को, भाव कहंगो प्रभाव
 कहंगो, गुरुजीरा चरणों में लपट रहंगो ॥ ८ ॥
 कहोजी गुरुजी थाने किण विध सेऊं, ज्ञान दियो
 जिणरो काइ देऊं ॥ ९ ॥ एक वचन गुरुदेवजी थारा,
 ऊपर बारू पदारथ सारा ॥ १० ॥ बड़ी वस्तु जितरी
 जग मांही, तुम उपकार तुले कोई नांही ॥ ११ ॥ शानी-
 पुरुषां ज्ञान सगायो गुरु बिना ज्ञान कठा सूं आयो
 ॥ १२ ॥ जो जग में गुरु आप न होता किण विध
 आज हिताहित जोता ॥ १३ ॥ जो जग में गुरु
 न होता कठिण करम मलने कुण धोता ॥ १४ ॥ जो
 जग में गुरु आप न होता, टाल तो कौन गजवर
 गोता ॥ १५ ॥ गुरु सेव्यां पशु पुरुष कहावे, पत्थर
 सो पारस पद पावे ॥ १६ ॥ जग रूठां गुरु आप
 उधारो, तुम रूठा नहीं राखन हारो ॥ १७ ॥ किरण
 कर दुविधा सब टारी 'अमृत' तो गुरु की बलि-
 हारी ॥ १८ ॥

७० तर्ज-बीग सुग्गा मुग्गा होय भादजो ।

महानि लागे पूज्य गुरु प्यारा जो दिव शिष्या
 बसतामजी । देर । गुरु नाम प्यान का बरिया गुरु
 पित्तय विवेका मरियाजी ॥ १ ॥ गुरु मुग्गा मोहन
 गारी महानि लागे सूरत प्यारीजी ॥ २ ॥ गुरु सिद्धि
 सम्पदा त्यागी जिय शिवरमणी रं लामजी ॥ ३ ॥
 गुरु आप सिरे परतारे सब जीवापकाज सुभादे
 ली ॥ ४ ॥ गुरु इतरी किरपा कीजो महानि साची
 समकित दीजोजी ॥ ५ ॥



७१ तर्ज-खेखन दो मनगोर ।

देखन दे दीवार सहेली देखन दे दीवार ।
 हे महारा समकित रा दातार सहेली देखन दे
 दीवार । देर ॥ त्याग अनोपम अथवा विराजे, समक
 ली निहार । मध्यवारी भावा भावारी, मिन
 शासन सिद्धगार ॥ १ ॥ उपदेश कटा हे अमर
 रिराजी सुन दये तरमार । पाण्डवी-मद गावम

वारा, ज्ञान तरणा भरडार ॥२॥ धर्म थकी दिगताने
 राखे, भाखे चचन विचार । चाखे समता रस
 गुण दरिया, हरिया पाप अठार ॥ ३ ॥ रजो हरण
 राखे रक्षा हिन मुखपत्ति मुख सुखकार । दुकर
 तप धारक गुण युक्ता, पटकाया प्रतिपाल ॥ ४ ॥
 तुम चरणों में चित्त वस्यो है, उपकारी अनगार ।
 मोहन मुद्रा पे बलिहारी, जावां वारंवार ॥५॥

७२. तर्ज- तावडा धीमोसो पड़जा ।

परम गुरु लागे मोय प्यारा रे, जिनमत का
 शृङ्गार गुरुजी है मोहनगारा ॥ देर ॥ चन्दा जैसा
 शीतल गुरुजी, सागर सम गंभीर । सूरज जैसा
 गुरु प्रतापी, निर्मल गंगा नीर ॥ १ ॥ खंघक जैसा
 क्षमावान गुरु, गौतम सा गुनवान । धन्ना जैसा
 घोर तपोधन पारस सा पुण्यवान ॥ २ ॥ केशी
 जैसा हो उपदेशी, युक्ति कला भंडार । ज्ञानी
 ध्यानी गुरु गुणवन्ता, जिन सासण सिणगार ॥३॥

तारख तिरख अहाज सरीखा सूरसिंह समान ।
 पाकड़ी मक् गासन पाले बीर बिबक्ष्य बान ॥४॥
 कहाँ सग कीर्ति करु आपरी एक जीम म्हारी ।
 घन जाति कुल वंश आपरो घत जननी धारी ॥५॥

७३ तर्ज-कमली बाल की ।

जिन धर्म का मरणा दुनिया में कहाया प्यारे
 सतगुरु ने अहिंसा का रंका आत्म में बजयाया
 मरे सतगुरु ने ॥ देर ॥ मिथ्यात्व महात्म दूर
 किया और सत्य एवार्थ बरसाये । फिर सत्य का
 जलवा हर युग में मकटाया प्यारे सतगुरु ने ॥१॥
 मिथ्यात्व तिमिर की सब अग में घन घोर घटाई
 छाई थी । जिन शासन सूरज वहाँ पर भी कम-
 काया प्यारे सतगुरु ने ॥२॥ पाकड़की के भ्रम जाह
 में मविजम जा मरमाये थे । दे सव उपदेश किमारे
 पर पबुंसाया प्यारे सतगुरु ने ॥३॥ पश पैल गया
 गुरुदेव नग भारत के कीने कीने में । जिनपानी
 का प्यावा दुनिया में पिलयाया प्यारे सतगुरु ने
 ॥४॥

७४. तर्ज-रसिया ।

म्हारा सतगुरु दीन दयाल कृपाकर वेगा
 आइजोजी, गाम गाम में जिनवानी को मेह वर्षा-
 इजोजी । घणा करी उपकार जगत में, जस थे पाइ-
 जोजी ॥१॥ हेतु न्याय दे पाखण्डी को, दूर भगा-
 इजोजी । करडा काठा वचन सुनी के, मत रीसाइ-
 जोजी ॥ २ ॥ ज्ञान ध्यान की फुलवारी थे, खूब
 लगाइजोजी । त्याग और वैराग तणी थे, ज्योति
 जगाइजोजी ॥३॥ दर्शन प्यास वसी दिल माही घेग
 मिटाइजोजी । मुर्झित म्हारी फुलवारी को, शीघ्र
 सिंचाइजोजी ॥४॥ सुमति सयानी दिल जानी को,
 गले लगाइजोजी । कुमति के जंजाला मायने, मत
 विलमाइजोजी ॥ ५ ॥



७५. तर्ज-तावडा धीमो तो पड़जा ।

सुगुरु म्हारी बिनती सुन लीजो २ महर नजर
 कर सहर हमारो पावन तो कीजो ॥टेर॥ फुलवारी

ममरो मज्जेमरे चातक ज्यों जलधार । रात दिपस
 ज्यु पतिया मम में सतगुरु का दीवार ॥ १ ॥ ये
 उपकारी मोटका सरे धर्म तथा दातार बेगा
 द्यौ दिगायजो मरे बीनती बारंबार ॥ २ ॥ गाँव
 गाँव को गट देखने मतना विसमाइजो । स्थाने
 भी ये पाव गऊमे गुदजी मूट आइजो ॥ ३ ॥ पौरा
 दर्शन करके स्वामी लोचन बिकनाथा । बापी सुन
 मम आज हमारा अनहद हर्षाया ॥ ४ ॥ आदि
 बीनती आदि अज हि मत ना विसपाइजो । यहाँ
 से करके पिहार हमारे तीषा ये आइजो ॥ ५ ॥



७६ नञ—धीरा वाला विरव का वाधी ।

मतगुरु सा बंगा आइजो आइजो नै द्यौ
 दिराइजो जी ॥ ६ ॥ मिथ्या मत दूर हटारजो सम
 बिन की ज्योन जगाइजो जी ॥ १ ॥ जिनबानी लूष
 मुनाइजो भूमा में धर्म बताइजो जी ॥ २ ॥ जिन
 रामन जोर दिपाइजो कुमत्था में पंथ सगाइजो जी

॥ ३ ॥ गुरु देश विदेशां जाइजो, थे जस ले म्हारे
 आइजो जी ॥ ४ ॥ पेसमता रस गम खाइजो, गुरु
 कभी मति रीसाइजोजी ॥ ५ ॥ म्हारी वीनती वेगा
 आइजो, गुरु अब ना तुम तरसाइजोजी ॥ ६ ॥



७७. तर्ज-हा सगीजी ने पेड़ा भावे ।

हा गुरु मुक्त सहर पवारो, भव जीवांरा काज
 सुधारो, तिरण तारण की जहाज राज भरलो
 हुकारो रे ॥ १ ॥ मोह ममता को दूर हटा दी, जैन
 धर्म की ज्योति जगादी, चारों दिशां में फैल रह्यो
 है सुयश तुम्हारो रे ॥ २ ॥ आप तिरो ओरों ने
 तागे, ऐसो विरद लगे मोय प्यारो, खटकाया
 प्रतिपाल अरज म्हारी अवधारो रे ॥ ३ ॥ गांवों
 गांव ज्ञान फुलवारी, सींची वचनामृत भर भारी,
 पाखण्डी मद गाल श्रद्धा को कियो सुधारो रे ॥
 ॥ ४ ॥ नर नारी दर्शन का प्यासा, तन मन से कर
 रहे हैं आसा, जलदी कर मंजूर हमोरो मान

बधारे रे ॥ ४ ॥ अब होगा दीवार तुमारा चम्प
वही दिवस हमारा, 'मानू' मिलियो राज भाइ
मिहूलोहा पाये रे ॥ ५ ॥



७८. रत्न-माता सीता के खोले में इतुम्ह० ।

बेगा साहजा हो गुरुचरणी मूनि तारका हो
अग में अनमो आप गुरुजी अगत बहारका हो ॥
हेर ॥ सुरगुरु सभ हो महा बुधबाम बाबी गुरु
रत्नमोरी काम गहरा स्वामी सिन्धु समान ॥ १ ॥
गुरुजी परम धैरानी स्वागी रिखि सम्पदाजी मन
से ममता मोह निवार करते गुरुचर उम बिहार,
तन तप चाप्यो बुझर कार ॥ २ ॥ बाबी गुरुबन्दा
गुरुदेव हैं पुनरा पोरसाजी, धरि दर्यान के परताप
आवे पाप ताप सन्ताप होवे मझिन हृदय भी
साक ॥ ३ ॥ गुरुजी करके पूरन महार सहर पमार-
ओजी घर घर होसी महुसाचार आनन्द पासी
सब नरनाद अकरी कीजो आप बिहार ॥ ४ ॥



७६. तर्ज—मेरी जमीर सोने की ।

अरज है आप से मेरी, हमारे क्षेत्र में आना,
विचरते हर जहां जाना, गुरुजी भूल मत जाना
॥ टेर ॥ लगी है यह लगीन दिल में, तुमारे दर्श
करने की । विनय सुनना अरे स्वामी, अधिक ना
आप तरसाना ॥ १ ॥ तुम्हारी दिव्य वानी पर
पपीहा हम बने प्यासू । सरस घन स्वाति की बूंदें
आय कर आप बन जाना ॥ २ ॥ हमारे नयन यह
चकवे, तुमारे को निहारेंगे । [गुरु बन चन्द्रमा
चन्द्रिका खूब चमकाना ॥ ३ ॥ रही कुमला मृदु
कलियां हमारे चित्त पंकज की । ज्ञान मय सूर्य
किरणों को फैलाकर शीघ्र विकसाना ॥ ४ ॥ वगीचा
धर्म का स्वामी, तेरे बिन सुष्क होता है । कृपा
कर गुल चमन करना, सुधामय घानी बरसाना
॥ ५ ॥



८० राज-कमली वाले की ।

यह यिनगी हमारी चुन लीजो, मन्द दर्शन दीजो सत गुरुजी ॥ १ ॥ गुरुदेव बड़ा उपकारी हो आर्क चरणां की यहिहारी महे गुरु इतनी तो किरपा कीजो मन्द दर्शन दीजो सत गुरुजी ॥ २ ॥ गुरुदेव तुम्हारे आँख से छोट धर्म का लागेगा । आनन्द ही आनन्द होवेगा मन्द दर्शन दीजो सत गुरुजी ॥ ३ ॥ जमता तुम्हारे दर्शन की दिन रात गुरुजी व्यासी है । आम्हा पूर्ण कर दीजो मन्द दर्शन दीजो सतगुरुजी ॥ ४ ॥ बिना माछी के फुलपाई' हो, गुरुदेव उजड़ती जाती है । सीधा आ लवण लीजो मन्द दर्शन दीजो सत गुरुजी ॥ ५ ॥ यिनगी यह मंजूर काने गुरुपुर में पागस्या आप धरो । अब आँख की जमनी कीजो मन्द दर्शन दीजो सत गुरुजी ॥ ६ ॥



८१. तर्ज-मेरी जंभीर सोने की ।

गुरुवर ! आपका आना, मुवारिक हो मुवारिक हो । सुदर्शन आपका पाना, मुवारिक हो मुवारिक हो ॥ टेर ॥ पधारे महिरवानी कर, अयि गुरु पूज्य ज्ञानीवर, संग सब शिष्य को लाना, मुवारिक हो मुवारिक हो ॥१॥ देख कर आज का जलवा, खुली आंखें जवानों की, मोद से आज गुन गाना, मुवारिक हो २ ॥ २ ॥ तुमारे दर्श के खातिर तरसती आंख ये मेरी, तरस पाते को हर्षाना मुवारिक हो २ ॥ ३ ॥ गुरुवर आपका आना, नगर में रंग का छाना, मेरा भी आज का गाना, मुवारिक हो २ ॥ ४ ॥



८२. तर्ज-गवरल ईसरजी कहवे तो हंसकर बोलना

सहियां गावो ए वधाओ, सत गुरु आविया जी ॥ टेर ॥ गुरुवर ज्ञान गुणाकर भरिया, आतम तारक दरिया, विचरत २ यहां परवरिया, गुरुजी

शिष्य बड़ा गुमस्त सांग में लाविषात्री ॥ १ ॥
 बहुत दिनों की थी भमिलाया जैसे घन का बा-
 तक ध्यासा फल गई आज हमारी आशा पासा
 हल गया है मन जाया मङ्गल लाविषात्री ॥ २ ॥
 आलो मिल लुल बहिनो सारी भाये आज गुठ गुठ
 घागी लागे मुखा मोहन गारी जाँके करवारी
 बहिनहारी जाया पारियात्री ॥ ३ ॥ पूरे पुण्य से सठ
 गुठ आया घर घर में आनन्द बरसाया मित्र
 ह्वल वांटो रंग बघाया मरी का गुणबन्ता महापञ्च
 आज मुण्य गाविषात्री ॥ ४ ॥

८३ ठकै—ठावड़ा बीसो ता बड़ारे ।

आज म्हारा लतगुठजी आया रे २ पूरे पुण्य
 से पूज्य गुठ का दर्शन में पाया ॥ हेर ॥ धन्य
 दिपल है आज हमारे वक्षित फल पाया । धन्य
 पकी धन्य भाग्य हमारा पुण्य बढ्य आया ॥ १ ॥
 किस देश में किस चेज में दिम ये दिताया ।

धर्म ध्यान का प्रेम लगा धाने, कहो कुण धिल-
माया ॥२॥ इतरा दिन तो केइ मिस लेकर काफी
तरसाया । आज दयाल दयाकर मझ पर, आनन्द
वर्षाया ॥ ३ ॥ सतगुरु आया शहर में, तन मन
हुलसाया । मोहनगारा गुरु दर्शन कर, लोचन
विकसाया ॥४॥ केइ दिनों की थी अभिलाषा, नीठ
दर्श पाया । अल्प बुद्धि अनुसारे आज मै, सत
गुरु गुण गाया ॥ ५ ॥

८४. तर्ज-जाली का मोरा काठना ।

सखी सहेल्याए, चालोनी गुरु वन्दने ॥ टेर ॥
आज शहर में सुगुरु पधार्या सार्या दंछित काज
चालोनी गुरु वन्दने ॥ १ ॥ केइ दिनों की मेरी यह
भ्राशा, पूरण हुई आज चालोनी गुरु वन्दने ॥२॥
आज हमारे सुर तरु फलियो मिल्या मनोरथ
माल चालोनी गुरु वन्दने ॥३॥ वटत घरो घर रंग
घघाई, हर्षी सकल समाज चालोनी गुरु वन्दने ॥
४ ॥ गुरु सेवा से मोक्ष मिलत है, गुरुजी है धर्म
जहाज चालोनी गुरु वन्दने ॥ ५ ॥

८५ दर्शन-गवरण ईश्वरजी कहने लो ईश्वर बोखनाण

बसिहारी हो सतगुरुजी धारा ज्ञान की हो
मनको हरणो म्हायो देख कृपा बखान की हो ॥
देर ॥ बानी स्व पर मत जान मिरवा मुख एतनापी
जाम गालो पारखिषों का नाम ॥ १ ॥ परिपहा
ठाठ मुख आगसेजी आये सिख रही केहर क्यारी
बाखी अवब कर नरनारी मिरखे मुद्रा मोहनगारी
॥ २ ॥ गाओ मन ज्युं कतुर विष सँघ में हो सुतर
मिन मिन करनै बायो माको दया में साबो
निस दिन ज्ञान ध्यान में राखो ॥ ३ ॥ कुंविया बरख
बुकानरी ओपमाजी परसन ओ पूछे सो तैयार,
ठसर देखो हिये उतार बारी बुध को ब्रह्मन पार
॥ ४ ॥ कीमो लोग कुहुम रिष कोकनेजी आण्यो
ओ सँसार असार निविष कोक्या पाप अठार
जीधो धोर महामत धार ॥ ५ ॥ अमय दाम दियो
कतकाय ने जी मय अल तारख तिरख अहाम
सारो निज पर आत्म काम शीतख आनम ज्यो

छिजराज ॥ ६ ॥ बुध निर्मल थांरी श्रुत केवली हो,
 थाने सुरनर शीश नमावे, पूरण सुरगुरु पारन
 पावे, किंचित किसनलाल गुण गावे ॥७॥



ददं. तर्ज-मोला बुलालो मदीने मुझे ।

मेरे गुरु ने ज्ञान सुनाया मुझे, मिथ्या नींद से
 आके जगाया मुझे ॥ १ ॥ सो रहा था मस्त हो
 कर मिथ्यात्व खोटे ख्याल में, खो रहा था आत्म
 धन को मोह माया जाल में, सच्चे गुरु ने आके
 जगाया मुझे ॥ २ ॥ निक्षेप और नयवाद का निर्दोष
 गुण निर्णय किया, उतसर्ग अपवाद का सब सत्य
 रहस्य बता दिया, भर ज्ञान का प्याला पिलाया
 मुझे ॥ ३ ॥ जगत्कर्ता है नहीं जगदीश प्यारे
 देख लो ऐसी बातों का प्रेमी बनाया मुझे ॥ ४ ॥
 दान देकर दीन पर उपकार करना सीखलो धर्म
 जाती देश हित कुछ काम करना सीख लो, सच्ची
 श्रद्धा का तत्व सिखाया मुझे ॥ ५ ॥ धर्म हित हिंसा

का करना धर्म से प्रतिकूल है परम अर्द्धि सा धर्म
 प्यारा न्याय से अनुकूल है, ऐसे न्याय गुह से
 जन्माया मुझे ॥ ५ ॥



८७ तज-पनकी मूढे बोझ ।

आज रंग बरसेरे १ म्हारो बाणी सुख सुख
 दिवको हर्वेरे ॥ ६८ ॥ पाठ रिगाओ बन न्यू गाओ
 बाणी असूत बरसेरे । मविजीवों की बाणी सुख
 सुख दिवका निकसेरे ॥ १ ॥ बानी गुरुजी का
 सुखाओ बाणी बकी करसेरे । बार संघ की
 सुखी दरथदा बहिन कलसेरे ॥ २ ॥ बकी मनोहर
 बाणी चारी सुनका आऊँ घर से रे । स्वाती बूँद
 ज्यों बागक तरसे ज्यों मन तरसेरे ॥ ३ ॥ गुरु
 सुनघी मदि रसीलो ऐसो असुन भरसेरे । काम
 कोष मइ लोम हृदय का मूरा टलसेरे ॥ ४ ॥



८८. तर्ज-तरकारी लेलो मातन आदिरे ।

म्हारी चन्दना तो झेलो, मै छूँ आविका सुंदर
 सहर की ॥ टेर ॥ बांध मुखपति करूँ सामायक
 राखूं पूंजनी आछी । पढिकमणो वे विरिया करंती,
 तो मै आविका साची ॥ १ ॥ वास वरत मैं करूँ
 तपस्या, नहीं करणी में काची । पखी पर्व का
 पोसा करती, जद ही आविका साची ॥ २ ॥ भार्ये
 बैठी भाऊ भावना, साची दिल में राची । स्थानक
 जाऊँ बेगी ऊठने, तो मै आविका सांची ॥ ३ ॥ देव
 गुरु की करी ओलखना, धारिया जांची जांची ।
 हिंसा धर्म के संगन जाऊँ, तो मै आविका सांची
 ॥ ४ ॥ हीगलाल कहे ऐसी आविका, भणी गुणी
 पुस्तक वांची । विनयवन्त गुणवन्त कहावे, सोहि
 आविका साची ॥ ५ ॥



८६ तर्ज-तावड़ो धीमो तो पढ़ना रे ।

गुरुजी में ज्ञान दियो मारी रे २ मिथभिन कर
समझाया सतगुरु जार्ज बलिहारी ॥ डेर ॥ बाकी
आपकी मधुर मनोहर, सब मैं सुनकारी । इत
ध्यान में रहो जिस दिन पूरा उपकारी ॥ १ ॥
बाकी आपकी सुशहर भ्राते, मिठ गढे विषय
पिफार विषय बिष कर परसायो स्वामी, राति
सुधा की धार ॥ २ ॥ पाट पिराओ घन ज्यों माओ
सोमो सिंह समान । मिथवाती मरु गालो गुरुजी
सकल सुख का जान ॥ ३ ॥ मुझ से गुण तो कहा
न जावे धर्में गुण ही बियोप । बन्धना भ्राती
भक्ति माय से हृष्यो गुरु हमेश ॥ ४ ॥

ॐ

६० तर्ज-तावड़ो धीमो तो पढ़ना रे ।

गुरुजी साता में रहिजो हो २ आप विचरजो
देख देख में पाहा मरु आरजो ॥ डेर ॥ मरु मरु
गरबी स्वर्ग निगरबी कण्ठी से कीजो । कोच

मान मद लोभ कपट तज, समता रस पीजो ॥१॥
 भवि जीवों ने गाम गाम में, बोध बीजा दीजो ।
 जैन धर्म को खूब दिपाकर, जग में जस लीजो ॥
 २॥ कठिण मारग मुनिराज आपको, सुध मन से
 सहिजो । मच्छरता तज दूर आप डर, उत्तम गुण
 लीजो ॥ ३ ॥ पाट दिपाओ गुरुराज को घणा वर्ष
 जीजो । तुम जिसड़ो त्यानी जग मांहे, लाधे नहीं
 बीजो ॥४॥ कृपा राखजो करुणा सागर, भूल मति
 जाइजो । जिनवानी का प्याला सतगुरु, जलदी से
 पाइजो ॥५॥ प्रेम भरी आ वीणती सरे, उर में धर
 लीजो । कृपानाथ करुणा कर स्वामी, दर्शन भट
 दीजो ॥ ६ ॥

६१. तर्ज-पनजी मूंडे बोल ।

वेगा आइजो हो २ गुरुदेव आप म्हाने भूल न
 जाइजो जी ॥ टेर ॥ जैन धर्म को प्रेम लगा मत,
 अध विच में छिटकाइजो हो । विचरत २ वेगा

म्माने दरम दिराहजो हो ॥१॥ बार संघ की बार
 फुलधारी सतगुरु मत कुमहाहजो हो । जितधानी
 की झड़ी लगाकर सरस यमाहजो हो ॥२॥ इम
 मं मस्त होय मुनि गुरु को पाट दिपाहजो हो ॥३॥
 पाखण्डी मय गात्र गुरुजी पाने जीमी बनाहजो हो
 गेम धरम को झण्डो अंग में जबर जमाहजो हो
 ॥४॥ हाथ जोड़ कर आही धीमती, ध्यान में सेठा
 आहजा हो । बारह मास में एक पार तो आया
 रहिजो हो ॥ ५ ॥



६२ ठकै-कटिओ आमारे देवरिया ।

आसी आसी हो सतगुरु पांटी ओखंडी अन-
 पार ओखंडी अनपार सतगुरु से हो ठारस हार
 ॥ टेर ॥ काम काज तज धर खूं आसी बाप्यी सुख
 सुख के सुख पासी आसी मरीसे आज हमारी
 सुख के गुरु को पिहार ॥१॥ जिन बचनों की श्री
 में व्यासी अब कहो अमृत कौन पितासी आने

उदासी आज गुरु बिन करसी कौन संभार ॥ २ ॥
 गुरु बिन सुत्तर कौन सुनासी, भूला ने कुण
 राह लगासी, गुरु बिन भूठा राग रंग म्हारे सूनो
 सब संसार ॥३॥ सत गुरु ज्ञान ध्यान का रसिया
 मारे रोम रोम में बसिया, सुन करके अरदास
 गुरुजी ठहरो फिर दिन चार ॥४॥ देश विदेशों में
 सतगुरु जाइजो, पाछा वेगा आइजो, होसी हर्ष
 अपार जल्दी मै देखूला दीदार ॥ ५ ॥



६३. तर्ज-रसिया नवीन ।

म्हारा सतगुरुजी गुणवन्ता पाछा वेगा आइ-
 जोजी, वेगा आइजोजी म्हाने भूल न जाइजोजी ॥
 टेर ॥ कुमत सखी के कपट मायने, मत बिलमाइ
 जोजी । सुमति सहेली संग सदा सुख शांति मना-
 इजोजी ॥ १ ॥ म्हाने बिलखा छोड़ गुरुजी, अलगा
 न जाइजोजी । साल सम्भाल हमारी लीजो, आया
 रहिजोजी ॥२॥ जिन वानी को अमृत पायो, फेर

पिलाइयोखी । मूर्खों पापी की मैया, पार सगाइयोखी
 ॥१॥ हाथ जोड़ ने आही विनती, सुनता आइयो
 खी सारा सन्तों के साथ गुरुजी जगदी आइयोखी
 ॥४॥ गाम गाम में जैम धर्म को खूब बिपाइयोखी ।
 सुनओ स्वामीनाथ बात से अस छे आइयोखी
 ॥ ५ ॥



६४ तर्ज-मरी मंजीर सोने की ।

गुरुजी आपका आना हमें बहुत प्यार आयेगा,
 भगम का आप विन ब्रह्मा गुरुजी कुछ बतायेगा
 ॥६॥ पकड़ के प्रेम से रीपां नीप से कुन जगा
 येगा । अनुपम आत्मा अनुभव का कइो कुन रस
 पिलायेगा ॥ १ मुझे है आसरा तेरा रसी संसार
 सागर में । पकी हि मंजर में मैया तेरे विन दुम
 बधायेगा ॥२॥ रसिक पद कान आसिक है तुमारी
 दिव्य पानी पार आप विन बीर की घानी कीन
 हमको मुतायेगा ॥ ३ ॥ तुमारी ममता समता

क्षमा दम शील संयमता । दिव्य गुण आपके
स्वामी, सदा शिक्षा सिखावेगा ॥४॥ पियारे पूज्य
गुरुवरजी, सदा आनन्द में रहना । दर्श फिर आप
का होगा, जवी आनन्द आवेगा ॥ ५ ॥



६५, सद्गुरु स्तुति ।

कव्वाली ।

धन्य धन्य भाग हमारे, यहां सद्गुरु पधारे ॥६॥
देखो मुनी की करनी, मुख से न जाय चरनी,
जिन नाम सदा उच्चारें ॥ यहाँ० ॥१॥
आवो तुम सांज सबेरी, मत ना लगावो मूँरी,
अवसर को मत चुकारें ॥ यहाँ० ॥२॥
दुर्गुण को दूर हटाओ, प्रभु चर्यें चित्त लगावों,
सिद्ध होय काज तेरे ॥ यहाँ० ॥३॥



६६ गुरु धन्वम ।

ठक—बारिवा बारिवा बारिबारे ।

धन्वना धन्वमा धन्वमा रे, ज्ञानी गुरुजी मे
 सारी धन्वना ष्टेर॥ धन्वमा कव्यासु धानज धाने
 ऊचा पदको ठावनारे ॥ का० ॥ १ ॥ गुरुजी बुझाया
 सहस्र ध्यारो कर मोड़ी मे बोसनारे ॥ का० ॥ २॥
 गुरुजी पचाव्या डमोखी रहनो पधारो पधारो
 हम केवनोरे ॥ का० ॥ ३ ॥ बिनय मूक जिन धर्म
 भाव्यो सब अवगुह दूर निवारनारे ॥ का० ॥ ४॥
 रत्नमूषि कहे शीख जो माने गुरु बचन शिर
 धारनारे ॥ ज्ञानी० ॥ ५ ॥

६७ गुरु परानि धिर्मती ।

भूख मठ जापोजी गुरु महानि । चिस्तर मठ
 जापोजी गुरु महानि । म्हेँ अपरज कक हूँ धामे ॥
 भूख० ॥ ६६ ॥ सत गुरु प्रेम द्रिया बिष अक्रिया
 प्रकट कई के धामे । जो मुक्त से अपराध धमे तो

करम दोष गुरु म्हांने ॥ भूल० ॥१॥ भवसागर यह
जल से भरियो, जीव तरण नहीं जाने । जीरण
नाव जोजरी डूबे, पार करो गुरु म्हांने ॥ मूल० ॥
२ ॥ मै चाकर चूक पड़ी तो, गुरु श्रवण नहिं
माने । मै बालक गुन्हा किया बहुतेरा, पिता विरुद
इम जाने ॥ भूल० ॥३॥ मेरी दौड़ जिहां लग लागे,
नमस्कार चरणों में । मेखंदास कर जोड़ वीनवे,
धन धन हैं सन्ताने ॥ भूल० ॥४॥



६८. गुरु दर्शन विनंती ।

तर्ज-ख्याल की ।

गुरुदेव हमारा, थाकां दर्शन की म्हारे भावना ।
सुणो सखी सहेल्यां, तन धन चारु रे करसूं घघा-
वणा ॥ टेर ॥ तीन लोक को द्रव्य ही सारो, करूं
मेट तो थोड़ो । दर्शन करके करूं विनन्ती, क्यूं
दर्शन दियो मोड़ोजी ॥ गुरु० ॥१॥ मात पिता सुत
मित्र रु स्वामी, खड़े खड़े सब भांके, समरथ

नहीं कोई नरक हासना चाह पकड़ गुठ राखेजी
 ॥ गुठ० ॥ २॥ अम्पत्य डाली ने मैब दिये और, अ-
 पूज्य को पूज्य बनाये । पट्टता डाली जन्म सुधारी
 सर पकित में कायेजी ॥ गुठ० ॥ ३ ॥ भव भव में
 मुक्त सद्गुरु सेवा दीजो वर प्रभु भार्य । मुनिराम
 कहे गुठ वर्यन दीजो सुकसुम सायजी ॥ गुठ० ॥

धीमान् पूज्य श्री अम्पाकालजी महाराज विरचित
 भजन-संग्रह

६६ पंच परमेष्टि स्तुति ।

तर्क-हीन नमः ।

प्रभात ऊठ पंच परमेष्टी नमू करी ।
 जिन नाम से समार आय दिन माही ने तेरी ॥ ६६ ॥
 अरिहन्त देव गुण अति साय तो गिरी ।
 सुन पाणी आपकी हमारा चित्त किया हरी ॥ प्र० १ ॥
 सकल कार्य सिद्ध कर गुण अष्ट तो धरी ।
 सब शत्रु कर्म नोक के शिष सुन्दरी धरी ॥ प्र० २ ॥

आचार्य उपाध्याय परम पूज्य तो सिरी ।
 छत्तीस और पचीस गुण ज्ञान की भरी । प्र० ३॥
 सत्तावीस साधु गुण गंग नीर तो भरी ।
 गुण एकसो ने आठ जाय पाप तोड़ि ए अरी प्र० ४॥
 प्राणनाथ पंच प्रभु तोड़िये अरी ।
 दो ज्ञान करूँ पार दया धर्म आदरी ॥ प्र० ५ ॥
 भव पार सिंधु तारिये प्रभु मुज कर ग्रही ।
 कर जोड़ करे अरज चम्पालाल पग परी ॥ प्र० ६॥

१००. प्रभु स्तुति ।

तर्ज-इन्द्र सभा ।

प्रह उठी मैं सदा नमूँ प्रभु पंच परमेष्टि नाम ।
 इन कर्मों के लिये नहीं मुझे आराम ॥१॥
 दिल लगा है आपसे प्रभु नहीं और से काम ।
 अरजी मेरी लीजिये प्रभु लगे नहीं कछु दाम ॥२॥
 लख चोरासी जोन में प्रभु बड़ा विकट है ठाम ।
 फिरते फिरते मैं थका प्रभु मिला नहीं विश्राम ॥३॥

अष्ट कर्म को तोड़ दो प्रभु शरखे आपो स्वाम ।
 मन दे अम्बर आपको मैं करूँ बहुत परकाम ॥४॥
 आप तिरे संसार से प्रभु लगन लगी एक पगल ।
 ज्ञान तो मुझ को दीजिये प्रभु पारंगत पर निर्वाण ॥५॥
 सुख देवा दुख भेड़वा प्रभु यही तुम्हारी बाण ।
 मोक्ष गरीबकी बीनती प्रभु छुनिये कृपा निधान ॥६॥

— ❧ —

१०१ पञ्च परमेष्ठी स्तुति ।

उक्ति कर ।

प्रथम प्रार्थना प्रेम थी करूँ अरिहन्त देवमा
 प्यार में धरूँ । सकल जगन्ना स्वामी को छत्र
 अरर ! नाथजी आप ईश्वर ॥ १ ॥ शरख राजजी
 मित्र साभगा अधिक अन्तरे राजू आशुता ।
 कर्म पाप को धास तोड़वा अरर ! बरी तो संघ
 खोड़वा ॥ २ ॥ अनूप ज्ञान से आचार्य ओपता,
 अरर नाथजी आप सङ्गवा ॥३॥ दिल में बस्या
 उपासनापजी करे लसि लसि नमूँ ई प्रत्यक्ष रे ।

सकल धर्मना धोरी स्वाम रे, अरर ! तोड़िया
 क्रोध काम रे ॥ ४ ॥ श्रमण सर्वनी सेव में सजूं,
 सुध मने भला भाव श्री भजूं । गुण निधि गुरु
 जान आपजो, अरर ! कर्मनां कष्ट कापजो ॥ ५ ॥
 सरस्वती मया शुद्ध दो गिरा, दिल न आणस्यो
 दोष माहरा । चम्पकलाल नी गहन वीनती, शरण
 सद्य दो निर्मली मती ॥ ६ ॥

१०२ भजन उपदेशी ।

वीतराग की बानी सुन लो, मिटे पापश्रो
 सहीजी । मिटे पाप० ॥ ८ ॥ मनुष्य जन्म पायो तू
 प्राणी, मान गुरु की कहीजी । तूं मान० ॥ १ ॥ अब
 के अवसर क्यों नहीं चेते, फेर जन्मश्रो नहींजी ।
 फेर जन्म ॥ २ ॥ रात दिवस तूं धंधे लागो, गयो
 जनम सच वहीजी । गयो जनम० ॥ ३ ॥ दुर्गुण को
 तूं त्यागज करजो, याहि अकलतने दईजी । याहि०
 ॥ ४ ॥ चम्पक मुनि सुन वैन सुधाकर, मोद भविक
 उर भईजी । मोद० ॥ ५ ॥

१०६ शान्तिनाथ प्रभु की स्तुति ।

तत्त्व-संग्रह में ।

साता करखोजी, महापद्म शान्तिनाथजी ।
 डेर ॥ खर्याँख सिद्ध धिमान से कबी, हथियपुर
 में आया । साता करबी सायु खगत में माताजी
 खुस पाया हो ॥ म० ॥१॥ तीन लोक में हर्ष मरों
 सब गावे मङ्गलाचार । तीर्थकर पदवी से पाया
 गुस के अपरंपार हो ॥ म० ॥२॥ अनाथ के मुनि
 नाथ कबीसे तुम नाथम के नाथ । चारों तीरथ
 शरण आयो ओढ़ी दोनों हाथ हो ॥ म० ॥ ३ ॥
 सब लुक के तुम देमि पाके सेवक तुमरे नाम ।
 भव पार उतागे मागर से यह के तुमरो काम हो
 ॥ म० ॥ गुरु हमारे रामरामजी गावे चम्पाताल ।
 दाथ ओढ़ के कर्त धीमती करयो मुझे निहाल हो
 ॥ म० ॥ ४ ॥



१०४. वीर स्तुति ।

मर्ज=पनजी मूढे वोल ।

मनहो मोह्योजी, महावीर स्वामी मुज दर्शन
 दीजोजी ॥ टेर ॥ दशवाँ सुरगथी चवि आया,
 बहोत्र वर्ष स्थिति पायाजी । पूरवली पुरयाई योगे,
 नाथ कहायाजी ॥ मन० ॥ १ ॥ सिद्धारथ राजाजी के
 नन्दन, त्रिशला राणी जायाजी । तीन लोक में रूप
 अनूपम, अधिको पायाजी ॥ मन० ॥ २ ॥ तीर्थकर
 पदवी से आया, ज्ञान घणेरों लायाजी । भविजीवां
 का काज सुधारी, मुगत सिधायजी ॥ मन० ॥ ३ ॥
 जो नर मन में ध्यावे सो तो सुख अनंता पावेजी
 जन्म जराने मरण मिटावे, गर्भ न आवेजी ॥ मन०
 ॥ ४ ॥ गुरु हमारा रामरतनजो, दियो पाप छिट-
 काईजी । चोट लगी निज नाम धरणी की मुज
 हिरवे खटकी जी ॥ मन० ॥ ५ ॥

१०५. भजन उपदेशी ।

तर्क-मत्त ।

सुन लेना मुखाफिर बहमा तो बाहिर वहाँ
 से होयगा ॥ देर ॥ बाह्यपक्षा तो गया निकल कर
 आई जवानी हाथ । बुढ़ापे का दुम्ब बहुतसा
 कहूँ कहाँ सप बावजी ॥ सुन० ॥ १ ॥ सुल भई
 रन्धी छब तेरी नहिँ बल्ला कहूँ जोर । सीवी
 सुमरणी हाथ में तेरे बिल में पोका मोरजी ॥
 सुन० ॥ २ ॥ साईं नाम की बाह बनी है, मेकी की
 वलवार । मार बही को दूर हयभो फिर वतरो
 सब पारजी ॥ सुन० ॥ ३ ॥ सुल बाहो तुम जीने
 का तो बोको कुदुम्ब की भाय । दिख वे आकिन
 राजातो तुम सुबा कका है पायजी ॥ सुन० ॥ ४ ॥
 सीख सुनी मैं गुरु बानी की जया कसेजे बान ।
 गुरु हमारा रामगनजी करे बाध की बानजी ॥
 सुन० ॥ ५ ॥



१०६. उपदेशी ।

नम्र—सावलिया रंग फटा वाला तो पर जादू डारू रे ।

सतगुरु केरी चाणी सुन्नने, हिरदे ज्ञानज
 लागो रे । हिरदे ज्ञानज लागो, उठो भव जीवां
 जागो ॥टेर॥ घोर संसार असार इसी में, दुख को
 है नहीं थागो रे । जो सुख चाहो जीने का तो,
 प्रभु से अरजी मांगो रे, प्रभु० सत० ॥१॥ वीतराग
 की चाणी जिनसे, धोवो दिल को दागो रे । चोर
 करम इन्द्रिया संग लागी, इनसे अलगा भागो रे,
 इनसे० ॥ स० ॥२॥ मात पिता और सासु सुसरा
 रमैया जम्बु आगो रे । सुनी बात सब चोर पान
 परभवो लारा लागो रे ॥पर० स०॥३॥ आरो पांचवो
 सुत्तर इनमें योहि समुंदर थागो रे । गुरु हमारा
 रामरतनजी, भर्म अंधियारो भागो रे ॥ भर्म स०
 ॥ ४ ॥

(१७९)

१०७ पञ्च परमेष्ठी ।

तर्क-बन्धन आदि ।

सुनो पञ्च परमेष्ठी देव, जिनम्ब मोहे तारी
दीजोरे । अब कई मैं तुम्हारी सेव जिनम्ब मोहे
तारी दीजोरे ॥ १ ॥ देवाधि देव अरिहन्त जिनम्ब
मोहे तारी दीजोरे । श्री सिद्ध बड़ा मगधन्त जि-
नम्ब मोहे तारी दीजोरे ॥ २ ॥ सुनो आचार्य ठर-
कम्ब जिनम्ब मोहे तारी दीजोरे । मुनि उपदेश
धी करे साध्व जिनम्ब मोहे तारी दीजोरे ॥ ३ ॥
हुनो फल्यो मोहनी माय जिनम्ब मोहे तारी
दीजोरे । सत्चारमां लागी काय जिनम्ब मोहे तारी
दीजोरे ॥ ४ ॥ चिकचिह्न मैं मति मन्त्र जिनम्ब
मोहे तारी दीजोरे । समम्बो नही मैं कम्ब जि-
नम्ब मोहे तारी दीजोरे ॥ ५ ॥ करधि कई चितलाय
जिनम्ब मोहे तारी दीजोरे । अज्ञान तिमिर मिट
जाय जिनम्ब मोहे तारी दीजोरे ॥ ६ ॥

ॐ नमः शिवाय

१०८. धन विषे ।

तज—नाव में नदिया इनी नाय ।

दुनियां धन में भूली जाय, कहा कहुं कछु कहा
न जायरे ॥टेर॥ चोरी जारी करे लवाड़ी, मनमें राजी
थाय । हिंसा करे पर प्राण की रे, धन लेवन की
चहायरे ॥ दु० ॥ १ ॥ बेटा बेटी बेच देरे, न गिणे
न्याय अन्याय । यातो मारे जीवनारे, धन से अत-
रथ थायरे ॥ दु० ॥ २ ॥ सत हारे मत विगड़े रे,
जातिछु भ्रष्ट होजाय । धर्म शर्म सगपण तजेरे ,
भूटा सोगन खायरे ॥ दु० ॥ ३ ॥ धूल खाय धन
कारणे रे, सन्त महन्त कईराय । भूटा कई भगड़ा
करे रे, लडे राज में जायरे ॥दु०॥४॥ चम्पक सुनि
ऐसो कहे रे दीजे ममत हटाय । ऐसा अचम्भा
हो रहा रे, मरने भूत जो थायरे ॥ दु० ॥५॥



१०६ भजन उपदेशी ।

कठिन मोक्ष का पन्थ समस्त विम कीम बठा-
 बेरे ॥ डेर ॥ शास्त्र की रीत किया तब बैठे महान्त
 धरायो नाम । सोम लाक्षण और पाप में पूरा कर
 पाप को काम ॥ संत० ॥१॥ दो दो तीन है घर में
 मारी तो पर विषा से प्रेम । बेटी बाड़ी लड़का
 लड़की तब दिया बरतने प्रेम ॥ संत० ॥२॥ मांजा
 बिलस या भग तमाखू मह मांस का चाहार ।
 आगी नहीं सो भोगी पूरा हुआ काफ़ी घर ॥ संत०
 ॥ ३ ॥ राज गुरु और गाँव गुरु फिर जगत गुरु
 कहैयाय । हाथी भोका राखे घर में बैठे रेस में
 जाय ॥ संत ॥४॥ गुरु गुरु की पिछान किया से
 हाथ गुरत निस्तार । कल्पक सुनि पों कहे सब से
 नरमय को मत हार ॥ संत० ॥५॥



११०. उपदेशी ।

सर्ज—प्रभु नाम सुमर सुख धाम ।

वाणी सुन लीजो रे, चतुर नर वाणी सुन
लीजो । थाने देवे सतगुरु उपदेश धरम को लावो
थे लीजो ॥ टेर ॥ मुनि सुनावे ज्ञान चतुर अब
आलस मत कीजो । बड़ी कठिन से जोग मिल्यो
जरा इनमें चित दीजो ॥ था०-॥१॥ लग्यो अनादी
काम मती तुम पाप माहि भीजो । प्राण पराय का
मन लूटो जरा दया कीजो ॥ था० ॥२॥ उत्तम नर
भव पाय मती तुम पाप विषय माहि रीजो । सुख
अल्प और दुःख अनन्तो समता रस पीजो ॥ था०
॥ ३ ॥ चम्पक मुनि उपदेश श्रवण कर बात हृदय
धीजो जिनवाणी अमृत रस पीजे अघ पंकज
हरीजो ॥ था० ॥४॥



१११ भजन उपदेशी ।

तबे-मिखा व रही जी समी ।

ये तन पाँचधारे याँको मत कोई कर गुमान
 तीर्थद्वार कभी हुआ जिनका कथन बरस गरीर ।
 आगम देखे साक्षी तनको छोड़ी गया अमीर ॥ ये
 ॥१॥ अमोघर रम्मा जितीरे रमणी रूप विशेष ।
 गहिरा कपड़ा खेवर अङ्गार्क मोछा सुरजर देख ॥
 ये० ॥२॥ मीठर दाढ़ ओ मांस रुधिर हैं जिसमें
 मरी दुर्गंध । ऊपर मढ़ियो जामको यदि मति मूलो
 मति मन्ध ॥ ये० ॥ ३ ॥ दोष पातु से देह बनी है
 देखा काम कगाध । मल मूत्र की यही कोपली
 गध रही दरमाव ॥ ये० ॥ ४ ॥ ऊपर रंग सुरंग से रे
 ता ऊपर सिंगार । मन माना करता धकारे डर में
 मर भिगार ॥ ये० ॥ ५ ॥ समजो ३ पादपीरे मल
 पूरक का लोच । भागी आपन कीन धारे मन में
 कर आनाथ ॥ ये० ॥ ६ ॥ तुम से कपड़ाई करीरे
 तिन से हो तिथ रूप । दाढ़ हुई एक धीसमीरे
 मुख गरम्मा बटु भूष ॥ ये० ॥ ७ ॥

११२. भजन उपदेशी ।

तर्ज-माद ।

हो थाने जाणो जाणो जाणो जरूरी दिल में
 करलो विचार ॥ टेर ॥ बाप का बाप दादा गया,
 अब थांसी कहीं आश । एक दिन यहां से चाल-
 णोरे, रहणो नहिं थिर वासरे ॥ था० ॥ १ ॥ देख
 रहे हो आप आंखों से, आया सोही आय । काल
 वैरी तो कितने न छोड़े, सब दुनियां ने खायरे ॥
 था० ॥ २ ॥ म्हारो म्हारो करतां गया सब अब
 जनम्यां छो आप । शक्ती ऊमर थारी घटती आवे
 तोही न आवे धाप ॥ था० ॥ ३ ॥ अन्तिम बेलां सइ
 रोवेगा, थे भी रोवोगा खास । धन दौलत ने
 कुटुम्ब कवीला, कोई न रहें तुम पास ॥ था० ॥ ४ ॥
 संचत गुन्नीसे चहोतरेरे, रामपुरे सेखे काल ।
 रामरतनजी गुरु प्रसादे, गायो चम्पालाल ॥ था०
 ॥ ५ ॥

११३ स्तवन उपदेशी ।

तब-कबकी भूखे नील ।

हारे हामोरे २ वो मोह कर्म बुझ देसी आगे
 ने हरेर वाक्यपछो वे कोह गंवापो ओवन में बिबा
 बाधेरे । फिरे मरुहसो घर २ धने हरम न बाधे
 ने ॥ का० ॥१॥ मात पिता ने कुटुम्ब कबीला धन
 दीसत परिबागोरे । कोह कोह ने गया मोहका
 हाग अमारोरे ॥ का० ॥२॥ चापो बुझापो गई अबासी
 हम्हया ओर हठायोरे । मन की मन में रह गई
 मूरक फिर पकतायोरे ॥ का० ॥३॥ सग संपत्ति ने
 काची काया लो जिनकर ने भाचीरे । गुह हमारा
 रामरामकी समना राची रे ॥ का० ॥४॥

११४ पंच परमेष्ठी स्तुति ।

१-२-३-४-५ की तनपुदनी पाग बान की हो ।

मन मोहम पंच परमेष्ठी समई अग पछीजी ।
 आनंद मज्जक बाने सुख स्वपति महिमा धरौजी ॥

टेर ॥ शुक्ल ध्यान से तोड़ी कर्म अरिहन्त पद पा-
 मियाजी । उपनो केवल दर्शन ज्ञान, होगये लोक
 अलोकनां जान । अतिशय घोतीस महागुणवान,
 पैतीस वाणी अमृतमान । तीरथ थाप्या श्रीजी,
 चार परम सोभावणीजी ॥ आ० ॥१॥ श्री श्री सिद्ध
 कर्म कर अन्त विराज्या मोक्ष में जी । मेढ्या जनम
 मरणरा दुख, पाया घणा अनन्ता सुख । रोगरु
 शोक तृषा नहीं भूख, ज्ञानी भाख गया खुद सुख ।
 जाने नमन करी अरिहन्त लेवे दीक्षा भणीजी ॥
 आ० ॥२॥ तीजे आचारज गुणवान छत्तीसों अती
 भलाजी । समकित ज्ञान देत हैं भारी, सुणी ने
 खुशी होय नरनारी । दीनो बोध बीज सुखकारी,
 माने वचन सभी संसारी । चारों तीरथ में शिर-
 दार सोहे हीराकणीजी ॥ आ० ॥३॥ श्री श्री उपा-
 ध्यायजी, ज्ञाता सूत्र सिद्धातकाजी । आगम पूरव
 ग्रौर उपंग, मिलके सीखे साधु सब संग । अमृत
 वाणी वरषे रग, सुनके पाखंडी हो दंग । भवि
 जीवां के चित जेम रतन चिंतामणीजी ॥ आ० ॥४॥

पूरण साधु शिरोमणी सन्त मुनिपद पांचवेंही ।
 दरशन काम चारिष छार, माया दुरमन विष
 विकार । माया समझाई मरमार दीमा मर पा-
 ली गार । मनको हर्षो झारो सुमी बाघी शानी
 तर्षीजी ॥ आ० ॥ १५ ॥ सुख मन से प्याऊं नमन करै
 पद पांचवेंही । पाऊं सुख सङ्गति बहुतूर जाये
 रोग शोक बुझ दूर । दुरमन शत्रु होय दूर रिद्धि
 सिद्धि मिले भरपूर । जग तारख भी नबकार अपू
 जीवन अकीजी ॥ आ० ॥ १६ ॥ सारी सुखी में ये साद,
 पदार्थ जानबोली । ऐसो मही को वूखो आप
 सुख मन से सुमने आप । मिद जाये सारा शोक
 खन्ताप दूर जाये सब ही पाप । शुद्ध रामरत्न के
 शिष्य कहै अपिये शुषीजी ॥ आ० ॥ १७ ॥

११५ काबणी उपदेशी ।

कै-नार की ।

तबगर्भों से करत मुहम्मद महावाज को बहुत
 सनात हो । कैसे भण्डा होय तुम्हारा नाहक मुँह

दिखलाते हो ॥ टेर ॥ औरों की तुम गरदन काटो
 अपनी खैर मनाते हो । इब्राहीम और इस्माइल
 पर जरा न ध्यान लगाते हो ॥ यकीन थी उनको
 मालिक की तुम तो बात बनाते हो ॥ करी जान
 कुरवान बेटे की हजरत आप सुनाते हो । दुम्बा
 जिन्दा होगया वहां पर तुम तो मार के खाते हो
 ॥ कै० ॥१॥ आदम ने पकड़ी थी हिरनी देख नबी
 को चिल्लाती । हजरत बच्चे हैं जंगल में मुझे
 छुड़ादो दुख पाती ॥ किया कौल आने का छोड़दी
 गई बच्चे को संग लाती । रो रो बच्चे दूध पिये कहें
 अम्मा तूं क्यों घबराती । नबी साहब ने छुड़ादी
 हिरनी तुम तो मार के लाते हो ॥ कै० ॥२॥ चारी
 धारस बहुत खजाना नबी अइय्युब को दुःख दिया ।
 जुल्म किया शैतान ने उनका मुल्क माल सब फना
 किया । बहुत बीमारी बढ़ादी तन पर कीड़े पड़ते
 नीचे मियां । चुन चुन के ऊन रखे जिस्म में सब
 कीड़ों को बचा लिया । नाम रहीमा बीबी हाजिर
 थी ऐसे तुम बतलाते हो ॥ कै० ॥ ३ ॥ खुद का

गोस्त दिया काठ मची महोमद फागठा वचवाई ।
 देखो आंखें जोख लुहा ने कुराम अम्बर फरमाई ।
 ऐसा आमकर रहम रखो कुल आत्म उनही बन
 वाई । जान किसी की मत सुखो तुम लुहा के बच
 हो भाई । पैस पैस के भूठी दुनिया में नाहक
 जान अमाने हो ॥ ६० ॥



११६ श्री महावीर प्रभु स्तवन ।

७६-पाठ ।

महावीर स्वामी अमरजामी शिवगत गामी
 पूगे हमारी धाय । प्रभुमें शिरनामी पुर्मतिनामी
 सुमति सुखामी पूगे हमारी धाय ॥ हेर ॥ पूरव
 कर्म लक्ष्म्या तरारे लेख्या विषय बिकार । आत्म
 बोन नहीं अथपाम्या गर्व नदित गंधार रे ॥ बांध्या
 कम अगारी धिमेंती उहारी विस्त में धारी पूरो
 हमारी धाय ॥ म० ११॥ आयो ई आपने आनरे रे
 गान गुणामी पात्र । भमता मयजल पात्र उतारो

गिरवा गरीब निवाजरे । यह छे अरज हमारी
 लीजो स्वीकारी, छो उपकारी, पूरो हमारी आश
 ॥ म० ॥ २ ॥ वीर प्रभु मुज हार दियाणा आतमना
 आधार । तुम चरणबुज वासना केरी, अन्तर
 हुस अपार रे । छो विश्वाधारी, सूरत प्यारी,
 लीजो उगारी, पूरो हमारी आश ॥ म० ॥ ३ ॥ जन्मो
 जन्म हूं दास तुम्हारो, बहाला प्रभु विसवास ।
 चम्पकलालजी मुनि परतापे, अरजी कालीदास रे ।
 कीधी क्रोड़ अपारी, चित्त विचारी, ल्यो अव-
 धारी, पूरो हमारी आश ॥ म० ॥ ४ ॥



११७. जिनवाणी ।

तर्ज-माढ ।

जिनराजनी वाणी, छे गुण खानी, मोक्ष नि-
 शाणी, सुणिये चित्त लगाय । वाणी सुधा समाणी
 शिव सुख दानी जगमां गवाणी, सुनिये चित्त
 लगाय ॥ टेर ॥ अधम फौज निवारण कारण शस्त्र

बारा अयकार । मघजल तरवा भविजनो मै ऐउ
 तसो आधाररे । ऐउं दिख मै आनी ज्ञान पिबानी
 भी जिनवासी सुमिये० ॥ जि० ॥ १॥ एक जिज्ञासी
 अनेक गुणोंनुं वर्णन कैम कराय । कोइ जिज्ञासी
 कोई कहे पथ गुणमी गणती न पाय रे । अहोमय
 प्रासी उल्ट आनी बीरनी वासी, सुमिये० ॥ जि०
 ॥ २ ॥ दीर्घ उषसी संसार में ज्वाला मोह अपार ।
 ताप निवारण भी जिन कैरी वासी अमृत पार
 रे । कही केवल ज्ञानी बाठ पुरानी अन्तर आनी
 सुमिये० ॥ जि० ॥ ३ ॥ अग्नि सुधारण मय दश
 ठारक धारक विषय बिकार । सुमता पाप समस्त
 पुकारे पावे अय अयकार रे । एही अर्थ हमारी
 पूरख ज्ञानी है दितकारी सुमिये० ॥ जि० ॥ ४ ॥
 वासी तथा गुरु वर्णन करवा मुनि अमरक बित
 ज्ञान । गुरु अर्थाबुज सेव मताये बिकर कासी-
 वास रे । मुंवाई मगर ममारी होम अपारी पार
 बारी सुमिये ॥ जि० ॥ ५ ॥



११८. विनय ।

तर्ज-माढ ॥

मेरी अरजी लेना, चित्त में देना, सुनिये श्री
 महाराज दया दिल में धरना, भव दुख हरना,
 सुनिये श्री महाराज ॥ टेर ॥ मोह अनादि नींद में
 रे, बहुत हुचो हैरान । खान पान में मगन होके
 क्रिया कछुन विचार रे मोह लोभ बता के फन्दे
 फंसाना, चित्त में देना, सुनिये श्री महा० ॥ १ ॥
 सुमति वचन मान के, आयो आपके द्वार । अधम
 उधारण अन्तर्जामी मेरी सुनिये पुकार रे । मोह
 प्रबल बल, तिनको हटाना, चित्त में देना, सुनि०
 ॥२॥ चिन्तामणी श्री पार्सजीरे, चिंता चूरण हार,
 केसरीचन्द कहे लाज मेरी रखिये करिये विचार
 रे । हूँ जैन प्रकाशक तेरे शरणा, चित्त में देना,
 सुनिये श्री महाराज ॥ ३ ॥



११६. ईश प्रार्थना ।

गर्भ-कथागी ।

भी शासनेश स्वामी, हो संघ के सदाई । शीजे
 दयालु हमको सुख छांति सबदाई ॥ डेर ॥ तूं ई
 दयालु दया नहीं काम्य देव दया । तासे कुरेप
 संघा तज तुमसे ली छगाई ॥ श्री ॥ १॥ कोई बाह
 मागता रे गदिको थिक्का पकारे । तूं बाक्य से
 ड्यारे डुबुझि रे सुकाई ॥ श्री० ॥ २॥ मख ईश शीप
 मार्ग तुमको सुरेश प्यारें । अहमेग्रह ममार्गे
 दिग्दे मं प्यान प्याई ॥ श्री० ॥ ३॥ तेरा जो प्यान
 प्यावे मो रुज मोख पावे । आवागमन मिठावे
 गति पञ्चमी में जाई ॥ श्री० ॥ ४॥ जब ताप को
 मिठाओ परमाव पैक डारो । जब आछरो तिहारो
 लीमा हे नाथ जाई । श्री० ॥ ५॥ श्री सह में एछाई
 प्रसिद्धि न हो प्यवाई । दह कीजे एक्यताई हो
 बिस को मिठाई ॥ श्री० ॥ ६॥ निज दास नाम कीजे
 इतमी मया करीजे । सम्पत्क दास बीजे मायव'
 विनय सुनाई ॥ श्री० ॥ ७॥

१२०. अरिहन्त स्तुति ।

तर्ज-धन्ना श्री आदि ॥

मनाऊँ मैं तो धी अरिहन्त महन्त ॥ टेर ॥ तरु
 अशोक जांको अधलोकत शोक समुह नशत ।
 सुरकृत वारण वरण के नभ से अचित सुमन वर-
 पत ॥ म० ॥ १ ॥ अर्ध मागधी धाणी जांकी योजन
 इक पर्यंत । सुनत अमर नर पशु हिल मिल के
 लमझ सुबोध लहंत ॥ म० ॥ २ ॥ मुनिमन समसित
 चमर अमर गण, प्रमुदित ह्वै ढारंत । स्फटिक
 रत्न के सिंहासन पर, विजत पतिराजंत ॥ म० ॥
 ३ ॥ प्रभावलय तम प्रलय करनहित, दिनकर सम
 दमकंत । पृष्ठ भाग रहि प्रभुजी कैसो, प्रवल प्रकाश
 करंत ॥ म० ॥ ४ ॥ गगन माहिं घन गर्जारव सम
 दुंदुभी शब्द वजंत । तीन छत्र शिर सोहैं तातैं, तूं
 त्रिभुवन को कन्त ॥ म० ॥ ५ ॥ तव सुमरे सुख
 संपत्ति पावे, नरसुर पय प्रणमंत । अष्ट सिद्धि नव
 निधि घर प्रगटे, तेरो जाप जपंत ॥ म० ॥ ६ ॥ माधव

११६ ईश प्रार्थना ।

ग ८-कथाती ।

भी शामभेश स्वामी, हो सय के सहार्थ । रीते
 दयालु हमको सुख छांति सर्वदाई ॥ शेर ॥ तूं ई
 दयालु दया नहीं अन्य देष दया । तासे कुदप
 सेया तज तुमसे ली लगाई ॥ श्री०३१॥ कोई बात
 मारता रे गदिको शिला पछारे । तूं पाक्य से
 उबारे बुबुधि रे सुझाई ॥ श्री०३२॥ यस ईश शीव
 मार्ग तुमका सुरेश प्रार्थे । अहमेन्द्रु मताये
 हिरण्य मं प्रान प्रार्थे ॥ श्री ॥ ३३॥ तेरा ओ स्वाम
 प्रार्थे मो हर्ग मोह पाये । आवागमन मिटाये
 गति पञ्चमी में जाई ॥ श्री० ॥ ३४॥ अय ताप को
 मिटाया परमाय पैच्यारो । अय आसरो तिहारो
 लीनो हे माय प्रार्थे । श्री०३५॥ श्री सङ्ग में एसाई
 प्रतिदिन रहे प्रार्थे । दङ्ग कीजे एकपताई हो
 बिग्न को मिटाई ॥ श्री०३६॥ निज बास आम कीजे
 इनमी मया करीजे । सम्पकरय बाग हीजे मायव'
 प्रियम सुभाई ॥ श्री० ॥ ३७॥

१२०. अरिहन्त स्तुति ।

तर्ज-धन्ना श्री आदि ॥

मनाऊँ मैं तो श्री अरिहन्त महन्त ॥ टेर ॥ तरु
 अशोक जांको अघलोकत शोक समुह नशंत ।
 सुरकृत घाण वरण के नभ से अचित सुमन वर-
 पंत ॥ म० ॥ १ ॥ अर्ध मागधी चाणी जाकी योजन
 डक पर्यंत । सुनत अमर नर पशु हिल मिल के
 समझ सुबोध लहंत ॥ म० ॥ २ ॥ मुनिमन समसित
 चमर अमर गण, प्रमुदित ह्वै ढारंत । स्फटिक
 रत्न के सिंहासन पर, त्रिजत पतिराजंत ॥ म० ॥
 ३ ॥ प्रभावलय तम प्रलय करनहित, दिनकर सम
 दमकंत । पृष्ठ भाग रहि प्रभुजी कैसो, प्रबल प्रकाश
 करंत ॥ म० ॥ ४ ॥ गगन माहिं घन गर्जारव सम
 दुंदुभी शब्द वजंत । तीन छत्र शिर सोहैं तातैं, तूं
 त्रिभुवन को कन्त ॥ म० ॥ ५ ॥ तव सुमरे सुख
 संपत्ति पावे, नरसुर पय प्रणमंत । अष्ट सिद्धि नव
 निधि घर प्रगटे, तेरो जाप जपंत ॥ म० ॥ ६ ॥ माधव

मुनि कर जोड़ बीजसे विनय सुनो भगवन्त ।
 बुद्धि हृदि बुद्धि वैभव देखो अरु सुख साहि
 अमन्त ॥ म० ४७॥ इति



१९१ सिद्ध स्तुति ।

४४-नांव ।

तेबो सिद्ध खरा अथकार । जैसे होवे प्रगल्भ
 कार । देर । अरु अविनाशी अगम अगोचर अमल
 अवल अधिकार । अन्तर्पामी त्रिभुवन सामी,
 अमित शक्ति मंदार ॥ से० ॥ १॥ करपबहु कमई
 महुगुण पुल्ल मुल्ल लंसार । पाथो पद परमिई
 तास पद पन्नी बारंवार ॥ से० ॥ २॥ सिद्ध प्रभु को
 सुमरख जगमें सकल सिद्ध दातार । मन बांझित
 पूरन सुर तरु सम चिता शूरज द्वार ॥ से० ॥ ३ ॥
 जपे आप लोगीश रात दिन, प्यावे हृदय मन्दार ।
 तीर्थकर ई प्रणमें उनको अरु होवे अमगार ॥ से०
 ॥ ४ ॥ सुर्पोदय के समय मक्तिपुत धिर धित

दढ़ता धार । जपै सिद्ध यह जाप तास घर, होवे
 ऋद्धि अपार ॥ से० ॥५॥ सिद्ध स्तुतिये पढ़े भाव
 से, प्रतिदिन जे नरनार । सो दिव शिव सुख पावे
 निश्चय, बना रहे सरदार ॥से०॥६॥ 'माधव' मुनि
 कहें सकल संघ में बड़े हमेश पियार । विद्या
 विनय विवेक समन्वित, पावे प्रचुर प्रचार ॥से०७॥



१२२. श्री ऋषभदेव स्तुति ।

तर्ज-कन्वाली ।

भगवन मरुदेवी के लाल मोक्ष की राह बताने
 वाले राह बताने वाले, आनन्द बढ़ाने वाले ॥भग
 ॥टेर॥ लीना अवधपुरी में अवतार, जग में छागया
 आनन्दकार । सुरनर बोले जय जयकार, सारे
 जिन गुण गाने वाले ॥ भ० ॥१॥ जग में था अज्ञान
 महान, तुमने दिया सृष्टि को ज्ञान । करके मिथ्या-
 मत का भान, केवल ज्ञान उपाने वाले ॥ भ० ॥२॥
 तुमने दिया धर्म उपदेश, जिसमें रागद्वेष नहीं

लेश । तुम हो ब्रह्मा विष्णु महेश शिव मारण
 करगाने वाले ॥ म० ॥ ३ ॥ जग जीवों पै कसबा
 पार तुमने दिया मंत्र सबकार । जिनसे होगये
 सबदधि पार साखों निश्चय साने वाले ॥ म० ॥ ४ ॥
 पैरी कर्म बड़े बलबीर, देखे सब जीवों को पीर ।
 व्यामल हो रहा अधम अधीर, तुम हो धीर
 बधाने वाले ॥ म० ॥ ५ ॥ इति



श्रीमान् प्रवर पंडित कविराज अमीरिपीडी म कृत
 १२३ श्री वीर सुति ।

वने-महा सीता के लीला में बहुतनी बड़ी मूर्खी ।

मोहनगारा व्यास वीर निमन्त्र दिये धसोडी ।
 गुप्तान नायक श्री वर्धमान यिरबा गुप्त रतनारी
 ज्ञान ॥ ६८ ॥ पुण्य पमोता माना विष्णुदासजी
 मगवतीजी न्यासी कृष्ण द्विषो अयतार घर घर
 वर्ते मंगलाचार सुर नर बोले अय अयकार ॥ मो०
 ॥ १ ॥ प्रमुखी परम बैरागी आशी सब सिख संपदा

जी, जग से ममता मोह निवार बन में कीधो उग्र
 विहार तन तप धार्यो दुक्कर कार ॥ मो०॥२॥ उग्र-
 विहारी विचरत देश अनारज में गयाजी । उपसर्ग
 सहा परिपह धीर, ध्यानी तपसी अचल शरीर,
 क्षम्या खूब करी महावीर ॥ मो० ॥३॥ द्वादश वर्ष
 साढा छमास लगे तपस्या करीजी । मध पाचापुर
 उत्तम स्थान, प्रभुजी पाया केवल ज्ञान, सुरपति
 कीधो परम कल्याण ॥ मो० ॥४॥ अष्टादश ढोषण
 धर्जित द्वादश गुणकर सोभताजी । घाणी वर्षे
 अमृत धार, धर्म प्रकाश्यो दोय प्रकार, हरि शचि
 सूरि सुर हर्ष अपार ॥ मो०॥५॥ यज्ञ करैया ब्राह्मण
 एकादश विद्याभरयाजी । शत चुम्मालिस के परि-
 वार, संशय दीनो नाथ निवार, सघला लीधो संजम
 भार ॥ मो०॥६॥ अमिमानी मद मर्दन शरण प्राण
 घालेश्वरजी । जय जय जयत्रिशला के नंद, अमृत
 घड़े पद अरविंद, दीजो बोध बीज आनंद ॥ मो०
 ॥ ७ ॥ इति ॥



१२४ श्री गौतम स्तुति ।

४४-मण्डल ।

येष्टु श्री गौतम मन मायन पायन गद्यपतीजी ।
 साक्षात् मयति पाये दिन दिन हो बढ़ती रतीजी ॥
 सङ्कट विघ्न होय सब दूर ही श्री दायक सुख
 मरपूर ष्टेर ॥ पूष्पीमात तात यमुमूर्ति कुल कञ्चन
 मन्त्रीजी । मेठ्यो वीर प्रभु महाभाग आग्यो पूरण
 मय अनुराग संशय मिथ्यो बन्धो वराग अर्थ-
 शत परिचारे संजम चारे सुधमतिजी ॥ वं० ॥ १ ॥
 प्रभु के जेष्ट शिष्य सुविनीत इन्द्रमूर्ति भसाजी ।
 गौतम गोत्र पवित्र कहाया ऊँची साठ हाथ पर
 काया वस्त्र अल्पम संशय सुहाया देही समचोर
 साकार सार शोभे अतीजी ॥ वं० ॥ २ ॥ दम के
 कमल पुष्पग मिथर्यय तन लेजी मईजी । पद्म वीर
 अमल तनु काँती बरते नाम क्षिपा सुख गाँती
 हृदय अङ्ग धरी हरी भाँती । बसल बीभायी गुरु
 नाबी तप सज्जम पूतिजी ॥ वं० ॥ ३ ॥ आह्वा उग्र

द्विष्य महा द्विष्य घोर तपसी गुणीजी । घोर उदार
 घोर ब्रह्मचारी, ममता सोभा तनु परिहारी, सीतल
 लेश्या महा हितकारी, तेजू लेश्या है, संचित
 द्विष्य मोटा जतीजी ॥ वं० ॥४॥ मंगलकारण दुःख
 निवारण कष्ट विदारणाजी । संशय भेटन के हित-
 कार, पूछ्या प्रश्न अनेक प्रकार, भरते चरते सुख
 आधार, अष्ट सिद्धि नोनिघ रिद्धि पंकज पद राजे
 छतीजी ॥ वं० ॥ ५ ॥ ज्यांके नाम मंत्र की महिमा
 कहत बने नहींजी गौतम गुण मणि है, गुणरास,
 केवल कमला लील विलास, पूरे मन वांछित सब
 आश, व्यावे ध्यान अमीरिख पावें शिव शाश्वत
 गतीजी ॥ वं० ॥६॥ इति

१२५. गौतम स्वामी का स्तवन ।

गौतम नाम आधार, हमारे गौतम नाम आ-
 धार । सुख सम्पत्ति दातार, हमारे ॥ टेर ॥ वाद
 करण श्री वीर से आया घर अहंकार । संशय

हर संजम श्रियो पंच सया परिवार ॥ ६० ॥ १ ॥
 शशि वपणी निपटी रचे पूर्ण वराधार । निरंतर
 कट ९ करे तपस्या बुद्धर कार ॥ ६० ॥ २ ॥ तीस
 वर्ष मनु मक्ति में रक्त रछे गणधार । सिद्ध बुद्ध
 बुद्ध डारके मुक्ति मया अधिकार ॥ ६० ॥ ३ ॥ शशि
 शशि मासनी अक्षय सुख मयधार । वायक मन
 वंछित सदा बेड़ा अगाधो पार ॥ ६० ॥ ४ ॥ कमपेनु
 सुरतक मधि अक्षर अर्थ विचार । प्रवच ही श्री
 सम्पत्ते पार्थ पद अकार ॥ ६० ॥ ५ ॥ प्रात उठ गीतम
 अर्थ हर मन अयाधार । सकल विद्य मय उपसर्ग
 बरें मंगलाधार ॥ ६० ॥ ६ ॥ इन्द्रप्रस्थ अक्ष सत्तरे
 अक्षर अर्थ स्वीकार । आरिभक्त बल देको प्रभु
 बन्धु पारधार ॥ गी० ॥ ७ ॥ इति



११६ मनु पार्ष्ण उपदेश ।

॥ १ ॥

भोगी से पार्थ करमाते भुनी में नाग काया
 है बचायो इसको अस्त्री से मरे बेराक कराया

है ॥टेर॥ बदन नाजुक विचारों का उसे अम्माने
 पाला है, मरे तेरी कचेरी में अरे ! धक्धक्ती
 ज्वाला है ॥जो० १॥ अज्ञानी छोड़ दे हठ को समी
 का जीव बहाला है । तिरे नहीं पाप करनी से मोक्ष
 मारग निराला है ॥ जो० ॥२॥ लकड़ को चीर प्रभु
 जी ने नाग नागिन निकाला है, दिया नवकार का
 शरण जड़ा दुर्गति का ताला है ॥ जो० ॥३॥ हुये
 धरणेन्द्र महाराजा पद्मावती नाग वाला है, पूरे
 आशा सकल मन की शासन के रत्नपाला है ॥जो०
 ॥ ४ ॥ मिथ्याती मान मर्दन को अटल वामा के
 लाला है । अमीरिख दास चरनों का वचन संखे
 में ढाला है ॥ जो० ॥५॥ इति ॥



१२७. प्रभु महावीर कीर्तन ।

गजल ।

सौभाग्यी नन्द प्रियला के, तुहीं महबूब प्यारा
 है । तेरे कदमों के चाकर को, मिला मोटा सहारा
 है ॥टेर॥ जहां फानी तर्क करके चले वन में मुनी

बस है । द्रव्य भीर भाव सुध योगी, कठिन तप
 ध्यान धारा है ॥ सी० ॥१॥ मनुष्य द्विपान देवों के
 परिपक्व को सहै तम में । अजब तेरी हमा भाग
 देव सङ्गम भी हारा है ॥ सी० ॥ २ ॥ ठोड़ अजीर
 कर्मों की बने सबैय अगच्छता । दिया उपदेश दु-
 मियाँ को मोह मारण उचारा है ॥ सी० ॥ ३ ॥ तुर्क
 गौतम सुधर्मने करी बिल से तेरी सिद्धमत, करी
 बकसीस कैवल की वसे बुनियाँ से तारा है ॥ सी०
 ॥ ४ ॥ गुम्हा से पूर ॥ मास्कि तुर्की रहमत का
 दरिया है । निगाह है महि की मिस पे गुम्हा
 कैसा विचारा है ॥ सी० ॥ ५ ॥ गुम्हा बकसी अमी-
 रिक को बुलायो अपने कदमों तक । मला पा है
 दुरा तो भी नव व्यारा गुम्हारा है ॥ सी० ॥ ६ ॥



१९८. प्रभु स्तुति ।

तर्ज-कव्य ।

कहो आता अग जाता प्रभु महावीर की अय
 हो । धर्म दाता पिता माता प्रभु महावीर की अय

हो ॥ टेर ॥ त्रिकालिक द्रव्य त्रैलोकी चराचर जो
 पदारथ है । सकल दर्शी सकल ज्ञाता, प्रभु महा-
 वीर की जय हो ॥ क० ॥ १ ॥ गरीबों पै दया करके
 दिया उपदेश तिरने का । अराधे स्वर्ग शिवपाता,
 प्रभु महावीर की जय हो ॥ क० ॥ २ ॥ वीरवाणी
 सुधासानी करे मिथ्यात्व ग्रहहानी । निजातम
 बोध की दाता प्रभु महावीर की जय हो ॥ क० ॥
 ३ ॥ स्यादवादी अनेकान्ती, वचन अविरुद्ध श्रीजी
 के ॥ सुने सब भर्स मिट जाता, प्रभु महावीर की
 जय हो ॥ क० ॥ ४ ॥ अमी चरनों के चाकर को,
 दया करके दर्श दीजे । रहे आनन्द सुखशाता,
 प्रभु महावीर की जय हो ॥ क० ॥ ५ ॥



१२६. श्री शान्तिनाथ की गजल ।

तर्ज—माता कोशल्या के लाल ।

साहिव शान्तिनाथ भगवान, शान्ति वरताने
 वाले । शान्ति वरताने वाले आनन्द बढ़ाने वाले ॥

साक्षि० ॥ डेर ॥ पिता श्री अम्बसेन भूपाह प्रभु
 अभिरा लाल बपाल । तुम हो जगत श्रीव गजबाल
 मिरगी रोग मिटाने वाले ॥ १ ॥ एक महल पुन्य
 परिवार प्रभुजी कीना संवस मार । नर सब दिवा
 गजमंदार जग से ममल हलाने वाले ॥ २ ॥ लीना
 केवल कर्म कपाय सुगहुर पति सेवे तलपाय ।
 जिन वचन सुना बरसाय मुगली पन्थ बताये
 वाले ॥ सा० ॥ १ ॥ प्रभुजी मैं हूँ बीन अमाय अब
 गृहो कपाकर हाथ । रिपु कर्म लगे हैं साथ अरि
 को दूर भगाने वाले ॥ सा० ॥ ४ ॥ प्रभु तुम जगत
 पती जिनराज मेरे सकल सुधारो काज । रखिये
 तुम सेवक की आज हो मय फल्य सुदामे वाले
 ॥ ५ ॥ दुख सब चिन्ता विघन विहार प्रभुजी दीजे
 काज सुधार । गृहे अविचल रिष भंडार सुख
 संपनि दग्गमाने वाले ॥ ६ ॥ अपता माय छदित मित
 मेघ शानाकारी हैं जगदीश रिष असूत अविचल
 मेघ आनम रिख मिलाने वाले ॥ सा० ॥ ७ ॥

१३० महावीर प्रभु ।

क.आली ।

महावीर प्रभु मुझे बचाओ अरजी सुना रहा हूं । निजदास को निभाओ, अरजी सुना रहा हूं ॥
 टेर ॥ चारों गती में भटका कर्मों ने खूब पटका ।
 लाचार हो रहा हूं, अरजी० ॥ १ ॥ माता उदर में
 तकलीफ बढ़ोत पाया । दुख को भुला रहा हूं,
 अरजी० ॥ २ ॥ बालक पने में खेला, जोवन हुआ है
 गेला । धन्धे में फँस रहा हूं, अरजी सु० ॥ ३ ॥
 जब की जरा ने घेरा, उस वक्त कौन तेरा । तू
 नाम ले रहा हूं, अरजी० ॥ ४ ॥ कर मेहेर पार
 करना, लीना है तेरा शरना । गुण तेरा गा रहा
 हूं, अरजी० ॥ ५ ॥ अमृत ने कह सुनाया, लिख के
 रतन ने गाया । चरणों में आ पड़ा हूं, अरजी सुना
 रहा हूं ॥ ६ ॥ इति



१११ भी शान्तिनाथ प्रभु की गजस्र ।

आमन्द के करिया शान्ति जिनम्ह स्वामी ।
 पुनः कष्ट के हरैया शान्ति जिनम्ह स्वामी ॥ ३८ ॥
 सर्वाय सिद्ध हो आये कष्टहु पुरुष लाये । मिरगी
 म्पया हरैया शान्ति जिनम्ह स्वामी ॥ ३९ ॥ पद
 कदकी ये धरती चोतराग्न आसु बरती । नरदेव
 पद धरैया शान्ति० ॥ ४० ॥ अग स्वाग धर्म धारे,
 दिगु कर्म को निहारे । केवल रमा वरैया शान्ति०
 ॥ ४१ ॥ धर्मोपदेश दीया रास्ता बताया सीया ।
 मचितार के तिरैया शान्ति० ॥ ४२ ॥ दो बीस पदुष
 काबा अन्न वर्ष आयु पाया । मूम चिन्ह के सो
 मैया शान्ति० ॥ ४३ ॥ अथ अष्टिष हए समाधि
 त्रिकुण्य योग व्याधि । सब काज के सरैया शान्ति०
 ॥ ४४ ॥ असुत दयाल पाया त्रिक बीतने पों गाया ।
 हो मुक्ति के बैसैया शान्ति जिनम्ह स्वामी ॥ ४५ ॥



१३२. वीर प्रभु से अर्ज ।

तर्ज—कव्वाली ।

शासनपति हो श्रीजी, सिरताज तुम हमारे ।
अवगुण भरा है लेकिन, चाकर हैं हम तिहारे ॥
देर॥ दोषों पे ध्यान दोगे, तब तो कहां ठिकाना ।
फरजन्द में होय गलती वालिद उसे सुधारे ॥ १ ॥
हम ओगुनों से भारी, खल दुष्ट पापचारी । लेकिन
दया तुम्हारी, अध पुंज सब बिदारे, शासन० ॥ २ ॥
भारत के प्राणियों को, आधार आगमों का ।
साधे हैं धर्म अपना, उसके ही सब सहारे ॥ शा०
॥ ३ ॥ शासन के देव देवी, हो धर्म के सहायक ।
दीजे विवेक अपना, हालत को हम सुधारें ॥ शा०
॥ ४ ॥ सिद्धार्थ नृप दुलारे, त्रिशला के लाल प्यारे ।
शरणे अमी तुम्हारे, कर सिद्ध काज सारे ॥ शा०
॥ ५ ॥ इति



१३३ श्री पैपठ यत्र चौबीस जिन ।

नामनी ।

चौबीस जिनेश प्रथम दशेश अथ अष्टिष
 पक्षेश भय भय हरण । अथ अथ जिनेश वरन
 आनन्द सुख शानि वृद्ध मातल करण ॥ देर ॥
 शिवादेवी नन्द आनन्द कन्द नैमी जिनम् सदा
 स्वामी । सुविधि दयाल भन धर्म पात श्यवी
 दयाल अमृत्यामी । कानी अमृत सुनि सुमय
 कन्द ममि मदन मन्थ चारे शरणा ॥ अथ० ॥१॥
 अति अजित जीन शशि प्रभु पुनीत श्री कृपम
 उदीन दुल धर्म पति स्वामी स्वामी सुपाश मुज
 पूगे आश बुद्धि प्रकाश को विमल मती । मल्लि
 मे मल्ल धरि ले अटल मनु प्रभु पचीस हरित
 बरणा ॥ अ०॥२॥ अरुणाथ वीर महावीर वीर हर
 पीर वो सुख शाना सुमती की आश दो सुमति
 नाथ नम जोड़ हाथ मांगू दाता ॥ मज पथ कथ
 नव जोड़ कथ दो मोछ मथ दातो मरता ॥ म०

॥ ३ ॥ वासुपूज्य जाप, शीतल प्रताप, हर चिपय
 ताप, रुद्रो शीतल । श्रेयांश देव सब करे सेव,
 कुंधु कुदेव, कर दूर सकल । पारस दयाल, करिये
 निहाल, अमिनंदन, जिन तारण तरणों ॥ ज०॥४॥
 मन्त्रों में मंत्र पेंसठ का यन्त्र, तन्त्रों में तंत्र, नित
 ध्यान धरे । करे सकल सिद्ध, यश रिद्ध वृद्ध,
 वद्धित समृद्ध, भंडार भरे । कहें अमीरिख, परचा
 प्रत्यक्ष, गुरुदेव सीख, हिरदे धरणां ॥ ज० ॥५॥



१३४. श्री नेमनाथ प्रभु को हालरियों ।

सर्ज=चेतन चेतोरे ।

यावे हालरियो २ मा शिवादेवीजी नेम कवर
 नेरे ॥टेर॥ समुद्र विजयजी का नन्दलालजी, शिवा
 देवीजीरा जायाजी । अपराजित वंमान से, सोरि-
 पुर में आयाजी ॥ १ ॥ आओ मेरे लाला सब जग
 व्हाला, माता इण पर बोलेरे । कण्ठ लगावे हरष
 हरष, बेसादे खोलेरे ॥२॥ शिरपर तिलक तम्बोल

विराजे माता पुन रमावेरे । हाथे कङ्किया पाँप
 घुँघरिया सब मन भावेरे ॥ गा० ॥ १॥ माथे मुकुट
 कामे हो कुण्डल बाँहे बहिरखा सोवेरे । रत्न
 अङ्ग का पालना में अधिक मोहेरे ॥ गा० ॥ १४॥
 आँने आभरा नेमकबरजी परदा परदा सित
 आवेरे । माता साथ हाता पकड़ मूला पकड़ावेरे
 ॥ गा० ॥ १५॥ आघो कंबरजी द्वार पहिनाई, टोपी
 रत्न अङ्गुली रत्न अङ्ग का पालना में बैठ
 कुमारीजी ॥ गा० ॥ १६॥ हरव घरीने शिवादेवीजी,
 प्रभु मुख दर्शन मिरखेरे । रमकम रमकम फिरे
 महिला में हियको हरखेजी ॥ गा० ॥ ७ ॥ मयी
 सुखकी शिवादेवीजी प्रभु के श्रीमन्त कावेरे ।
 जाना जाहु मरस अखेबी पैचर तावेरे ॥ गा ॥ १८॥
 रत्न अङ्ग का पाल कपोला प्रभुजी में पुरसावे
 रे । मरमल रेशम गाथी ऊपर बैठ सितावेरे ॥
 गा ॥ १९॥ माता का तो बकरी मकरा रेशम डोर
 बटावेरे । हरव घरीने शिवादेवीजी पुन सितावे
 रे ॥ गा० ॥ २०॥ हाथ जोड़ यों कहत अमीनिक ओ

हालरियो गावेरे । गोग शोग सब दूरा न्हासे नव-
निध पावेरे ॥ गा० ॥११॥ इति

१३५. स्तुति ।

तर्ज=होटी गज्ज ।

वैशाली नाथ धीर वीर धार के भजो ।
त्रिशला के लाल हैं दयाल भर्म सब तजो ॥ टैर ॥
चउवर्ण शर्ण धार सकल सिद्धि साधजो ।
लगा के पलक देख झलक ज्योति में मजो ॥वै० १॥
डुक दिल की चश्म खोल तोल धर्म परखजो ।
निर्वद्य सार धार के सावद्य त्यागजो ॥वै० २॥
हलदी पतंग, रग ज्यों तन धन विचारजो ।
जग भोग विषय रोगमें कुछ भी नहीं मजो ॥वै० ३॥
हिंसा प्रमाद सङ्ग बुरे व्यसन से लजो ।
उपकार दया धर्म काज सिंह ज्यों गजो ॥वै० ४॥
अमृत सांची सीख ठीक दिल में धारजो ।
जिनवाणी प्रेम से सुनोनिज आत्म तारजो ॥वै० ५॥

धिराजे माता पुन रमावेरे । हाथे कड़िया पाँप
 पुष्परिया खस मम भावेरे ॥ गा० ॥ १॥ माथे मुकुट
 कामे रो कुण्डल पहि बहिरना सोवेरे । रतन
 जड़ित का पालना में अधिका माहरे ॥ गा० ॥ १॥
 आने आसना मेमकंवरजी परदा परदा सिस
 भावेरे । माता लावे हाता पकड़ मूँधा पकड़ावेरे
 ॥ गा० ॥ १॥ आघो कंवरजी हार पहिनाई, डोपी
 रतन जड़ाऊंजी रतन जड़ित का पालना में बैठ
 कुजाऊंजी ॥ गा० ॥ १॥ हरप धरीमे शिवादेवीजी
 प्रभु मुख वर्यम मिरावेरे । रसमम रसमम फिरे
 महिला में हियको हरखेजी ॥ गा० ॥ ७ ॥ नवी
 सुलकी शिवादेवीजी प्रभु के भीमम कावेरे ।
 लाजा लाड सरस अखेजी बेबर तावेरे ॥ गा० ॥ ८ ॥
 रतन अकन का पाल कपोला प्रभुजी ने पुरसावे
 रे । मकमल रेशम गापी ऊपर बैठ जिमावेरे ॥
 गा० ॥ १॥ सोना का तो चकरी मंथरा रेशम डोर
 बटावेरे । हरख धरीमे शिवादेवीजी पुन सिखावे
 रे ॥ गा० ॥ १० ॥ हाथ जोड़ यों कहल अमीरिख ओ

१३७. पानी विषे ।

तर्ज=होनी ।

मनपीजो २ जल को कोई छारया विना ॥टेर॥
पाप घणो अण छारया जल में, असजीव घणा
मीणा भीणा ॥म०॥१॥ मेरी जीव घणा जलमांही,
पिया होय तन रोग घणा ॥म०॥२॥ व्रत एकादशी
पूजा अरचा, अन छारो जल निकुल गिना ॥ म०
॥३॥ मत्स वधिक से पाप अधिक है विष्णु पुराने
श्लोक सुना ॥ म० ॥४॥ मूत्र ठाणंगे चार बोला में
जल शुद्धि का कहा गलना ॥ म० ॥ ५ ॥ पाप कटे
तन रोग मिटे हैं अमृत वचन सुन धारो सुगना
॥ म० ॥६॥ इति



१३८. श्री मुनि सुव्रत स्तवन ।

तर्ज=सती शिरोमणी अजना ।

श्री मुनि सुव्रत साहिबा, दीन दयाल देवां
तणां देव के तारण तिरण प्रभु तुम भणी, उज्ज्वल

(२०६)

१३६ भजन उपदेशी ।

उर्ध्व-मण्डल ।

सधा मियाँत हमसे छिपाया नहीं जाता । कूड़े
को कभी सत्य बताया नहीं जाता ॥ ३६॥ मुखकोप
निगल दोष है तारक अर्दान के । सद्गोपी रेष
प्यान में लाया नहीं जाता ॥ स० ॥ १॥ सारंगी स-
परिमही मिथ्या आर्द्धयरी निगुन को अपना सर
पे छुकाया नहीं जाता ॥ स० ॥ २॥ सचय अर्द्धिसा
विनयमूल धर्म बीर का । द्विसा धर्म पे मन को
लगाया नहीं जाता ॥ स० ॥ ३॥ मिथ्य जन वैम एन
नहीं बिरुदना । साचय गणोक हमसे सुनाया नहीं
जाता ॥ स० ॥ ४॥ कहत अमीरिल बीर कील अडल
टि । दुनियाँ में किसी से हराया नहीं जाता ॥ स०
॥ ५ ॥ इति

१३७. पानी विषे ।

तर्ज=दोनी ।

मनपीजो २ जल को कोई छारया विना ॥टेर॥
 पाप घणो अण छारया जल में, ब्रम्जीव घणा
 भीणा भीणा ॥म०॥१॥ मेरी जीव घणा जलमांही,
 पिया होय तन रोग घणा ॥ म०॥२॥ ब्रत एकादशी
 पृजा अरचा, अन छारो जल निकुल गिना ॥ म०
 ॥३॥ मत्स वधिक से पाप अधिक है विष्णु पुराने
 श्लोक सुना ॥ म० ॥४॥ सूत्र ठाणांगे चार बोला में
 जल शुद्धि का कहा गलना ॥ म० ॥ ५ ॥ पाप कटे
 तन रोग मिटे हैं अमृत घवन सुन धारो सुगना
 ॥ म० ॥६॥ इति



१३८. श्री मुनि सुव्रत स्तवन ।

तर्ज=सती शिरोमणी अजना ।

श्री मुनि सुव्रत साहिबा, दीन दयाल देवां
 तणां देव के तारण तिरण प्रभु तुम भणी, उज्ज्वल

विष्णु सुमर्षे नित्य मेव के ॥ १ ॥ श्री मुनि सुमत्त
 साहिबा ॥ डेर ॥ हूँ अपराधी अमादि को जनम
 जनम गुन्हा किया भरपूर के । सुटिया प्राण सब
 काय का खेविया पाप अठार करारतो ॥ श्री० ॥ २ ॥
 पूरन अशुभ कर्तव्यता ते प्रभु दिमखा तुम बिचार
 के । अपम बखारब विदध के शरन आवो अब
 कीजिये सार के ॥ श्री० ॥ ३ ॥ किंचित पुण्य परमात्म
 से इन भव ओ लक्षियों श्री शिव धर्म के । निरुप
 नरक निगोब से पहची अनुग्रह करो परिग्रह के
 ॥ श्री ॥ ४ ॥ साधु पक्षो नहीं संभ्रमो भावक मत
 नहीं किया अणीकार के । आदर्श तो न आरा-
 धिया तेहची रुखियों हूँ अनन्य संसार के ॥ श्री०
 अब समकित मत आदर्शों तदपि आराधक हुई
 तर्क भव पार के । जन्म जीतथ सफलो हुबे इन
 पर बिमनु बार हजार के ॥ श्री० ॥ ५ ॥ सुमित्र मरा-
 थिय तुम पिता धन धन श्री परमात्मती माय के
 तस मुत बिभुजन तिलक लूँ बन्धन विमयबन्ध
 बार हजार के ॥ श्री० ॥ ६ ॥

१३६. अठारह पाप आलोचना ।

तर्क-सलित छन्द ।

परम देवनो देव तूं खरो, घर्म ताहरो में नथी
 कर्यो, भरममां भस्यो तूं नवी गस्यो, करमा फा-
 समां हूं अति दस्यो ॥ १ ॥ गरीब प्राणीनां प्राण में
 हणया, बसथावरो जीव नां गणया, थरर धूजतो
 मोतथी डरी, अरर एहवी घातमें करी । २ ॥ सत्य
 सभा जई भूठ घोलिया, धर्मी जीवना मर्म खो-
 लिया, सद्गुणी सिरे आल आपिया, अरर पापना
 बंध थापिया ॥ ३ ॥ अदत्त दानथी हूं नविड्यो, पर
 धन हरी केल में वर्यो, तस्करों तना तान में चढ्यो
 अरर पापना पुंजमां पढ्यो ॥ ४ ॥ रमणी रगमां अङ्ग
 राचियो, विषय सुखमा चित माचियो, शियल
 भंग नो दोष ना गणयो, अरर हायरे बाहुरो वणयो
 ॥ ५ ॥ अथिर दाममां हूं रयो अझी, वात धर्मनी
 चितनां चढी, उधत मोहमा हूं पढ्यो अती, अरर
 माहरी श्रुं थसे गती ॥ ६ ॥ करूर भावथी क्रोधने

मही सज्जन बुद्धि रोपमा रही । सब संपत्ति
 न्यप छोड़ियो तरु तुलसी तुल्य हूँ धर्यो ॥ ७ ॥
 मत्सर मद्यपी में बहु कर्यो ममत्त भाव में हूँ अही
 मर्यो । मद्य द्रव्य अन्धो मानमा अन्धो विनय ना
 कर्यो गर्यमा अन्धो ॥ ८ ॥ दगलवात्रियें हूँ बहु रम्यो
 कपट कदमा काल निर्गन्धो । मुख मीठ कही भेषि
 बोलवी अरर कैमरे भूल से मची ॥ ९ ॥ धन हिर
 कणी मोती में मची अशुभ अर्थनो हूँ धर्यो धर्यी ।
 अधिक आशानो अररे अची अरर लोभमे ना
 सफरो हली ॥ १० ॥ मगल विस्त बी भ्यामनी परे
 रत स्वार्थमा पोषिया परे । तरुने तरु कम्भमा
 कर्यो अरर गंधी हूँ नवी तरुयो ॥ ११ ॥ दित
 दूरी रक्षा उप दम्भमा गुन मची गण्यु मेरी
 मधमा । अन्ध कालकी रोषची मरी अरर सर्वनो
 हूँ धर्या अरी ॥ १२ ॥ मित्र कुटुम्ब मे व्यात जातमा
 अहिण्ड्यो बहु बात बातमा । अशुभ आतमा धा-
 तमा यन्त्रा अन्ध कलेशना रूपमा पश्यो ॥ १३ ॥
 अन्धदुता दिवा आल अन्धमे अधिक ऊचरी

मेल्युं धन्यने । सनगुरु तणो संगना कर्यो, अरर
 पापनां पुंजमां पढ्यो ॥ १४ ॥ परनी चोहटे चुगली
 करी, नृप सभा भूठी सायदी मरी । पिशुन धूर्त
 हुं लाच लालची, पशु पणें रह्यो पापमां पची ॥ १५ ॥
 पर पूठे परा दोष दाखिया, जस तणो घणो स्वाद
 चाखिया । रहस बात तो में करी छुती, नव अर-
 एयमा रूलियो अती ॥ १६ ॥ अधम काममां हर्ष में
 धर्यो, धर्म ध्यान में अमरवे भर्यो । दुर्गुणे रच्यो
 मोहमां मच्यो, अरर कर्मना नृत्यमां रच्यो ॥ १७ ॥
 छल विद्या करी कर्थ संचिया, छुटण विदया लोक
 वंछिया । पतीत रांकने छेतया वहू, अरर पाप हुं
 केटला कहूं ॥ १८ ॥ शरीर शोधतो में नवी कर्यो,
 जड़ प्रसंग थी योनि में फर्यो । शुध विचार तो
 चित ना चढ्यो, मिथ्या शल्य तो मुज ने नढ्यो ॥
 ॥ १९ ॥ करम वैरिये बीटियो मने, कर ग्रही करूं
 अरजी जीनने । कर ग्रहो प्रभु रांक जानने, दिल
 दया धरो म्हेर आनने ॥ २० ॥ तकसिरों घणी को
 सके गणी, बगस तो गुन्हों जगतनां धणी । रींभ

करी खरी तोड़ि जायने, सरस रसखो कोठिवास
ने ॥२१॥ नैब जुझा बाही बम्बूमा प्रही, बाहुमांस
में बद्धे रही । ललित धवली ओढ़ ये कही पठिष
प्राक्षिषे पश्चिम सही ॥ २२ ॥ इति



१४० श्री पद्मावती आलोचना ।

१४-भाषी ॥

द्विजे गच्छी पद्मावती जीधरसि लमाये ।
आखपर्यु जग दोहीहुं इन बैला बाब-ते मुज मि
अहामि बुझइ ॥१॥ मय अमताए करी अदिष्टनी
गान । जैसे जीध विराधिया ओरसी लाय ॥ ते
मुज ॥ २ ॥ तान मान पूष्वी तथा, साते अप-
काय । मान मान तइकायना साते बली बाय ॥ ते
मुज ॥ ३ ॥ दश मान मत्येक पद्मावती कीदइ
साधारण जा । ये इन्द्रियादिक जीधना बेचे लाय
विचार ॥ ४० ॥४॥ बैब तिर्यक ने जाखी बाद २
मान प्रकाश । कीदइ लाय मनुष्यना बद लाय

चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इह भव परभव सेविया, जेमें
 पाप अठार । त्रिविध त्रिविध परहरूँ दुरगति
 दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी बोल्या
 मृषावाद । द्रोप अदत्ता दाननां, मैथुन उनमाद ॥
 ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध
 विशेष । मान माया लोभ में कर्या वली रागने द्वेष
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ क्लेश करी जीव दूहव्या दीधा कूडा
 कलंक । निन्दा कीधी पारकी रति अरति निशंक
 ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी खाधी चोंमरे कीधो था-
 पण मोषो कुगुरु कुदेव कुधर्मनो भलो आयो
 भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीनां भव में किया कीनी
 जीवनी घात । चीड़ी मार भव चरकला मार्या दिन
 ने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ मच्छि मार भव माछला भाल्या
 जल वास । घीवर मील कोली भवे मृग पाडिया
 पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुत्ता ने भवे, पढ्या मंत्र
 कठोर । जीव अनेक जिमे कर्या कीधा पाप अघोर
 ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटचाले भव में किया, आकरा करने
 दण्ड । बन्धीघान मराविया कोरडा छंडी दंड ॥ ते०

परमाधामी मां भवे दीपा मेरिषामे दुख वेदन
 मेदन वेदना ताडन अतितीका ॥ ते० ॥ १४ ॥
 कुमारना मभ मे छिया काका निवारकाया तेकी
 मभे तिल पीछिया पाप पिड मरणा ॥ ते ॥ १५ ॥
 हाकी मभ हलके छिया फोर्या पूष्पीनां पेड । छुट
 निबस कीधावका दीपा बलदचपेड ॥ ते० ॥ १७ ॥
 मामीनां मभ रोपिया नाना विविध से सुख मूल
 पत्र फल फूलनां लाग्या पाप अलख ॥ ते० ॥ १८ ॥
 अथापार्थियानां मभे मरियो अधिको मार । पोसी
 ऊंट कीका पख्या आसी दया न सिगार ॥ ते० ॥
 १९ ॥ दीपाना मभे छितयां कीला रंगव पास ।
 अग्नि आरंभ कीचा मसा पातुवाई अम्प्यास ॥ ते० ॥
 २० ॥ छुरपये रस भूमनां मायां मानुष्य बुद्ध ।
 मभ मांस माकस मस्या लाभा मूल ने कम्प ॥ ते० ॥
 २१ ॥ जाय लखाई पातुमी अचगल पायि उलेप्या
 आरंभ कीची अति बसा पोते पापत्र सिध्या ॥
 त० ॥ २२ ॥ इहान कर्म कीधावली भवे दीपा ।
 मूल जाई बीजगगनी कुरा कोपक कीपा ॥ त० ॥

॥२३॥ विदल्ली भव उंदरगल्या, गरोली हत्यारी ।
 मूढ़ मूरख तणे भवे, जूं लीख मै मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥
 भडभुंजा तणे भवे, मार्या एकेंद्री जीव । ज्वार
 चणा गोऊं सेकिया, पाडंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥
 खांडण पीसण गारीनो, आरंभ कीधों अनेक ।
 रांधण पीसण अग्निनां, पापलाग्या विशेष ॥ ते०
 ॥२६॥ विकथा चार कीधी वली सेव्या पञ्च प्रमाद ।
 इष्ट वियोग पडाविया, रोदन विषवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥
 साधूने श्रावक तणा, व्रत लेइने भांग्या । मूल ने
 उत्तर तणा मुज दूषण लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ सांप
 बिछी सिंह चीतरा, सकराने समली । हिंसक
 जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥
 सूवावड दूषण घणां, काचा गर्भ गलाव्या । जे
 पानी ढोल्या घणां शील व्रत भंगाव्या ॥ ते० ॥ ३० ॥
 धोवीनां भवे जे कर्या, जल जीव सुकाया । धूल
 करी जल रेलिया, दान बेतां निवार्या ॥ ते० ॥ ३१ ॥
 लुवारना जे भव कर्या, घड्या शस्त्र अपार कोस
 कुदाला ने पावडा, धग २ ती तलवार ॥ ते० ॥ ३२ ॥

गूस्तरना मय में कर्पा सीसा माप कटाया । पाकी
 ने पेसां मेठिया, बाड़े ऊठी है ज्वाला ॥ ते० ॥ ११ ॥
 ओइनां मय जे कर्पा कृषा पाप जोड़ाया । सरो
 वर मे गलाविया बलि डांका बंधाया ॥ ते० ॥ १४ ॥
 बाधिपत्तां मय जे कर्पा कृषा सेक सिखाया ।
 ओछो देय अघिको लिपो कृडा माप रकाया ॥
 ते० ॥ १५ ॥ हाथीनां मय जे कर्पा बैलकी बिह
 रिया । पंथी माता बूधिपा पापे पैटज मरिया ॥
 ते० ॥ १६ ॥ केरीने कोठी बका बली निजुजमोरीया ।
 राई बलाई शंकरे पोते पापज सिन्ध्या ॥ ते० ॥ १७ ॥
 अयमल मांघरु मेठिया अय पूंसे चूल्हे । अय
 माण्या कय भारिया त पाप किम भूले ॥ ते० ॥
 १८ ॥ मय अनेक समता यका कीधा कुड्म
 संबध । त्रिविध २ बोलक, तेनो हुं प्रतिबंध ॥ ते०
 ॥ १९ ॥ मय अनेक समता यका कीधो देह संबध ।
 त्रिविध २ बोलक तेनो हुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ २० ॥
 मय अनेक समता यका कीधो परिग्रह संबध ।
 त्रिविध २ बोलक तेनो हुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ २१ ॥

इन परे इह परभवे कीधा पाप अखत्र । त्रिविध र
 चोसरू, करुं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ४२ ॥ खाती ना
 भव मैं किया, लीला रूख कटाया । छोटा ने बलि
 मोटको, पोते पाप कमाया ॥ ते० ॥ ४३ ॥ ब्राह्मण रे
 भव मैं किया, कीधा अण्णगल स्नान । जोतिष
 निमित्त भाखतां, लिया वज्र दान ॥ ते० ॥ ४४ ॥
 वजाजनां भव मैं किया जूना नवि करि बेच्या ।
 कूड़ कपट केलव्या घणा पोते पापज संच्या ॥ ते०
 ॥ ४५ ॥ परनारी मैं भोगवी वेश्या ने विधवा । चोरी
 जारी मैं करी बोलया मरम मैं मोषा ॥ ते० ॥ ४६ ॥
 पुरुष पराया सेविया घरका ने बली दूजा । कीतोल
 हांसी ने मस्करी दीघा मरम ने मोषा ॥ ते० ॥ ४७ ॥
 अण छ्वाण्यां आदण दिया अण पुंजे चुल्हा । अण
 सोध्या धान ओरिया ते किम जाय भूला ॥ ते० ॥
 ॥ ४८ ॥ जोर करी हिंढे हिंचता भांगी तरुवर डाल ।
 काचा फल फूल चूंटियां फोड़ी सरवर पाल ॥ ते०
 ॥ ४९ ॥ भोषा भरडाने भवे कण्हता नचाबा ।
 चकरा भैंसा मुरगावली बिना दोष लगाया ॥ ते०

॥१०॥ ग्हावण घोषण मैं किया बेशु बाधा मराया ।
 मारी से मुख जोबता बहु दोष लगाया ॥ ते ॥ ११ ॥
 सुख्या धाम वलाविया ईसीधन मसलाया । धने-
 रिया भीर तमेरिया मसली पाप कमाया ॥ ते० ॥
 १२ ॥ दासी वेश्याने मने खोरी मारी मारी । मारो
 ही बिसन सेपिया कुतुबी कमाई ॥ ते० ॥ १३ ॥
 असुर मने मैं अपमो मुरगी गाव मराई । पंखी
 पिंजरे पाड़िया करुणा नहीं लाई ॥ ते० ॥ १४ ॥
 बिक्रम होछा बीड़ी पीपी बिन देख्या मझी ।
 जीव घांस बलिया घणा होसी परम ज्वारी ॥ ते० ॥
 ॥ १५ ॥ येद मजानी मालिया महरक हनुमान ।
 आठ मज मैं हककरी दिया करमादान ॥ ते० ॥
 १६ ॥ माखी माका कोतिया मंथर घर हाया ।
 छलिया धाम वलाविया पाये येद मथया ॥ ते० ॥
 १७ ॥ येकपारीरा मज मैं किया खीया मधुमता
 आहार । ईस्या में धर्म बलावियो आई दया न
 सिगार ॥ ते० ॥ १८ ॥ गुहखी केरा हकका खाया
 मजतीबाग । करणी कुछ बीपी नहीं पड़िया करक

मम्भार ॥ ते० ॥ ५६ ॥ निंदा कीधी साधुनी, शुद्ध
 साधु सताया । कुगुरां संग लागने बहुला दोष
 लगाया ॥ ते० ॥ ६० ॥ रेरे कर्म कीधा घणा, पाप
 कीधा अपार । ये पाप उदय में आविया, पीछे
 किरणो आधार ॥ ते० ॥ ६१ ॥ अरिहन्त सिद्ध साधु
 नो, मुज शरणो हजो । भगवन्त सुमरण कीजिये,
 सूरज सामो जो जो ॥ ते० ॥ ६२ ॥ समदृष्टि जीव
 सरदसी, सुणता समता आवे । भारी कर्मी जीवड़ा
 सुणता दुख पावे ॥ ते० ॥ ६३ ॥ हिवे राणी पन्नावती,
 लीधा शरणा चार । सागारी अणसण कर्यो,
 जाणपणानो सार ॥ ते० ॥ ६४ ॥ राग बेराढी जे
 सुने, यह तीजी ढाल । समय सुन्दर कहे पाप से,
 छूटूं ततकाल ॥ ते मुज० ॥ ६५ ॥



१४१. प्रभाती जिन स्तुति ।

जयजिनंद जयजिनंद जयजिनंद देवा ॥ देर ॥
 विमल चरण विघन हरण गुण समुद्र जेवा ॥ १ ॥

मधन कोटि अमर पास हृद् करत सेवा ।
 तीन लोक मार्गि अपर देव नहीं पवा ॥ अ० ॥२॥
 मात तप्त भात तुही महर के करेवा ।
 बीतगा देव तुही कष्ट के हरेवा ॥ अ० ॥३॥
 मात उठ करो प्रभु नाम का कसेवा ।
 किसनलास परम देव नमो मित्य सेवा ॥ अ० ॥४॥



१४२ अष्टम स्तुति ।

नमो न्याये यजिामी ही ।

आदेभर अभिनाशी हो मुगतीरा वासी सां
 मला कोई सेवकबी अरदास । मधजन पार
 उतारो हो अवधारो अरबी बालहा कोई आपो
 अभिषेक वास ॥ अ० ॥१॥ मरुदेवीरा नम्रह हो
 जगबन्धन सम्बन्ध हीलरा कोई विधन मिहन्धन
 देव । घननामी गुरुधामी हो शिबनामी स्वामी
 मापरीं कोई मुरनर नारे सेव ॥ अ० ॥२॥ बीनरारा

मन रंजण हो दुख भंजन गंजन कामने कांई देवन
 दूजो कोय । किसन करे कर जोड़ी हो शिरमोड़ी
 सायब वन्दना कांई शिवसुख दीजो मोय ॥आ०३॥



१४३. अरिहन्त स्तुति ।

तर्ज-भीरा चालो हो विरज का वासी० ।

नमुं २ देव अरिहन्ता, प्रभु शिव रमणी के
 कन्ताजी ॥टेर॥ घन घाति करम सब हन्ता । सब
 जानत केवल वन्ताजी ॥ नमुं० ॥ १ ॥ जे चौतिश
 अतिशय । सोहंता प्रभु तीन भवन में महंताजी ॥
 नमुं० ॥ २ ॥ एक जोजन वाणी वापरंता । चारों
 तीरथ स्थापन करंताजी ॥ नमुं० ॥ ३ ॥ तिलोकरिख
 तन मन से नमंता । सेवा दीजो सदाई भगवन्ता
 जी ॥ नमुं० ॥ ४ ॥ इति



जघम कोहि कमर पास रख करत सेवा ।
 तीम लोक माहिं अपर देख नहीं ऐसा ॥ अ ॥ २॥
 मात तात भात तुही महर के करेवा ।
 बीतराग देख तुही कष्ट के हरेवा ॥ अ० ॥ ३॥
 प्रात उठ करो प्रभु नाम का कहवा ।
 किसनहास परम देख नमो मिल्य सेवा ॥ अ० ॥ ४॥



१४९. आप्तम स्तुति ।

गर्भ-ध्याते गतिप्राप्ति हो ।

आदेश्वर अभिनाथी हो भुगतीरा बासी सां
 मलो काई सेवकनी अरदास । सबजग पार
 उतारो हो अकधारा अरबी बाकहा काई आपो
 अविचल वास ॥ अ० ॥ १॥ मरुदेवीरा नन्दन हो
 जगबन्धन सन्धन शीतरा काई विघन निरन्धन
 देख । घननामी मुखधामी हो शिवधामी लामी
 मायरा काई सुरसर सारे सेव ॥ अ० ॥ २॥ बीतराग

गच्छ भार धुरंधर धीजे, वरवाणी पीयूष पीजे रे
॥ नि० ॥ ३ ॥ कहे 'सूर्य' चरण परसीजे, गुनगान
किया अथ छीजेरे ॥ नि० ॥ ४ ॥



१४६. उपाध्याय स्तुति ।

मर्ज-उपरोक्त ।

बंदू चरण युगल उवज्झाया, जारा दर्शन से
सुख पाया हो ॥ टेरा ॥ गुण पचीस अलंकृत भाया,
शुचि गंग तरंग सुहाया हो ॥ वं० ॥ १ ॥ श्रुत केवली
विरुध धराया, भवि मिथ्या वमन कराया हो ॥
वं० ॥ २ ॥ वरवाचक थविर कहाया, कुत्तियावरण
ओपम ठाया हो ॥ वं० ॥ ३ ॥ दिगताने साज दिराया
मुनि चिन परमाद रहाया हो ॥ वं० ॥ ४ ॥ तिहुं
आगम भणे भणाया, 'मुनि सूर्य' जिन्हें शिरनाया
हो ॥ वं० ॥ ५ ॥



१४४ सिद्ध स्तुति ।

तर्क-ज्योतिष ।

नमू २ सिद्ध भगवन्ता मय भ्रमस्य हतो जप-
बन्ताजी प्रदेर ॥ गुण दर्शन ज्ञान भ्रमन्ता नम करस्य
ताह अरिहन्ताजी ॥ न० ॥१॥ कर जन्म मरस्य सब
हता मये अण्ड सिद्ध मर्हताजी ॥ न० ॥२॥ अरि
वस्तु हयी गुण राजन्ता लहे शिबसुख आप जपन्ता
जी ॥ न० ॥३॥ मुनि सूर्य सिद्ध प्रथमन्ता, मित सुमरे
शिबपुर कन्ताजी ॥ न० ॥४॥ इति



१४५ व्याख्यार्थ स्तुति ।

तर्क-ज्योतिष ।

मित्रमनु व्याख्यारथ लीखे मयि जीपम कारज
सीजेरे ॥ देर ॥ जाकी गुण कपीसों लीखे ज्यमि
धोपमा सुरतक हीजेरे ॥ मि० ॥१॥ बर संपदा आठ
कहीजे बरसपमा व्याख्य कहीजे रे ॥ मि० ॥ २ ॥

देवी सुनन्द नरिंदा, हुण आदी करन मुनिंदा हो
 ॥ नि० ॥२॥ जस सेवे पद अरविंदा नित नरगण
 देव फणिंदा हो ॥ नि० ॥३॥ 'मुनि सूर्य' ऋषभजिन
 वन्दा, टले विघन सभी छल छंदा हो ॥ नि० ॥४॥



१४६. समता ।

समता रसका प्यालारे, पीवे सोही जाने ॥ स०
 ॥ टेर ॥ थाक चढ़ी कवहु नवि उत्तरे तीन भुवन सुख
 मानेरे ॥ पी० ॥१॥ इन सम और नहीं रस जग में
 हम कहें वेद पुराने रे ॥ पी० ॥२॥ सकल किलेश
 टले इक पल में जो समता घट आनेरे ॥ पी० ॥३॥
 चोर चिलायती समता घरीने पायो अमर विमाने
 रे ॥ पी० ॥४॥ रतनचन्द समता रस प्रकट्या पावे
 केवल ज्ञानेरे ॥ पी० ॥५॥

१४७ साधु स्तुति ।

तत्-मयी ।

पर पंचम मुनि गुणधारी ज्योरा ज्ञान सदा
 सुमकारी हो ॥ ४८ ॥ नवदस्ये उपविहारी सम
 कांधन लोए पिहारी हो ॥ प० ॥ १ ॥ करें तप बांधा
 परिहारी नवपाद सद्धित प्राप्तिहारी हो ॥ प० ॥ २ ॥
 अमरम सतरह बिहारी पंचाधर दूर निहारी हो
 ॥ प० ॥ ३ ॥ मुनि मंगम तीर्थ उपकारी, दूध अमर
 गोखरी आरी हो ॥ प० ॥ ४ ॥ गुण सत्ताबिस मंडारी
 'मुनि सूर्य' कहे बलिहारी हो ॥ प० ॥ ५ ॥



१४८ षष्ठम स्तुति ।

तत्-मयी ।

मित वन्दू नामि के वन्दा अण तारख अप
 जिन वन्दा हो ॥ ४९ ॥ मवि तारख दित छुन कंदा
 कसो हो बिष धर्म जिनन्दा हो ॥ वि० ॥ १ ॥ मरु-

देवी मुनन्द नरिंदा, दुष आदी करन मुनिंदा हो
॥ नि० ॥२॥ जस सेवे पद अरविंदा नित नरगण
देव फणिंदा हो ॥ नि० ॥३॥ 'मुनि सूर्य' अग्रभजिन
बन्दा. टले विघन सभी छल छंदा हो ॥ नि० ॥४॥



१४६. समता ।

समता रसका प्यालारे, पीवे सोही जाने ॥ स०
॥ टेर ॥ थाक चढ़ी कबहु नवि उतरे तीन भुवन सुख
मानेरे ॥ पी० ॥१॥ इन सम और नहीं रस जग में
इम कहें वेद पुराने रे ॥ पी० ॥२॥ सकल किलेश
टले इक पल में जो समता घट आनेरे ॥ पी० ॥३॥
चोर चिलायती समता धरीने पायो अमर विमाने
रे ॥ पी० ॥४॥ रतनचन्द समता रस प्रकट्या पावे
केवल क्षानेरे ॥ पी० ॥५॥

१५० श्री शान्तिनाथ स्तुति ।

बर्म-कपूर होते चनि ज्योतिरे ।

शान्ति जिनेश्वर साहिबारे शान्ति तथा दातार ।
 अमरजामी अम तखोरे आसमनो आधार ॥ १ ॥
 जिनेश्वर सुख मोरी घरदास ॥ देर ॥ पित चाहे
 प्रभु बाकगीरे मम चाहे मिशया काज । नयन चाहे
 प्रभु निरख्यारे वरचन हो मिनदाज ॥ जि० ॥ २ ॥
 पलक म विमल सामनेर जिम मोरो मम मंह ।
 एक खनो किम राखियेरे राज कपटमो मेह ॥ जि०
 ॥ ३ ॥ आश करे कोई व्यापणीरे नवि मूर्खीये नि
 रास । सेधक आखी साहिबारे दीज तास विकास
 ॥ जि० ॥ ४ ॥ दायक ने देता धक रे बिह नवि सागे
 नार । काज सारे मित्र दासमोरे ए मोहो उपकार
 ॥ जि० ॥ ५ ॥ एहयो आखी अग धखीरे घरजो निह
 में प्यार । पोतानो आखी करीरे मोहम मय अय-
 कार ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति



१५१. प्रभु प्रार्थना ।

तर्ज=देश ।

मारी नाढ़ तमारे हाथे हरि संभालजोरे ।
 प्यारा पोतानो जाणीने प्रभुपद पालजोरे ॥ टेर ॥
 पथ्यापथ्य नथी समजातूं, दुख सदैव रहे उम-
 रातूं । मने हशे शुं थातूं, नाथ निहालजोरे ॥ मा०
 ॥१॥ अनादि वैद्य आपछो सांचा कोई उपाय विपे
 नहिं काचा । दिवस रह्या छे रांचा, बेला बालजोरे
 ॥ मा० ॥ २ ॥ विश्वेश्वर शुं हजी विलारो, बाजी
 हाथ छुता का हारो । महा मुभारो मारो, नटवर
 टालजोरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ केशव हरि मारूं शुं थासे,
 घाण चाल्यो शुं गढ़ घेरा से । लाज तमारी जासे,
 भूधर भालजोरे ॥ मारी० ॥४॥



१५२. जिनेश प्रार्थना ।

शी कहूं कथनी मारी नाथ, शी कहूं० हवे
 शरण दर्ह ल्यो तारी नाथ ॥ टेर ॥ दश दृष्टान्ते

दुर्लभ मय पक्ष पुण्य धर्मी हूँ पाप्मो । भवनी
 मूलवर्षीमां भूयो विपय धर्मी न विराप्मो ॥ ना०
 शी० ॥१॥ आर्य मूमि-ने उत्तम कुलमां जन्म धर्मा
 शुभ योगे । साध्य न साध्य मूढ पणाधी, अमित
 धयो हूँ मोगे ॥ ना० शी० ॥२॥ तब पट्टता गुड संग
 मर्यो पक्ष दूर प्रमत्त न कीधो । इन्द्रिय सुखमां
 बाह्य बनीने उन्मत्तग में कीधो ॥ ना० शी० ॥३॥
 अवध योगे साधी ने दिन दिन बहु पाठों निर-
 धारी । करबी करता काया कर्म मूर्खों में न
 निबारी ॥ ना० शी० ॥ ४ ॥ सत्साधन संग्रस्त यथा
 पक्ष मधु विदुमां अटक्यो । आश काह करी समय
 गुमाय्यो तोमे अधर हूँ लटक्यो ॥ ना० शी० ॥५॥
 तात बात मम अन्तरणी पं कहतां पार न थावे ।
 अन्तर बल आपो अभिनाशी तो सेवक सुख पाव
 ॥ ना० शी० ॥६॥



१५३. पूर्णनिंदघन प्रभु ।

राग धन्या श्री ।

प्रभु मेरे ? तू सब वाते पूरा । परकी आश
 कहा करे प्रीतम ? ये किण वाते अधूरा ॥ टेर ॥
 परबस बसत लहत परतख दुख सब ही बासे
 सनूरा । निज घर आप संभार संपदा मत मन
 होय सनूरा ॥ प्र० ॥ १ ॥ परसंग त्याग लाग निजरंगे
 आनन्द वेली अंकूरा । निज अनुभव रस लागे
 मीठा ज्यों घेवर में छूरा ॥ प्र० ॥ २ ॥ अपने ख्याल
 पलक में खेले करे शत्रु का चूरा । सहजानन्द
 अचल सुख पावे धूरे जग जस नूरा ॥ प्र० ॥ ३ ॥

१५४. पंच परमेष्ठी लावणी ।

अष्टपदी ।

जपो नवकार मंत्र ज्ञाता, स्वर्ग अपवर्ग सौख्य
 दाता ॥ टेर ॥ भीत रुज तन में नहीं आता, रिपु
 को करन सके घाता ॥ दोहा-क्रोध केवली गुण

करे तो विश्व भावे पार । महा प्रभाविक मय
परमेष्ठी अपता अय २ कर । मिटावे ज्ञानम मरण
जाता ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रथम परिहृत देव मामि दोष
नहीं अद्यावत् आमि । अखिल गुण द्वापय वि पामे
मिष्य गुण पश्यतीसे तामि ॥ दोहा—अथव दोष छोड़
केधली उत्कृष्ट नव आन । कर्म छातिया बेद
जपाई पाया केवल बाव ॥ बिडोवा बोसठ गुण
गता ॥ अ० ॥ २ ॥ नमो पद दूजे श्री सिद्धा बाव
दर्यान कर संसृष्टा । कर्म बहु इच्छि बहु गुण लीपा
अमृत भव अरक्षयका कीचा ॥ दोहा द्रव्य प्राप्त
महीं एक है भाव प्राप्त है बार । ज्योति रूप मि-
कलंक निरंजन अविभागी अविकार । व्याप हर
गोरोवर व्याता ॥ अ० ॥ ३ ॥ नमो पद आचार्य तीजे
सम्पदा अय देव दीजे । इतीसों गुण गिरवा
लीजे ओपमा सुरतक की दीजे ॥ दोहा—इति समाप्त
बठ संध में नीतारण गुणधाम । परिहृत योग
अकलित पावे धर्म आन मिर्षाम । सुपरावर
लोक माहि व्याता ॥ अ० ॥ ४ ॥ नमो पद बोजे उद-

ज्झाया, विमल गुण पणवीसे भाया । भारती वक्के
 वास डायामिथ्या दर्शन सल अघ ढाया ॥ दोहा-
 भणे भणावे सूत्र सब चरण करणरा धार । डिगता
 प्राणी धर्म से घिरकर राखण हार । भविक ने
 बोध बीज दाता ॥ ज० ॥ ५ ॥ नमो पद पंचम उप-
 कारी, साधु गुण सप्तविंस धारी । अमल चित
 खच्छ गगवारी, तपोधन घोर ब्रह्मचारी ॥ दोहा-
 नमो ज्ञान दर्शन भणी तप चारित्र उदार । अड
 सिध नवनिध मंगल माला पग २ मिले अपार ।
 विघन घन मेटन को वाता ॥ ज० ॥ ६ ॥ भणे जो
 भव्य शुद्ध भावे, थोक तस मन बंछित थावे ।
 अचिंती कमला घर आवे, लावणी किशनलाल
 गावे ॥ दोहा-सार चतुर्दश पूर्वे को मंत्र बड़ो नव-
 कार । सब मंगल में धूर यह सकल पाप क्षयकार ।
 सिवरतां वरते सुख साता ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति



१५५. गुरुदेव स्तवन ।

तबे-वा तबे मे पैसा माने ।

इसा गुरुदेव हमारे श्रीम अक्षोबधि तारन
 हारा । कमल कामनी कोइ हूया सब अय से
 न्यायरे ॥ १६८ ॥ तबे कबि बिरदा में आगी अम
 असार सकल रिच त्यागी । कुटुम्ब कोइ निकल्या
 बड़ मागी बिबिध २ त्याग दिया जिन पाव
 अठारारे ॥ १६९ ॥ मूर्महस बिधरे मचकश्य बाहु
 जिन प्रतिबध न अक्षये साबध माया मुखे न
 अक्षये अह करम कब करम परीषा जीते सारारे
 ॥ १७० ॥ २॥ इशबिध बली चरम का घारी परिमह
 ममता दूर मिथारी नवबिध बाइ सदित ब्रह्मचारी
 मणिनी अमिता-पुत्री समाध करी सब दातारे ॥
 १७१ ॥ ३ ॥ संजम सतरा मेदे अक्षये अक्षमातर
 परमाद न लाये सदा मुगति को मारग छाये
 धार तपोधन काम दम सम मुख हृन्व अपारारे ॥
 १७२ ॥ ४ ॥ महापति निर्मल पाछे पख इन्दी को

जीतण वाले चार कषाय किया पेमाले, भाव करन
 सत्य योग मनो वच तन सम धारारे ॥ ३० ॥ ५ ॥
 संपन नाण दरश चारित्रे, क्षमावन्त वैराग्य पवित्रे
 कष्ट सह्ये मरणान्त विचित्रे, वेदनि आया समो
 अयासे धन अनगारारे ॥ ३० ॥ ६ ॥ घरम देव
 दिनकर जिम गाजे, चतुर संघ में घन जिम गाजे
 दर्शन दीठां सब दुख भाजे, किशनलाल कहे ऐसा
 मुनि मम प्राण पियारारे ॥ ३० ॥ ७ ॥ इति

१५६. वीर प्रार्थना ।

तर्ज=काली कमली वाले तुम पर लाखों सत्ताम ।

जगपति जगदाधार, सुनलो वीर जिनंद ।
 जिन शासन सिरदार, सुनलो वीर जिनंद ॥ टेर ॥
 हठी मूर्ख कपटी व्यभिचारी, किये पाप मै भारीर
 अगणित अवगुणों का आगारी कीजे चेड़ा पार
 सुन० ज० ॥ १ ॥ भूटे पक्षपात में पड़के, किये
 सच्चे को भूठा लड़के । हुआ अन्ध निज ऐंठ
 पकड़ के ऐसा मैं मतवार ॥ सु० ज० ॥ २ ॥ तेरा

नाम धरा के भूटा सर्व अमर्ष में किया अपूठा ।
 कहे सत्य सो ठस पर कठा कैसे हो उच्चार ॥मु०
 अ०॥३॥ अपनी इपथा कथा में मारी हो न पथा
 ग्य जिम्मादारी । कैसे कहूँ सकल विस्तारी तारो
 तारन हार ॥सु० जि०॥४॥ पतित पापी अधम चोर
 मैं कथा हरिहर मेरी ओर में । सातगुनीसो पि
 प्यासू बैंगलोन में सूर्य बिजय अधधार ॥सु० अ०
 ३४॥



१५७ जबदह स्वप्न ।

रही लज में ।

मैं सुपना देखी अरणी सुम सीजो म्हाय
 साहिबा प्रदेग दीठो मधम गज ऊजसो मरे बूजे
 नृपम गुणपम्न । तीजे सिंह सुलससो सरे घोषा
 रेब मईत हो ॥ म्हे० ॥१॥ सुगल माला फूल पाँच
 में सह गायत्री कस्त । रवि ऊर्गता सातवें मरे
 साठवें पता पनंग हो ॥ म्हे० ॥ २ ॥ कुम्भ कस्त

रतना जङ्घोसरे, दसमें पदम तलाव । रतना-
 गर इग्यारमोसरे, बारमो देव विमान हो ॥ म्हें०
 ॥ ३ ॥ रतना रापी तेरमी सरे, चवदमें अगन
 प्रचण्ड । सिद्धारथ पूछा करेसरे, पूछे श्रीपति
 पण्ड हो ॥ म्हें० ॥ ४ ॥



१५८. भजन उपदेशी ।

तर्ज-ख्याल में ।

तुम माल खरीदो त्रिशलानन्दन की खुली
 दुकानजी ॥ टेर ॥ शास्त्र रूप भरी बहु पेट्यां मुनि-
 वर बने बजाजी । वजह वजह का माल देखलो
 कर अपना मन राजी ॥ तुम० ॥ १ ॥ जिनवाणी को
 गज हैं सांचो जरा फर्क मत जाण । माप माप देखे
 सतगुरुजी मतकर खींचा तानजी ॥ तु० ॥ २ ॥ जीव
 दया की मल २ भारी शुध मन मिसरू लीजे ।
 डबल मीण समता तणोसरे चाहे सो कह दीजे
 जी ॥ तु० ॥ ३ ॥ समता को बंदागल भारी साड़ी ले
 सन्तोष । ऐसा कर व्यौपार जिन्हों से चेतन

पावे मोक्षजी ॥ तु० ॥ ४ ॥ सुखी हाथ भा सोदा
 लेषो नहीं मगये का काम । मम भाव तो मोक्ष
 लेजायो मैं नहीं मांगा दामजी ॥ तु० ॥ ५ ॥ मास
 बिके है थोड़ो जिससे कर्म पूरे नहीं खाहे । आ
 वेगा कोई उत्तम पाथी मास हमारे पक्षीजी ॥ तु०
 ॥ ६ ॥ मास बिके तो पछछो होती सुनयो मजिहम
 बान । मर्या सज्जाना कविषम लूटे सतगुरु सिर
 पर हाथजी ॥ तु० ॥ ७ ॥ गुपीसे कलीममेंछरे
 अम्बाला बीमास । करक मुनि उपदेश सुनायो
 मोक्ष आवछी आठजी ॥ तु० ॥ ८ ॥

१४६ परन्नी बिये आवछी ।

कले-कलर की वा कुल ने लखे रे ९ ।

अतुल परमाणी मल बिरको २ आवसकैरी ऐव
 अम्बेनी बिजली को भजको ॥ डेर ॥ राबस मोखो
 गय कहावे लखगाइ बंको । पाप करी ने नरक
 पहुँचा बुझ पायो अधिको ॥ अ० ॥ १ ॥ अतर्ही

खड को राय पद्मोत्तर, द्रौपदी ने हरतो । कृष्ण
 नरेश्वर करी खुवारी पुण्य हुयो हलको ॥ च० ॥ २ ॥
 कीचक राय महा दुख पायो, भीम सुं अधिको ।
 नारी द्रौपदी नेह विचारी, भव २ में भटक्यो ॥
 च० ॥ ३ ॥ परनारी को रग पतंग है, पोढल को
 भलको । औस वृंद जब लगे तावड़ो, ढलक जाय
 ढलको ॥ च० ॥ ४ ॥ परनारी से स्नेह किया से, धन
 जावे घर को । दूजा देखने करे खुवारी, भव धन
 क्यों भटको ॥ च० ॥ ५ ॥



१६० भाव मुनि वंदना ।

राग विमास ।

जूओरे ! जूओरे जैनों ! केवा व्रतधारी, केवा
 व्रतधारी । तेने वन्दना हमारी । जूओरे ! जूओरे
 जैनो० ॥ टेर ॥ जूओ २ जम्बु स्वामी, बालावये
 बोध पामी, तजी राज्य ऋद्धि जेने तजी आठ
 नारी, तजी आठ० वन्दना० जू० ॥ १ ॥ गज सुक-

माल मुनी, धग शिर पर धूनी झडग रखा ते
 प्यामे । दिग्धा न क्षिगारी, तेमे वन्दना० जू० ॥२॥
 कोण्यामां मंदिर मघ रखा मुनि स्पृष्टि भद्र,
 बंध्या संग पासता ये घया न पिकारी घया
 न पिकारी तेमे वंदना० जू० ॥ ३ ॥ सती तो
 गजुल जेवी जगमां न जोडी येवी पतिव्रत
 माटे कम्पा गरी ए कषारी रयी ए कषारी
 मने वन्दना० जू० ॥४॥ जनक सुता जे सीता वरप
 तो नारे बीता धग दुख बेट्यु तो ए दिग्धा न
 क्षिगारी दिग्धा न क्षिगारी तेमे वन्दना० जू० ॥
 ॥५॥ सती कलापती नामे घया सैखपुर गामे कर
 निज काव्या मोए रखा टैकधारी रखा टैकधारी तेमे
 वंदना० जू० ॥६॥ गुलका तो दीधा बेचे सह्या पत्तो
 काम बेचे धग दुख बेट्यु मोए दिग्धा न क्षिगारी
 दिग्धा न क्षिगारी तेमे वन्दना० जू० ॥७॥ धन्य र
 न नग्मारी एका रुद्र टैक धारी जीवित सुधार्यु
 जखं पाम्या मबधारी पाम्या मबधारी तेमे वंदना०
 जू० ॥८॥

१६१. भजन उपदेशी ।

वांधो मती कर्म चीकणा भुगतोगा आयो आप,
 भवियण ॥टेरा॥ पहिलां तो जोवन थिर नहीं, दूजो
 अथिर संसार, भ० । तीजो घन छे कारमो, चोथो
 तन नहीं लार, भ० वां० ॥१॥ एकतो अटवी उजाड़
 में, दूजो विपसी ठौर, भ० । मुनिवर मारग जावतां,
 विच में मिलिया चोर, भ० वां० ॥ २ ॥ तन वस्तर
 लेतां थकां, ऋषिजी कीवो ध्यान, भ० । चोर कहें
 कारण कीस्यों, मुनि कहें सुण धर कान, भ० वां०
 ॥ ३ ॥ तूं वांधे कर्म एकलो, खावे सघलो साथ,
 भ० । पातिवार कुण राह में, तूतो पूछेनी घर में
 वात, भ० वां० ॥४॥ चोर पूछे घर आयने हूं वांधू
 पापनो पूर, भ० । कुण २ सामिल रहवो थे सांच
 कहो तज कूड़, भ० वां० ॥ ५ ॥ खावण सीर सह
 हमें पापनां सीर न कोय, भ० । जो करसी सो

पापसी धोर मे देवे सुखि पोय म० बा० ॥ १६ ॥ धोर
 आयो मुनिघर कमे भलो दियो मुम्ह नाम म० ।
 राम कहै सहु सांभरो समझो इन व्याख्यान म०
 बा० ॥ ७४ ॥



१६२. श्रुपम जिन पारणा ।

तर्क-काल मे ।

महारी रस सेलकी आवि जिनैभर कियो पा-
 रणो ॥ ६६ ॥ यहु एक सी भाठ सेलकी रस मारिना
 के नीका । दान दियो जेयांश कपरजी मांडझिषा
 प्रभु नृकाजी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ देव बजावे जुहुमी छरे
 मोर्नया की वरणा । कियो पारणो आवि जिनैभर
 मेढी भूष मे सिरकाजी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ नृदि सिद्धि
 मनो कामना घर घर मीगकाचार । जुमिषा हरप
 बधायका म्हादि बाका तीज स्वीहारजी ॥ म्हा ॥
 ३ ॥ सहुठ काढो विपत बिहारी रको हमारी लाज ।
 बानूराम कर ओकी कहता श्रुपमदेव महाराजजी
 ॥ म्हा० ॥ ४ ॥

१६३. सकुटुम्ब मुनि ।

तर्ज-भरवी ।

मुनि को कहिये गृहवासी, जांके भाव कुटुम्ब
 गुणरासी हो ॥टेर॥ धीरज तात क्षमा जस जननी
 दादी जान दयासी हो ॥ मु० ॥ १ ॥ चारित चाचो
 भाव भतीजो काका शुभ किरियासी हो ॥ मु० ॥ २ ॥
 लघम दास विवेक सहोदर बुद्धि कलत्र विभासी
 हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ ज्ञान सुपुत्र परमारथ पोतो तत्व
 रुची वरमासी हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ दान सुदादो मार्दव
 मामो पुत्र-वधू समतासी हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ आगम
 सुसरो साखू सुमती भावना श्रेष्ठ भुवासी हो ॥ मु०
 ॥ ६ ॥ संजम सालो वहिन चेतना संघ सगो सुवि-
 लासी हो ॥ मु० ॥ ७ ॥ अमर कुटुम्ब किशन दिग
 जिनके ते मुनि शिवपद पासी हो ॥ मु० ॥ ८ ॥



१६४ काया का पद ।

तय-साधुद गीते एव गीते ।

काया पिरुड कायो राज कायो मत भूत
इसी में राखो ॥ का० ॥ डेर ॥ पकड़त बार न भागे
पकड़ि मारक इसको भाखो । मोड़ल मसक
स्वपन कैमो कुल किम कर राख्यो सांखो ॥ का०
॥ १ ॥ मकड़ी आल बिबाख रेतकी सिम जल बीच
पतासो । बाठा बुद्धि होय एव घट में पद पिय
बड़ो तमाखो ॥ का० ॥ २५ ॥ मल मूत्र अठ दुर्गंध की
कपारी दुख दावानल भांखो । सुन्दर परन सोहे
शशि ओपम मूठ कथा मत बांखो ॥ का० ॥ ३ ॥
इनमें एतन इसाखित उत्तम भी जिनपर न आखो ।
सख चोरासी जीव मोन में मटवा धर मत नाखो ॥
का० ॥ ४ ॥



१६५. परस्त्री विषे ।

नज-होली ।

हो मत ताको नार विरानी, यातो नरक तणी
 निसियाणी ॥ टेर ॥ परनारी छे काली नागण के
 विष बेल समानी । तेज पराक्रम पीलण काजे यह
 घर मरिड घाणी । गुण गण बालण छाणी ॥ हो०
 ॥ १ ॥ रावण राय त्रिखण्ड को नायक सीत हरी
 घर आणी । राम चढ्या दल वादल लेकर मार्यो
 शरगपाणी ॥ कथा आगम में आणी ॥ हो० ॥ २ ॥
 पद्मोत्तर निज लाज गमाई कीचक नीच लिहाणी ।
 मणिरथ मूओ मेण रहा बस अपजस लह्यो अ-
 शानी ॥ जगमांही प्रकट कहाणी ॥ हो० ॥ ३ ॥ गौ
 ब्राह्मण ने बाल हत्या रिष नार हत्या बलि जाणी ।
 तिण थी पाप अधिक पिण लागे भाख्यो केवल
 नाणी ॥ के अनंत दुखारी खानी ॥ हो० ॥ ४ ॥ रतन
 जतन कर शील अराधो छांडो कुमत पुरानी ।
 मुगत महिलांनी सहल अचल सुघ, मुगत रमण

मिसाखी ॥ यों वीर विर्मल पत्थानी ॥ हो० ॥ २ ॥
 अठारह द्विपत्नी महामदिर में शिखर कथा सु
 बसाखी । शीखर बिना सहू अगम अकारण क्या
 राजा क्या राखी ॥ शिखर अस उत्तम माखी ॥
 हो० ॥ ३ ॥



१६६ चेतन और कर्म ।

एत कथा नो तया चतुर्गुणी ।

चेतन ! जो तू ज्ञान अभ्यासी । आप ही बांधे
 आपही छोड़े मित्रमति शक्ति विकसी ॥ हेर ॥ जो
 नू आप स्वभावे देखे आशा छोड़ बहासी । सुर
 नर किन्नर नायक संपति ता तुझ घरखी दसी ॥
 ये० ॥ १ ॥ मोह बोर अब गुण चम हूरे रेत आय
 गलफांसी । आशा छोड़ उवास रहे जो सो उत्तम
 सम्यामी ॥ ये० ॥ २ ॥ जोग लई पर आय धरत ई
 पा ही अग में हांसी । तू जानै त्रि गुण को संघ
 गुण ता जाब मांसी ॥ ये० ॥ ३ ॥ पुण्ड्र की तू आय धरत

सो तो सबही विनासी । तूं तो भिन्न रूप हैं उनतें
 चिदानन्द अविनासी ॥ चे० ॥ ४ ॥ धन खरचे नर
 बहुत गुमानें करघत लेवे कासी । तो भी दुख को
 अन्त न आवे जो आशा नहिं घासी ॥ चे० ॥ ५ ॥
 सुख जल विषम विषय मृग तृष्णा होत मूढ़मति
 प्यासी । विभ्रम भूमि लई पर आशी तूं तो सहज
 विलासी ॥ चे० ॥ ६ ॥ यांको पिता मोह दुख भ्राता
 होत विषय रति मासी । भव सुत भरता अविरत
 प्राणी मिथ्यामति ये सासी ॥ चे० ॥ ७ ॥ आशा छोड़
 रहे जो जोगी सो होवे शिववासी । उनको सुजस
 बसाने ज्ञाता अन्तर दृष्टि प्रकाशी ॥ चे० ॥ ८ ॥



१६७. आध्यात्मिक पद ।

आशावरी ।

कवे निर्ग्रथ स्वरूप धरूंगा, तप करके मुगत
 धरूंगा ॥ टेर ॥ कव ग्रहवास आश सब छांड़ी कव
 वन में विचरूंगा । बाह्य अभ्यंतर त्याग परिग्रह

उभय लिंग सुधरंगा ॥ क० ॥ १ ॥ दोष एकाएकी
 परम उपाधी पंचाचार करंगा । कब फिर भोग
 करी पद्यात्म इन्द्रिय इमम करंगा ॥ क० ॥ २ ॥
 आत्म ध्यान सखी वल अपनो मोह हरिसु लरंगा ।
 त्यागी उपाधि समाधि लगाकर परिपह लइम
 करंगा ॥ क० ॥ ३ ॥ कब गुप्त ठान भेद्यिपे सब के
 कर्म कलक जइगा । आत्मन् कन्ध विद्वान्
 साधिव विन सुमरे सुमरंगा ॥ क० ॥ ४ ॥ ऐसी
 लम्घि पाई अबे मैं आपदि आप लरंगा । अमुक्ति
 सुत हीयबन्ध कहत हैं बहुरी नां अब मैं परंगा
 ॥ क० ॥ ५ ॥



१४८. भजन उपदेशी ।

क्यों भूखो खेलन माम मोहनी पाश में । दिव्य
 निर्मल स्फटिक मय आत्म उज्ज्वल लइम स्व-
 भाव विकास में । निज स्वभाव से विघ्न हो राखो
 माह मिठान्न में ॥ क्यों ॥ १ ॥ मोहमदिय बस
 आच्छादित हो कन्धो कुटुम्ब की भाश में । सुग

तृष्णा वश फिरे भटकता इत उत कर विश्वास में
 ॥ क्यों० ॥२॥ एकादश श्रेणी से चढ़ के पड़े प्रथम
 गुणरास में । तस्कर विकट मोह अटकावे जाता
 शिवपुर वास में ॥ क्यों० ॥ ३ ॥ सिंह सम्मुख हो
 मरे कुरंगी निज सुत रक्षा आश में । मरे मोह
 वश पड़े पतंगी जलता दीप उजास में ॥ क्यों० ॥४॥
 मरुदेवी अरु गौतम मुनिवर बसिया मोह निवास
 में । मोह तज केवल कमला पाई पहुंचे शिव कै-
 लास में ॥ क्यों० ॥५॥ सिंह कभी निज भक्षण तज
 के धरे राग नहिं वास में । त्यों हानी नहीं विषय
 भोगवे रमण करे गुण खास में ॥ क्यों० ॥६॥ अमर
 कमल के पुष्प न छेदे दुख लहें श्वासोश्वास में ।
 कठिन काष्ठ क्षण भर में कोरे हो कर मोह के दास
 में ॥ क्यों० ॥७॥ सुगम तोड़नी लोह सांकली दुष्कर
 मोह विनाश में । धन्य पुरुष जग वन्धन तज के
 रमते त्रिद्विलास में ॥ क्यों० ॥८॥ गुन्नीसे चौराणु
 संवत रही शांति चौमास में । नन्दसूरि मुनि 'सूर्य'
 कहे यों सिरे शहर मद्रास में ॥ क्यों० ॥९॥

१६६ ईश प्राप्ति ।

तर्क-विषय है यही नी ।

गौर कर देवनाथी, हि मुदा न मसजिद
मदिर में ॥ हेर ॥ मुसलमानों की मसजिद देखी
दिगुधों के मदिर सारे । मुखा देव पुमाय देखे
बड़े २ तिसजन सारे ॥ गी० ॥ १ ॥ बकरा ईद मुसल
मानों की बकरा काटा जाये । येस कार में हो
नयपुर्गा मिसा ठक कट जाये ॥ गी० ॥ २ ॥ जब
कोई काम अकरी जाये इसम मुदा की जाये ।
येईमान बिना स्वारथ के गगाजली बठाये ॥ गी०
॥ ३ ॥ मझा मधुरा कीर मरीना काशी में फिर
आया । रामचन्द्र कहें साफ किया सब दिग में
ईश्वर पाया ॥ गी० ॥ ४ ॥



१७० कृपेव पूजा निषेध ।

तर्क-विषय है यही नी ।

भ्यात घर देवनाथी नहीं थीकाम मिळे पूजन
स ॥ हेर ॥ काम लाजिये जिहा करिखे किछवे ह

पूजो प्यारी । चकरा मुर्गा घँट काटकर वनी फिरो
 हत्यारी ॥ ध्या० ॥ १ ॥ चाहे पूजो काली माई या
 पूजो चामुंडा । चाहे स्याने को बुलवाकर बांधो
 गले में गंडा ॥ ध्या० ॥ २ ॥ बुला २ कर घर में
 जोगिया जाहिर पीर मनालो । चाहे पोपजी को
 बुलवाकर दुर्गा पाठ करालो ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ पुत्र
 मिले नां यों करने से सुनो सुशीलानारी । जो
 भाग में लिखा होगा वही मिलेगा प्यारी ॥ ध्या०
 ॥ ४ ॥



१७१. दो संग में नहीं होता ।

छोटी लावणी ।

दो एक संग नहीं बने धर्म कृपणार्थ ।
 नहीं रहे एक घरतन में दूध खटाई ॥ टेर ॥
 मन सुत दारा में लगा मोक्ष कव होवे ।
 जग कीनी शत्रुता भरी नींद कव सोवे ॥
 तू जीतन चहें संग्राम मन में कदराई ॥ न० ॥ १ ॥

गणिका से पारी किया चहें घन राखन ।
 कर लिया मय का पाम चहें सत भाखन ॥
 जब गिरपर चढ़ा इराम वहिन क्या भाई ॥ न० ॥ ५॥
 जोय हिसक कहे कि मैं भी गुरु कहाऊँ ।
 कहे बुगल कोर कि मैं भी ऊँच पद पाऊँ ॥
 कि कर माया में मोह मिलन की माही ॥ न० ॥ ६॥



१७२. धर्म पे इहता ।

४२-हुन सवातने ।

धर्म न हारमारे धर्म के ऊपर तन मन घन
 सब बाग़मारे ॥ देर ॥ हरिबन्धु के धर्म न हारा
 राज पाद तन सीमा साग । बिपद समूह का
 उनके कोई पारमारे ॥ धर्म० ॥ १॥ तेन वहातुर ने
 मर सीमा धर्म का किन्तु त्याग न कीमा । मर-
 जाना मजूर धर्म नहीं हारमारे ॥ ध० ॥ २॥ भी
 गाबिंद के राज दुकारे शुभे दुष्ट सीती में पुकारे ।
 अपने पुरैजो की ओर जरा निहारमारे ॥ ध० ॥ ३॥

शीश हकीकत ने कटवाया निर्भय होकर धर्म
वचाया । पद्मावती के सतपर दृष्टि डारनारे ॥ ध०
॥ ४ ॥



१७३. धर्म पै ।

तर्ज-गजल, विना जिनराज के देखे ।

ज्ञान दुर्लभ है दुनियां में, धरम सब से अमो-
लक है । यही भगवान ने भाखा, धरम सब से
अमोलक है ॥ टेर ॥ रखो तन अपना धन देकर,
वचावो लाज तन देकर । धरम पर वारदो सबको
धरम० ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ धरम के सामने सब हेच,
राज और पाट दुनियां का । धरम ही सार है जग
में, धरम० ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ धरम के वासते सीता,
क्रिया प्रवेश अगनी में । राम तज राज धन पहुंचे,
धरम० ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ धरम के वासते घर जान भी,
जाए तो दे दीजे । समझ लीजे यकीं कीजे, धरम०
॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥



१७४ अनाथ ।

उक्त-पञ्च वक्ताओं ने ।

अनाथ वृक्ष को गहरे जगाधो स्वजाति वधु
स्वदेश बंधु । द्वितीयी बनकर बंधा दिखावो, स्व
जाति वधु स्वदेश बंधु ॥८८॥ बिचारे माता पिता
ने छोड़ा तुमी से माता हर्षोनि ओढ़ा । तड़पते
मिश्रिम न अब बचावो स्वजाति० ॥ अ० ॥ १ ॥
इस पापी पैठ के ही कातिर, बिचरिं होकर के
फिरते घर घर । विदेशियों को न अब छुटावो स्व-
जाति० ॥ अ० ॥ २ ॥ तुमारे घर में तो फरा मज्जमल
न सबको कामा न वल्ल कम्बल । लुझावो घन को
हर्षे बचावो स्वजाति० ॥ अ० ॥ ३ ॥ अनाथ होवे
सनाथ बच्चे, बर्नेगे भारत के लाल सच्चे ।
अनाथ आश्रम भी आप बचावो स्वजाति ॥ अ०
॥ ४ ॥



१७५. व्याख्यान के प्रारंभ की स्तुति ।

वीर हेमाचल से निकसी, गुरु गौतम के
 श्रुत्कुंड ढरी है । मोह महाचल मेद चली, जग की
 नष्टता सब दूर करी है ॥ ज्ञान पयोदधि मांहिरली
 बहुभंग तरंगन से उछरी है । तासु विशारद गंग-
 नदी, प्रथमें अञ्जली निज शीश धरी है ॥१॥ ज्ञान-
 सु नीर भरी सरिता, सुरघेनु प्रमोद ज्यों क्षीर
 निधानी । कर्म की व्याधिहरंत सदा, अङ्गमेल-
 हरत शिवाकर मानी ॥ जैन सिद्धांत की ज्योति-
 स्खरी, सुरवृक्ष समान महासुखदानी । लोक अलोक
 प्रकाश भये, मुनिराज घरानत है जिनवानी ॥२॥
 शोमित देवविषे मधवा, उडुवृन्द विषे शशि मंगल
 कारी । भूप समूह विषे भरतेश्वर, केशव रोध-
 विषे मनुहारी ॥ नागन में धरणेंद्र बड़ो, चमरेन्द्र
 असुरन में अधिकारी । यूं जिन शासन संध विषे
 मुनिराज दीपे श्रुतज्ञान भंडारी ॥३॥



१७६ ममहर ब्रह्म ।

देखे करी केतकी, कथेर, एक कपो ज्ञाप,
 माकदूय गापदूय, अन्तर घबेरो है । पीरीहोत
 पीरीपय, होस करे कथय की, कहाँ कथगवाही
 कहाँ कोयल की डेर है ॥ कहाँ मातु तेज मको,
 आमियो बिचाये कहाँ पूनम को कथवाका कहाँ,
 अमावस अन्वेरो है । पक्ष कोर पारकी, विहाल
 देख मिश्रय कर, जैनवन औरवन, अन्तर घबेरो
 है ॥१॥ बीतयग नाची छाँची, मुक्ति की मिठाणी
 मडा, मुकूठ की काची काची, आप मुक बकाची
 है । इसको अराव के तिरिया है अमल कीव
 छोटी महाज आब अया मन बाची है ॥ अरु
 है सार पार, अरु ही से कोचोपार, अरु बिज
 कीव अरु, मिश्रयकर मापी है । नाची तो पवेटी
 पक्ष बीतयग मुख्य नहीं उनके सिवाय और को-
 पसी कहाँ है ॥ २ ॥

गाय-मिथ्यायें मुख्यायें पारमयायें परंपरा-
 गवायें । सोबधामुपयवायें नमो सदा सम्बन्धि-

द्वारां ॥१॥ जो देवाण्वि देवो, जं देवा पंजली नमं-
सन्ति । तं देवा देव महीयं सिरसा वंदे महावीरं
॥ २ ॥ एगोवि नमोकारो, जिणवर वस्सस बद्ध
माणस । संसार सागराउ तरइ नरं व नारीवा, ॥३॥



१७७. व्याख्यान समाप्ति की स्तुति ।

शासन मंडन स्वामजी, नाम सदा जयकार ।
त्रिलोकन में तिलक सम, भज अश्लानन्द कुंधार ।
मुक्तिवर वर्धमान की जय ॥१॥ जिनवर नाम से
होइये, पाप हवन सब क्षय । मोक्षधाम पावे तुरत
मिट जाय सब मन भय ॥ कहोजी श्री जैन धर्म
की जय ॥२॥

दोहा-दया सुखांनी वेलड़ी, दया सुखांनी खान ।
अनंताजीव मुगते गया, दया तणा फल जाण ॥१॥
हिंसा दुःखनी वेलड़ी, हिंसा दुःखनी खान । अनंता-
जीव नरके गया, हिंसा तणा फल जाण ॥२॥ जेती
सुणो ते ती करो, तो पहुंचो निर्वाण । काइयक हिरदे

राखओ तो सुखिपारो परिमाण ॥३॥ जिन मारग
 पारी धणो, सुखम जारा मेह । सठा होय ने सरह
 ओ मन में चाह समेह ॥४॥ खरो मारग बीतराम
 को, कुछ नहीं लयसेह । जाकी सधम्यति एक
 गई तिनको पद उपदेह ॥५॥ जिन धर्म पाया पिने
 भीर न आये दाय । अमृत मोहन छोड़ने कुक-
 सड़ी कुछ जाय ॥६॥ करो दृढ़ासी धर्म की, दीये
 अपिछी ओत । कृष्ण महावली, आखओ बाँयो
 तीर्थदूर गाँव ॥ ७ ॥ बेतोरे सधि प्रायिया ए
 संसार असार । स्थिण्या कोई दीसे नहीं धन
 दीवन परिवार ॥ ८ ॥ धर्म करो तुम्हें प्रायिया ।
 धर्म पछी सुख होय धर्म करता जीव ने दुखिम
 न दीठा कोष ॥ ९ ॥ रत्न पड़ा है बजार में, रहा
 गरह छिपटाय । मूरख जाये काँकरो बहुत तियो
 उठाय ॥१०॥ दीछ न कीछे धर्मनी लप अप कीचें
 मूट । जैसी शीशी काच की जाय एकद में फूट
 ॥११॥ बुझमी आरों पाँचमो मिथ्यक राखओ मन ।
 जोका में नफो धनो जेय कुपडा माँही रतन ॥१२॥

साधु चन्दन वावना, शीतल जांका अङ्ग । लहर
 उतारे मिथ्यात की दे दे ज्ञान का रंग ॥१३॥ साधु
 बड़े परमारश्री, मोटा जिनका मन । भर भर मुष्टी
 देत है, धर्म रूपियो धन ॥ १४ ॥ दया रण सिंगो
 याजियो, चेतो चेतो नरनार । मोक्ष पुरी में चालणो
 बेगा होजो तयार ॥१५॥ इति

१७८. षट्द्रव्य ।

षट्द्रव्य ज्यामें कहा यों मित्र मित्र, आगम
 सुणत चखाण । पंचास्तिकाया नव पदारथ, पांच
 भाख्या ग्यान ॥ चारित्र तेरा क्या हो जिनवर,
 ज्ञान दर्शन परधान । जो शास्त्र नित सुणो भवि-
 यण, आण सुध मन ध्यान ॥१॥ चोवीश तीर्थङ्कर
 लोक मांही, तिरण तारण जहाज । नव वासु नव
 प्रतिधासु देवा, बारे चक्रवर्ती जाण ॥ बलदेव नव
 सब हुवा ब्रेसठ, घणा गुणारी खान जो शास्त्र
 नित सुणो भवियण, आण शुद्ध मन ध्यान ॥ २ ॥

चार दैवता दीनी हो त्रिमय, कियो पर उपकार ।
 पाँच मयुजत चार शिखा तीन गुह्यमत धार ।
 पाँच मंत्र त्रिमेश भाव्या द्वाधर्म परधान जो
 शास्त्र मित सुखो मविषय, बाध सुख मन प्याम
 ॥ ३ ॥ और कहाँ जय कइजी बर्बन तीन लोक
 प्रमाद्य सुखत पाप पलाय आवे पापपद निर्धोक ।
 देव विमादिक मोदी पक्षी कही पक्ष परधान ।
 जो शास्त्र मित सुखा मविषय बाध सुख मन
 प्याम ॥ ४ ॥

कह्यो-विषय इह मगल करय धन भी जैन
 परम । जिन समस्ता पातक मरे दूरे जायों कर्म ॥
 धन साधु धन साधवी धन भी जैन परम । जिन
 समस्ता पातक मरे दूरे जायों कर्म ॥ कह्यो
 भी जैन धर्म की अर्थः बोझो जी भी जैन धर्म की
 अर्थः अर्थ अर्थ नाना अर्थ अर्थ महा अर्थ विजय ।
 अर्थ विजय १ । अर्थ विजय ॥ ॥

१७६. चार शरण ।

अरिहंत सरणं पव्वज्जामि । सिद्धा सरणं पव्वज्जामि ॥ साहू सरणं पव्वज्जामि । केवली पणत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ॥

१ पहिला शरणा श्रीअरिहंत भगवंत का वे अरिहंत भगवंत महाराज अठारह दोष रहित, चारहगुण सहित, चोतीस अतिशय पैंतीस वाणी के गुणकर विराजमान, देवेन्द्र नरेन्द्र के वंदनीय पूज्यनीय, ऐसे अरिहंत भगवंत का शरणा होना ।

२ दूसरा शरणा श्रीसिद्ध भगवंतजी महाराज का, वे सिद्ध भगवंतजी महाराज-आठ कर्म रहित, आठ गुण सहित अजर, अमर, अविकार, निरंजन निराकार, उर्ध्वलोक के चरिमांत मोक्षस्थान में विराजमान ऐसे सिद्ध भगवंत का शरणा होना ।

३ तीसरा शरणा साधुजी महाराज का, वे साधुजी महाराज पंच महाव्रत पाले, पांच इंद्रिय जीते, चार कपाय टाले, पांच समिति समिता,

हीनश्रुति शुद्धा सतरे प्रकारे संयम पाते बाह्य प्रकारे तप करे, सुयममे दोष रहित आहार, वस्त्र पात्र व स्थान भोगसे, शक्ति दांत आदि अनेक शुद्ध सहित ऐसे साधुजी महापुरुष का शरण होना ।

४ चौथा शरणा श्रीशिवेश्वर भगवान् प्रसिद्ध दयाधर्म का, धर्मके दो भेद १ सुत धर्म सो शिव शंखी श्रीशिव प्रसिद्ध प्राणी (शास्त्र) और २ कारिण धर्म के दो भेद १ अनगणी धर्म सो साधुजी का और २ सागरी धर्म सो आनन्द का यह धर्म असीमित मानसिक पुष्प का मूल कर मोक्ष के अमृत अक्षय सुख का दाता है ऐसे धर्म का शरणा सदा काज होना ।

॥ दोहा ॥ ये चार शरणा पुष्पादरुच्य, और न दूषण दोष ॥ जो मध्य प्राणी आदरे तो अक्षय अविच्छेद एक होय ॥ १ ॥

१८०. तीन मनोरथ

दोहा—आरंभ परिग्रह तजकरी, पंच महाव्रत धार ॥ अन्त अवसर आलोचना । करुं संथारो सार ॥

पहिला मनोरथ श्रावकजी ऐसा चिन्तवे कि-
छः काया का आरम्भ और नवप्रकार का बाह्य
तथा चौदह प्रकार का आभ्यन्तर परिग्रह, यह
ससार में रूलाने वाला है । इसका त्याग करूंगा
वह दिन मेरा धन्य होगा ।

२ दूसरा मनोरथ श्रावकजी ऐसा चिन्तवे-कि
द्रव्य से मस्तक और भाव से मन को मुंडाकर
दश प्रकार के साधु धर्म, पंच महाव्रत पांच स-
मिति, तीन गुप्ति का धारक साधु बनूंगा वह दिन
मेरा धन्य होगा ।

३ तीसरा मनोरथ श्रावकजी ऐसा चिन्तवे
कि-आलोचना निन्दना कर निशल्य हो अठारा
पाप और चारों आहार का त्याग कर संथारा

पूर्वक समाधि मरण करणा वह दिन धन्य होगा ।

बोटा तीन मनोरथ पै कहे जो ग्यावे नित्य मन ।
शक्तिखार घरते सहु पावे शिष्य पुत्र धन ॥ १ ॥

अथ

१८१ चौवह-नियम

पाथा—सन्निध दृश्य विगई । बाह्यी तंबोल
वरय कुसुमेसु ॥ बाह्य सयस विवेचये । वम
दिसि न्दाव मसेसु ॥ १ ॥

१ सन्निध—जीव सन्निध वस्तु जैसे कच्चापाखी
कच्चीहरी फूल फल माछी फली [मीठा] तथा
चटणी भोजनपानी आदि वनाए को हो चढ़ी
नहीं हुई हो तथा नमक अर्थात् बराम बिस्वा
मेवा इत्यादि इनके वन तथा वस्तु का परिमाण
करे ।

२ द्रव्य—द्रव्य, जितने नाम तथा जितने स्वाद पलटे उतने ही अलग २ द्रव्य जानना, जैसे—रोटी, पुड़ी कड़ाई की पुड़ी चाटी, खांखरे ये सब अलग २ द्रव्य जानना, ऐसे ही सब समझना इनकी गिनती तथा वजनका परिमाण करे ।

३ विगई—विकारिक वस्तु, जैसे—घी, तेल, दूध, दही, शक्कर, गुड़ तथा तली हुई वस्तु, इन की गिनती व वजन का परिमाण करे ।

४ बाहणी—पांच में पहनने की, जैसे पगरखी, बूट, खड़ाऊ इत्यादि के नगका परिमाण करे ।

५ तम्बोल—मुखवास, जैसे पान, सुपारी, लवंग, इलायची, चूरण, खटाई, गोली आदि के नगका, वजनका परिमाण करे ।

६ वत्थ—वस्त्र, सूत के, ऊन के, रेशम के, सण के, पहरने ओढ़नेके नगका परिमाण करे ।

इसुम-सूधमेकी वस्तु जैसे सूधमे की ४ म्हाल् (तपकीर-झीकणी) अंतर पूरा इत्यादि के वजन का परिमाण करे ।

८ पाइख-सवारी, बार तरह की १ बरता हाथी, घोड़े ऊंट आदि २ फिरता गाड़ी मोटर रेक तीरी, साईकल आदि ३ छिरता-बहाल बाट मांज डोंग आदि बीर ४ कड़ता-गुम्भारा विमान आदि इनके मग का परिमाण करे ।

९ सुवर्ण-शुष्पा सोने के लिये पसंग काट भाचा कुल्ली, चारी, तक्षिया, सुतरंजी डम, चट्टाई डेबल आदि के मग का परिमाण करे ।

१० विलेपन-शरीर को लपाने की वस्तु जैसे-तेल पीठी बंदन केसर कांज डोंगरी तथा हाथ धोने की पल मूल आदि के मग का परिमाण करे ।

११ रंग-अक्षय रं दिन को मैजुन सेवन का

त्याग करे, रात की मर्यादा करे । वक्त्र का तथा दाहम का परिमाण करे ।

१२ दिसि-दिशा गमन करने का, जैसे पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, ऊपर, पहाड़ादि पर, नीचे, भोंहरादि में जाने के कोस की मर्यादा करे ।

१३ न्हाण-स्नान, गरदन ऊपर शिर, कोहनी नीचे हाथ, घुटने नीचे पांच धोवे सो छोटा स्नान, शरीर पखाले सो बड़ा स्नान इनकी गिनती का परिमाण करे ।

१४ भत्त-भोजन, खाने में जितनी वस्तु आवे उन सभी के वजनका समुचय परिमाण करे, पीने में पानी आवे उसके वजन का परिमाण करे ।

पृथ्वीकाया-मिट्टी, नमक, खड़ी, पांडु, हिरमची, काली, पीली मिट्टी, वापरने में आवे जिसकी जाति तथा वजन का परिमाण करे ।

१६ अपकाया—पानी, नदी तात्पर्य कुम्हा परेडा, धड़ा आदि के जग का परिमाण करे तथा बापरने के पानी के वजन का परिमाण करे ।

१७ टैंडकाय—अग्नि, चूल्हा सिंगडी मही दीवा बीड़ी चिलम इत्यादि के जग का परिमाण करे ।

१८ वाउकाय—हवा, पंखा बीजना, फूकबी भूगडी मुले वाजिन इत्यादि के जग का परिमाण करे ।

१९ बनस्पिकाया—हरी किलोयरी बापरने के छिबे लाना वडे अंसका, तथा फल फूल माजी सींगे घास के मारे आदि वजन का परिमाण करे ।

२० असकाया—दिलते बसते जीव जानकर बेचकर संकल्पकर निरवयवी जीव को मारने के स्वाग करे ।

२१ मस्सी—हथियार, तलवार, बंदूक बरछी
छुरी, कटार, चाकू, बक्की, ऊंखल मूसल, सरोता,
इमामदस्ता कुदाली, पावड़ा, पहार, सुई, कतरणी
इत्यादि के तग का परिमाण करे ।

२२ मस्सी—श्याही तथा व्यापारः—
कपड़ा, किराना, सराफी, मणियारी का तथा
दावात, कलम, कागज का परिमाण करे ।

२३ कस्सी—कृषि, खेत, माला, बाडी का,
तथा जमीन खोदने का घर कूआ आदि कराने
का तथा आसामी का परिमाण करे ।

यों हमेशा २३ नियम धारण करने से, राई
जितना पाप तो खुला रह जाता है और मेरु जि-
तना पाप रुक जाता है ।



१६ अपकाया—पानी नदी, तालाब, कुआ
पट्टेडा, घड़ा आदि के जग का परिमाण करे तथा
बापरने के पानी के बजन का परिमाण करे ।

१७ तेऊकाय—अग्नि बूझा खिमड़ी मही
रीषा, बीड़ी विलम इत्यादि के जग का परिमाण
करे ।

१८ बाउकया—हवा पला बीजना फुकसी
मृगवी भूसे काखिन इत्यादि के जग का परि-
माण करे ।

१९ बनस्यरिकाया—हरी खिलोवरी बापरने के
झिये लाना पडे बसका तथा फल फूल माखी
सीमे, घास के मारे आदि बजन का परिमाण
करे ।

२० असकाया—दिकते बसते जीव जानकर
देसकर संकल्पकर निरपराधी जीव को मारने
के त्याग करे ।

- तने ? १ उ०-बारहसो । प्र०-सो वर्षके पक्ष कितने ?
 उ०-चोबीस सो । २४०० प्र०-सो वर्ष के अठ-
 बाडिये कितने ? उ०-अडतालीस सो [४८००]
 प्र०-सो वर्षके दिन कितने ? उ०-छत्तीस हजार ।
 प्र०-सो वर्ष के पहर कितने ?- उ०-२८८००० ।
 प्र०-सो वर्ष के मुहूर्त कितने ? उ०-१०८०००० ।
 प्र०-सो वर्ष की घडियें कितनी उ०-२१ लाख
 ६० हजार [कच्ची दो घड़ी ४८ मिनटका मुहूर्त]
 प्र०-सो वर्ष के श्वाशोश्वास कितने ? उ०-४ अडब
 ७ करोड़ ४८ लाख ४० हजार । प्र०-एक वर्ष के
 श्वाशोश्वास कितने ? उ०-४ कोड़ ७ लाख ४८
 हजार ४०० सो । प्र०-एक महिने के श्वाशोश्वास
 कितने ? उ०-३३ लाख ६५ हजार ७०० सो ।
 प्र०-एक दिन के श्वाशोश्वास कितने ? ०-१
 लाख १३ हजार १ सो ६० । एक पहर के श्वाशो-
 श्वास कितने ? उ०-१४ हजार १ सो पोणे ४८॥
 प्र०-एक घड़ी के श्वाशोश्वास कितने ? उ०-१
 हजार ८ सो ८६ ॥ ।

१८२. धर्मफल प्ररनोत्तरी

राजप्रह में भगवान् महावीर चउदह हजार
थी गीतमादि साधु और छत्तीस हजार। श्रीबंदन
बाला आदि साध्वीके परिवार से पधारे। भेखिछ
राजा चेलपाराणी और अमवर्जुवर आदि। प्रबेक
राजपुत्र भगवान् को नमस्कार करने गए। बोहा
बारह जातिकी परचदा बिधापरकी ओर गीतम
स्वामी पूछिया प्रश्नहु ये कर ओर १ सुनोबाव
त्रिभुवनके, पूछे बारह पोस। त्रिभुवन उत्तर दी
जिये संकादीजे कोस ॥ २ ॥

प्रश्न—सो वर्ष के संवत्सर कितने उत्तर—सो।
प्र०—सो वर्ष के युग कितने। उत्तर—बीस (२
वर्षका एक युग) प्र०—सो वर्ष की आयन कितनी।
उ०—दोषो। [एक वर्ष के दो आयन होते हैं,
वसिष्ठायन और कलदायन] प्र०—सो वर्ष की
आहु कितनी। उत्तर—सहस्रो। [एक वर्ष में आहु ४
होती है १ वसंत, २ ग्रीष्म, ३ वर्षा ४ शरद १
हेमंत और १ शिशिर] प्र०—सो वर्ष के मास कि

कर्म का क्षय हो। तेले [अष्टम भक्त] के तप का क्या फल ? उ०—लाख क्रोड़ वर्ष के अशुभ कर्म का क्षय हो। चोला [दशम भक्त] के तप का क्या फल ? उ०—दशलाख क्रोड़ वर्ष के अशुभ कर्म का क्षय हो। पचोला [बारह भक्त] के तप का क्या फल ? उ०—क्रोड़ा-क्रोड़ वर्ष के अशुभ कर्म क्षय हो। ऐसे सर्व तप का फल दशगुना जानना।

एक प्रतिपूर्ण आठ प्रहर का पौषध करे उसका क्या फल ? उ०—सत्ताइस सो तितंतर क्रोड़ सितंचर लाख ११ हजार ७ सो ७७ पल्योपम और एक पल्योपम के नवभाग उस में से सात भाग जितना शुभदेवायु बंध करे। एक पहर की सामायिक करे उसका क्या फल ? उ०—तीन सो ४७ क्रोड़ २२ लाख २२ हजार दोसे २२ पल, एक पल्य के ६ भाग जितना देवायु बांधे। एक मुहूर्त ४८ मिनट की सामायिक का क्या फल ? उ०—६२ क्रोड़ ५६ लाख २५ हजार ६ सो २५ पल्योपम, एक पल का चौथा भाग देवायु का बंध करे एक घड़ी

कोई सम्यक् दृष्टि मीकारसी तप करे उसका
 क्या फल ? ३०-सो १०० वर्ष की आयुम नर्कांतु
 व्यक्त देखतायुका वष करे । प्र०-एक प्रहर के
 तपका क्या फल ? ४०-दस हजार वर्ष के आयुम
 कर्म का वष होवे । वैकुण्ठसी तपका क्या फल ?
 ५०-दस हजार वर्ष के आयुम कर्म का वष होवे ।
 दो पाहणी तपका क्या फल ? ६०-एक लाख
 वर्ष के आयुम कर्म का वष हो । एकास्र तप का
 क्या फल ? ७०-दस लाख वर्ष के आयुम कर्म का
 हो । एक क्षमा [एक ब्रह्म आहार पानी काना पीना]
 तपका क्या फल ? ८०-एक कोट वर्ष के आयुम
 कर्म का वष हो । एक दात [एक ब्रह्म ही पात्रमें
 आहार लेवे] तप का क्या फल ? ९०-दस कोट
 वर्ष के आयुम कर्म का वष हो । आर्षविल तप का
 क्या फल ? १०-सोकोट वर्ष के आयुम कर्म का वष
 हो । उपवास का क्या फल ? ११-दस कोट वर्ष
 के आयुम कर्म का वष हो । बेका [कर्मका] तपका
 क्या फल ? १२-दस हजार कोट वर्ष के आयुम

का साठी बारहसो उपवास का फल होय, यों हर एक तपकी पहरसी करने से दूणा फल होय ।

बारवां चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त का सातसो वर्ष का आयुष्य था, सातसो वर्ष के श्वाशोश्वास कितने ! ३०-२८ सो ५२ कोड ३८ लाख ८० हजार । ब्रह्मदत्त मरके सातवीं नरक में तेतीस सागर की स्थिति में गया, एक श्वाशोश्वास पे कितने पल्य का दुख पाया, ३०-११ लाख ५६ हजार ६ सो पचीस, एक पल के तीसरे भाग अधिक नर्क दुख पाया ।

धन्नामुनि नव महिने संजम पाला, नव महिने के श्वाशोश्वास कितने, ३०-३ कोड ५ लाख ६१ हजार ७०० सो ॥ धन्ना अणगार सर्वार्थ सिद्ध में ३३ सागर का आयुष्य पाया तो एक श्वास पे कितना सुख पाये । ३०-१ सो ७ कोड ६२ लाख ६६ हजार ६ से ६८ पल एक पल के छठे भाग कुछ कम स्वर्ग सुख पाए ।



का संपर्क करे उसका क्या फल ? उ०-४१ कोड़
 २६ लाख ६२ हजार ३ सौ ६२५ पद्म देवायु का
 बंध होवे । सुद्ध मनसे नयकार मंत्र की एक माला
 धिमेने का क्या फल ? उ०-१६ लाख ६६ हजार ३
 सौ ६७ पलका शुभदेवायुका बंध करे । अशुद्धी
 एक बरत शुद्ध मन से पढ़े उसका क्या फल ? उ०-
 अघम्य ६६ हजार उच्छिष्ट २०० सागर के पाप दूर
 होवे ।

बेला तेला बीला बीर पचोला करे कर्ने
 कितने उपवास का फल होवे । उ०-बेले का २,
 तेले का २४, बीले का १२४, पचोले का ३२४,
 ऐसे एकेक उपवास बढ़ाने से उसका फल पांच
 गुना होय बीसे ६ उपवास का फल ३१२४
 समझना ।

उपवास बेला तेला बीला बीर पचोला इन
 की पदरसी करे तो कितना फल हो ? उ०-उपवास
 का दो उपवास बेले का दश उपवास, तेले का
 २० उपवास बीसे का २४० उपवास बीर पचोले

का साड़ी बारहसो उपवास का फल होय, यों हर एक तपकी पहरसी करने से दूणा फल होय ।

बारवां चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त का सातसो वर्ष का आयुष्य था, सातसो वर्ष के श्वाशोश्वास कितने ! ३०-२८ सो ५२ कोड ३८ लाख ८० हजार । ब्रह्मदत्त मरके सातवीं नरक में तेतीस सागर की स्थिति में गया, एक श्वाशोश्वास पे कितने पल्य का दुख पाया, ३०-११ लाख ५६ हजार ६ सो पचीस, एक पल के तीसरे भाग अधिक नर्क दुख पाया ।

धन्नामुनि नव महिने संजम पाला, नव महिने के श्वाशोश्वास कितने, ३०-३ कोड ५ लाख ६१ हजार ७०० सो ॥ धन्ना अणुगार सर्वार्थ सिद्ध में ३३ सागर का आयुष्य पाया तो एक श्वास पे कितना सुख पाये । ३०-१ सो ७ कोड ६२ लाख ६६ हजार ६ से ६८ पल एक पल के छठे भाग कुछ कम स्वर्ग सुख पाए ।



श्री पंच परमेष्ठी क १०८ गुण

श्री अरिहंत मनु के १२ गुण ॥ कवित्त ॥

देशना अशोक तल पल बर्य 'पुष्पवृष्टी' नाम
विजाय 'बाही' ओजस विहारी है । 'सिद्धासुत्र'
रत्नमय पूरे मार्गदर्श सोई सुत्र तीन कृपण
'मेरी' शब्द मारी है ॥ 'लो लो' कोप व्यथा नहीं
लोकात्माक जाने सब समझे सुभाषा सेई
सुर नर मारी है । कहत वों 'सर्वभूति' बारे
गुणमारी शुद्धी, ऐसे अरिहंत ताको बंदना हमारी
है ॥ १ ॥

श्री सिद्ध मनु क ८ गुण ॥ कवित्त ॥

जान वरोमाधरणी गण जान वरो हूओ
विराजय सुख पाया वैदगी विहारी है । सायिक
हो मोह तज अक्षय हो 'आयुतज', 'नामकर्म'
रूप से अमूर्तिशुद्धमारी है ॥ मोक्षकर्म रूप हुआ
गुण हो अगुण कष्ट 'अमृतपथ' रूप से अमृत रस

धारी है । कहत यों “सूर्य मुनि” आठ गुणधारी
गुणी, ऐसे सिद्ध प्रभु ताको वंदना हमारी है ॥२॥
श्री आचार्यजी के ३६ गुण ॥ कवित्त ॥

‘पञ्च इन्द्रजीते धरे ‘नवविध ब्रह्मचर्य ‘क्रोध
मान माया लोभ चारों परिहारी हैं । दर्शन चारित्र
ज्ञान तप वीर्य ‘पञ्चाचार ‘पञ्चमहाव्रत पाले ‘तीन
गुप्ति धारी है ॥ ‘इरिया भाषा एषणा आदानादि
तिक्खेवणा, उच्चार पासादि पंच समिति सुप्यारी
है । कहयों ‘सूर्यमुनि’ धारक छत्तीस गुणी, ऐसे
आचारज ताका वन्दना हमारी है ॥ ३ ॥

श्री उपाध्यायजी के २५ गुण ॥ कवित्त ॥

‘ग्याह सु अङ्गजान उपाग ‘‘धारे घस्तान,
‘चरण ‘करण सित्तरी के गुणधारी है । चारमूल
चारछेद आवश्यक सूत्र और, पठित चवदे पूर्व
आगम आगारी है ॥ उपदेश सुधावाणी ढिगता
को थिर करें, ज्ञान दृगदाता भवि जीव हितकारी
है । कहत यों “सूर्य मुनि” धारक पच्चीस गुणी,
ऐसे उपाध्याय ताको वन्दना हमारी है ॥ ४ ॥

श्री साधुजी के २७ गुण ॥ कवित्त ॥

पासे पञ्च 'महामत्त' कषाय विषारे बार
 पंच 'इन्द्रि' पीते तिहुँ योग समचारी है । कर्ष
 जोग भाव सबे समा सु-वैराग्यवंत वर्णन
 चारित्र नाम संपन्न मंडारी है ॥ वैदमी अद्विपासे
 सुमरनास्त कष्ट सबै दया के आगार दोष मिटा
 के निवारी है । कहत पों 'सूर्य मुनि' सत्ताबीस
 घारी गुणी ऐसे मुनिराज ताको बन्दना हमारी
 है ॥ २४ ॥

श्री गुरुदेव के गुण ॥ कवित्त ॥

धर्म उपदेश दाता मोक्ष रूप मार्ग दाता सम
 कित रत्नदाता शास्त्र के दातारी है । ज्ञान उप
 नैत्र दाता माया के मुकुट सम दिवा के हैं
 द्वार अप तप के व्यापारी हैं ॥ काम के मुकुट
 सम रत्न के मंशुप सम धन्य जहाँ विचरे कि
 सेवें बरवारी हैं । कहत है 'सूर्य मुनि' गुरु पों
 समेक घारी ऐसे गुरुराज ताको बन्दना हमारी है
 ॥ २५ ॥

नित्यनन्द-स्मरणा का शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२२	१२	घं	धि
२२	१३	युक्तां	भक्त्या
१३	७	शान्ति	शान्ति
२३	१०	चन्द्रं	चन्द्र
२४	१०	मोक्षं	मोक्ष
२७	१३	मृतादि	भूतादि
४१	७	धर्म	धर्मः
५०	१५	हरिष्यति	हरिष्यति
६१	७	ससार	संसार
६३	१२	सुधा	शुद्ध
६३	१५	चम्पक ली	चम्पकली

श्री साधुजी के २७ गुण ॥ कवित्त ॥

पासे पञ्च 'महाप्रत' कपाय निबारे चार
 पंच 'हमि' पीते तिहुं योग समधारी है। कर
 जोग भाव सचे कमा सु-वैराग्यवंत 'वर्य'म
 चारित्र्य काम संपन्न मंडारी है ॥ वैदमी अद्वियासे
 सुमरखाम्त कर खहीं क्या के आगार दोष मिह्रा
 के निबारी है। कहत यों 'सूर्य मुनि' सत्ताबीस
 धारी गुणी ऐसे मुनिराज ताको पदना हमारी
 है ॥ २ ॥

श्री गुरुदेव के गुण ॥ कवित्त ॥

धर्म उपदेश दाता मोक्ष रूप मार्ग दाता सम
 कित रत्नदाता शास्त्र के वातारी है। काम रूप
 भेज दाता भाषा के मुकुट सम, दिया के हैं
 द्वार जप तप के आगारी है ॥ काम के कुंडल
 मम रत्न के मंजुष सम धन्य जहां बिचरे कि
 सेवें मरनारी है। कहत है 'सूर्य मुनि' गुण यों
 धमेक धारी ऐसे गुरुराज ताको पदना हमारी है
 ॥ १ ॥

(५)

पृष्ठ	पंक्ति	अष्टादि	सुखि
६४	५	सुख	सुख
६६	४	स्पृणा हारे	स्पृणाहारे
६६	५	तरकारी	तरकारी
७१	४	विड	विड
७१	१०	तचामिष	तचामिष
७१	११	ओठिंग	ओठिंग
७२	४	दुर्जन	दुर्जन
७४	७	बोधि	बोधि
७६	२	मिषारक	मिषारक
८६	१	नमी	नमि
८७	२	किस्मय	किस्मय
८७	११	रचापो	रचापो
८८	११	अग	अग
८९	११	आपता	आपता
९२	१७	निरमल	निरमली
९२	१	अलबेस्तार	अलबेस्तार
१०१	१४	मकदेवी स्तवन	मकदेवी स्तवन

(ग)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१०६	१३	साधुजी	साधुजी
११३	१४	हात	हान
११४	५	घर	सुलसां घर
११४	७	नेमिनी	नेमिना
११४	६	एक संथारे	एक मास संथारे
११४	१७	मेठी	मेटी
११६	१७	तजी	गया तजी
११६	११	सर्वार्थ सिद्ध पहुंच्या	पहुंच्या सर्वार्थसिद्ध
११६	११	वीरप	वीरपे
११७	१०	टालेश	टाले
११६	३	अठाई	अढाई
११६	७	सतियों ले	सतियों से
१२०	६	वड़ा	०
१२३	१३	कामथी	कामजी
१२४	६	भरण्रां	भरण्ण
१२६	१४	इषवीस	इकवीस

(घ)

पृष्ठ	पङ्क्ति	अष्टादश	शुद्धि
१५७	७	गिष्ठाप	गिष्ठाप
१३४	१८	मरु	मर २
१३५	६	असवापी	इषी असवापी
१३६	१३	आणो	आणे
१३७	५	घटसु	घटसु
१४३	१२	अमाता	अमाता
१४५	९	पेसमता	तुमे समता
१४५	१६	हमोरा	हमारो
१४६	१४	आतम	निज पर आतम
१५२	४	मतमान	मतका मान
१५२	३	ठाठ	ठाठ शुद्ध
१५२	७	कर	करे
१५२	६	वया	धर्म वया
१५३	११	देखलो पेसी	देखलो हि अमादि
			विभ्य रचना म्याप
१५५	४	करती	पूर्वक देखलो पेसी
			करती

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१५६	७	पाछा	फिर कर पाछा
१६०	१	पार	गुरुजी पार
१६०	११	आत्मा	आत्म
१६४	६	लुललुल	लुललुल चरणे
१६४	१२	तेरी	तरी
१६५	४	पाप तोड़िये	पाप तो डरी
		अरी,	
१७१	११	पान	पान से
१७५	१०	पाप	०
१८६	१३	मिटोओ	निवारो
१६१	११	सूरि	सुरि
१६७	४	अराधे	अराधे
१६८	४	संदम	संजम
१६६	६	उदर में	उदर में आया
२००	११	कावा	काया
२०२	४	जयजय	जप जय
२०२	४	घरने	चरते

(घ)

पृष्ठ	पंक्ति	अष्टादि	दृष्टि
१२७	७	मिषाण	मिषोप
१३४	१८	मद	मर २
१३५	६	असवारी	इसरी असवारी
१३६	१३	आषो	आषे
१३७	५	घटसु	घटसु
१४३	१२	अजासा	अजास
१४५	२	पेसमता	हुमे समता
१४७	१३	हमोरो	हमारो
१४८	१४	आतम	निज पर आतम
१५२	४	मवखान	मवका आम
१५२	६	ठाट	ठाट डूके
१५२	७	कर	करे
१५२	६	वषा	धर्म वषा
१५६	१३	देखलो देखी	देखलो हि अनादि
			विश्व रचना न्याय
१५७	४	करती	पूर्वक देखलो देखी
			करती

(छ)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२५३	२	हेमाचल	हिमाचल
२५३	३	श्रुत्कुंड	मुखकुण्ड
२५३	५	वासुविशारद,	ता शुचिशारद
२५३	६	प्रथमै	प्रणमी
२५३	८	कर्मकी	वेदर्जुं
२५३	८	अङ्गमेल	अघमेल
२७०	४	दसहजार	हजार
२७५	८	तिक्खेवणा,	निक्खेवणा



(५)

पृष्ठ	पंक्ति	अध्याय	श्लोक
२०२	३	द्वय	•
२०२	११	स्वामी	•
२०२	१५	पीर	•
२०३	११	पाये	सकल पीर
२०८	१७	कर्म	पाये
२०९	४	करमा	कर्म
२१०	६	अग्ने	अग्ने
२११	१०	कर्म	अग्ने
२१२	४	मायिदे	अग्ने
२१३	६	बौमरे	मायिदे
२१३	१५	विमे	बौमरे
२१४	५	इष्टये विद्या,	विमे
२१८	१४	पाये	इष्टये विद्या
२२२	८	मित	पाये
२३३	१४	अथगुणो	मित
२३४	५	शुभिसो	अथगुण
२४३	१५	मोह	•
			विषमय मोह

(छ)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२५३	२	हेमाचल	हिमाचल
२५३	३	श्रुत्कुंड	मुखकुण्ड
२५३	५	वासुविशारद,	ता शुचिशारद
२५३	६	प्रथमें	प्रणमी
२५३	८	कर्मकी	वेदजुं
२५३	८	अङ्गमेल	अधमेल
२७०	४	दसहजार	हजार
२७५	८	तिक्खेवणा,	निक्खेवणा



